अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत । पापी हूं मुझे अरज से आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोह के वश में । पाबंद किया लोभने वेदाना कफस में ॥ हर एक घडी गुजरी है दुनिया कि हवस में । इक दिन भी नहीं काम का हर माह बरस में ॥ इक वक्त का तोशा नहीं औ शिर पै सफर है । पापों का बहुत बोझ है शिकस्ता कमर है ॥ हूं आपके चरणों से लगा जानलो इतना । कुछ और नहीं चाहता पर मानलो इतना ॥ जिस दम मेरी उम्मैद से घर वालोंको होयास । सब दूर हों सरकारही सरकार हों इक पास ॥ फैलीहुई शृंगारके फूलों की हो बूबास । मुरलीकी सदा कान में आतीहो चपो रास ॥ होजाऊं फना पाऊं जो इतना मैं सहारा । जब बंद हों आंखें तो मुकुट का हो नजारा ॥ दम लब पै हो सीने में तसव्वुर हो तुम्हारा । मिट कर भी जुदाई नहो चरणोंकी गवारा ॥ जो ब्रजकी रज है वही खाके कफे पा है । मिट्टी यहीं रहजाय तो वैकुंठ में क्या है ॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकीं है । जो जर्रा है यां खातमें कुदरत का नगीं है ॥ उठाहै यहीं आके निकाबे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आताहै यां जलवएजावीद ॥ जो खाक में यां मिल गये किसमत है उन्हीं की । जो मिट गये यां आके हकीकत है उन्हींकी ॥ गलियों मे जो यां घिसटे हैं जिन्नत है उन्हींकी । जोभी खको यां खाते हैं दौलत है उन्हीं की ॥ वह ताज शाही पर भी कभी हाथ न मारें । दुनिया का मिले तख्त तो इक लात न मारें ॥ कहसक्ताहूं क्या ब्रज की खूबी व लताफत । वह आंख नहीं जिसमें हो नज्जारे की ताकत ॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ । मैं यह भी नहीं चाहता बिगडी को बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ । इतना भी नहीं हूं जिसे चरणों से लगाओ ॥ नकशे कफे पाफूंक निकलने को तो मिलजाय ॥ दो हाथ जमीं ब्रज में जलने को तो मिल जाय ॥ देखो न खुदाईकी करामात बिगड जाय । ऐसा नहो शोले की कहीं बात बिगड जाय ॥ १२४ ॥

## राग परज ।

मैनूं तारी वे रब्बा बंदी औगुण हारी ॥ सभ सैयां गुन वालडियां वे मैं औगुण हारी ॥ जिस कारण शौह भेज्या लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा सोईयो गल्ल बिसारी ॥ पकड तुला मैं तर पैयां लाल वे मैनूं तारी वे रब्बा सिर पर गठरी है भारी ॥ इकनां दाज रंगा लिया लाल वे मैनूं तारीं वेरब्बा आईया साडड़ी वारी ॥ हुकुम साई दे पर्वत तरदे लाल वेरे मैनूं तारीं वेरब्बा बंदी कौन विचारी ॥ इकनां सेजां मानीयां लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा बंदी रही है कुआरी ॥ कहे शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैनूं तारीं वे रब्बा अमलां बाझ खुआरी ॥ १२५ ॥

## राग बडहंस ।

अपने संग रलाई वे मैनूं अपने संग रलाई ॥ राह पवां तां धाडी पैंढ बेले लखाँ बलाई ॥ चीते बाघे कौडल हारे भखँर करन अदाई॥ भार तेरे जागत्तर चल्या बेडा पार लंघाई ॥ होल दिले दा थर हर कंबे झबदे पार लंघाई ॥ पहलां नेह लगायासी एवें आपे चाई चाई ॥ मैं लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाई ॥ जेकर आग है लड लाया तीवें गले लगाई ॥ बुल्ला शाह शहाना मुखडा घूंघट खोल दिखाई ॥ १२६ ॥

## राग सोरठ ।

मालक कुल आलम केहो तुम साँचे श्री भगवान । स्थावर जंगम पानी पावक धरती बीच समान ॥ सभमें जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरबान । सुदामाके दरिद्र खोये पाँडे की पहँचान ॥ दो मूठी तंदुलकी चाबी बखशे दो जहान । भारत में अर्जुनकी खातर आप भये रथवान ॥ उसने अपनी कुलको देखा छुट गये तीर कमान । ना कोइ मारे ना कोइ मरता तेरोही अज्ञान ॥ यह तो चेतन अचल अमर है यह गीता को ज्ञान । मुझ आजज परकिरपा कीजे बंदा अपना जान ॥ मीर माधो मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १२७ ॥

## राग कालिंगड़ा ।

माधव गति तेरी नाजानी ॥ मारन कारन चली पूतना स्तन विष लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गउअनको दान करत है राजा नृग सों दानी । ताको मुख किरले का दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलिराजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ बहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ बडे बडे राज भूपनकी बेटी तिनको योग हढानी । कुब्जा मालन कंसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचो पांडव अधिक सनेही सो हिमअचल गिरानी । दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥ शेषनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी । चौदा रत्न मथन कर काढे तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी । सूरदास आनंद मगन भयो प्रेम भक्ति मन मानी ॥ १३८ ॥

## राग कान्हरा ।

पूतना विष दे अमृत पायो । जो कछु देयत सो फल पैयत नाहक वेदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बांध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ रंक जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेत कह गायो ॥ १३९ ॥

## राग धनाश्रीं ।

अविगति गति जानी न परै । मन वच अधम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष सों मातो केहरि भूख मरै । तज उद्यम अकाश कर बैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुँक तृण बूडत पानी में कबहुँक शिला तरै । सागर से सागर कर राखे चहुँ दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाहीं जल में आगिन जरै । राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरजाय छिनक में जो प्रभु टेक करै ॥ १४० ॥

## राग सोरठ ।

हरिकी गति नहिं कोऊ जानै । योगी यती तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं रावरंक करडारे । रीते भरै भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपै देखनहारा । नाना रूपधरै बहुरंगी सब से रहत नियारा ॥ अमित अपार अलक्ष निरंजन जिन सब जग भरमाया । सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ १४१ ॥

## राग कान्हरा ।

ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं । हमरे संकट काटो जी सांवरे कृपा करौ प्रह्लादकी नाईं ॥ तोहिं त्याग और जो सुमिरे सो नर पैंदे नरकन माहीं । नंददासको दीजै अभयपद चरण कमल राख्यो मन माहीं ॥ १४२ ॥

## राग सोरठ ।

दरमांदेठाढ़े दरबार । तुझ विन सुरत करै को मेरी दरशन दीजै खोल किंवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार । माँगों कौन रंक सब देखों तुमही ते मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिन पर कृपा भई है अपार । कह कबीर तुम समरथदाते चार पदारथ देत न बार ॥ १४३ ॥

## राग झंझोटी ।

हरी अब बनिहै नाहिं बिसारे । दीन दयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे । मोहन लाल आपनो पन सोइ बनिहै नाथ सम्हारे १४४॥

## राग अडाना ।

अपने विरदकी लाज विचारो । सभ घटके तुम अंतर्यामी भवसागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछू न मानो ज्यों जानो त्यों पतित उधारो । जानकी दास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमन का दोष निवारो ॥ १४५ ॥

## राग परज ।

भरोसो कृष्णको भारी ॥ ग्राह ने गजराज घेर्‍यो बल कियो भारी । हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रह्लाद गिरि सों डार दीनो कीनी रखवारी । अगिनहूंसों राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कूबरी तारी । ध्रुवको दीनी अटल पदवी कियो घर वारी ॥ विभीषणको लंक दीनी रावणा मारी । आगे पतित अनेक तारे सूरकी बारी ॥ १४६ ॥

## राग बिभास ।

और कोइ समझो तो समझो हमको एती समझ भली है । ठाकुर नंद किशोर हमारे ठकुरायन वृषभानु लली है ॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधा संग ललिता जो अली है । नित को लाड चाव सेवा सुख भाग बेलि बढ सुफल फली है ॥ वृंदावन वीथिन यमुना तट विहरनब्रज रज रंग रली है । कहे भगवान हित रामराय प्रभु सभते इनकी कृपा बली है ॥ १४७ ॥

## राग विहाग ।

हमरी आँखिनके दोउ तारे । राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर ब्रज बरसाने वारे । शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४८ ॥

## कुण्डलिया ।

आचारज ललता सखी, रसिक हमारी छाप ॥ नित्त किशोर उपासना,युगल मंत्र को जाप॥युगलमंत्रको जाप वेद रसिकनकी बानी। वृन्दावन निज धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले बिना सिधि होय न कारज।भगवत सब सुखदेन प्रगट भये रसिकाचारज ॥

## राग धनाश्री ।

हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुंजमहलके वासी । नइ नइ केलि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ बोरी बसन

सुगंध आरसी रुचि ले करत खवासी । देत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस कह कह भगवत दासी ॥ १५० ॥

## राग कालिंगडा ।

हम नँदनंदन मोल लिये । यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिरात हिये । सूरदास प्रभुजूके चेरे जूँठन खाय जिये ॥ १५१ ॥

## राग जंगला ।

साँवरो जग तारन आयो । निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरा में हरि जनम लियो है गोकुल जाय बसा यो, लाल यशुमति को कहायो ॥ भानुसुता में कूदि परे हैं विषधर जाय जगायो । फणपति लै पाताल पठायो तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारत में प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें बहायो । गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो, भर्म मनको जो मिटायो॥वृंदावन में रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो हरष निरखकर गायो, बहुरि इतना सुख पायो ॥

## दोहा ।

चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय । रामकृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय ॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारें । सो अधरन पर मुरली धारैं ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत कहि नंद बुलावहिं ॥ शिव सनकादिक अंत न पावें । सो सखियन सँग रास रचावैं ॥ सकल लोक में आप पुजावैं । सो मोहन ब्रजराज कहावैं ॥ निरंकार निर्भय निरवाना । कारण संत धरे तिन जामा ॥ निर्गुण सगुण भेद नाकोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा ॥ योगी पावै योग सों, ज्ञानी लहै विचार ॥ नानक पावै भक्ति सों, जाको प्रेम अधार ॥ १५२ ॥

## राग धनाश्री ।

हरि संतनकी पैज राखत आप निरंकार भाषत ॥ खंभ से प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय रिसाय असुरनको उदर छेद

प्रह्लाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो कालवश ले व्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फंदन काटत । बीच सभा आन खडी द्रौपदी को भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौडके हरि आन खडे अपने जन काज करे विलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १९४ ॥

## राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति यदुराई । को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल विहाई ॥ कनक भवन में रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर लाई ॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई । तहिं तहिं ब्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई । सो तजि विदुर साग भोजन किय बहुत सराह मिठाई ॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु विसराई । श्रीरघुराज भली भारत में पारथ सारथि आई ॥ १९५ ॥

## राग पूरवी ।

जय मनमोहन श्याम मुरारी । जय ब्रजनाथ मुकुंद विहारी ॥ जय नखपर श्री गिरिवर धारी । जय श्रीकृष्णचंद्र बनवारी ॥ मोसे नाथ कछु लखी न जाई । वरणों कहँ लग तोरिबड़ाई ॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई । थकित भये वर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया । ब्रह्मादिक ने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिन ने ध्यान लगाया । पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहां तलक गुण तुमरे गाऊं । कौन हृदय में ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं । शोच भयो जन उर यह भारी ॥ सुध लीजे अबतो प्रभु मेरी । निज जन समझ करो मत देरी ॥ दीनदयालु शरण हूं तेरी । कृपा करो भक्तन सुखकारी ॥ १९६ ॥

## राग जंगला ।

जय नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमलाकंतं । नाम अनंत

कहां लग वरणों शेष न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं । मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंतं । जन्म लियो वसुदेव देवि गृह नाम धर‍्यो नँदनंदं ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण फण निरत करंतं । बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिंतामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलियुग अंत अनंतत होकर कलकी रूप धरंतं ॥ दश अवतार हरिजूके गाये सूर शरण भगवंतं ॥ १८७ ॥

## लावनी ।

नाथ तुम दीनन हितकारी । पतित पावन कलिमल हारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धार‍्यो । नखन सों हरनाकुश मार‍्यो ॥ ब्रह्मादिक थरहर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात । जन अपने प्रह्लाद के, धर‍्यो शीश पर हाथ ॥ भक्तकी विपति कटी सारी ॥ नाथ० ॥ जुडे दल दोउ ओर भारी । करी जब भारत की त्यारी ॥ भरुही दीनहो पुकारी । खबर मेरी लीजो गिरिधारी ॥ ऐसोको या जगतमें, मेरो राखनहार । इतनी सुनत तब तुरतही, गज घंटा दियो डार ॥ करी अंडनकी रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी । करन जो लगे जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्म धारी । कर्ण भीषण द्रोणाचारी ॥ कहा भयो वैरी प्रबल, जो सहाय बलवीर । दश हजार गज बल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर ॥ दुःशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राह ने गजको गहलीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनो । याद तब गोविंद को कीनो ॥ सुनतहिं टेर गजेंद्र की, उठधाये ब्रजराज । सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज ॥ जनार्दन संतन दुख हारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १८८ ॥

## राग देश ।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश । हे पूरण हे सर्व

में दुख भंजन गुण तास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक । हे गोविंद हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपर हर हरे है भी होवन हार । हे संतनके सदा सँग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय । नानक दीजै नाम दान राखौं हिये परोय ॥ १५९ ॥

## छंद ।

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं ॥ मुकुट कुंडल कर लकुटिया सांवरे राधे बरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड वाहन चरण नित सुखसागरं ॥ करत केलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं । अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुंदर केशवं । वंसीधर वसुदेव छैया वलि छल्यो हरि वामनं । जल डूबते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने इक पलं । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौं उपमाकरं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशि दिन नाम जप नित नागरं ॥ १६० ॥

प्रथम गुरुके चरण वंदों जासों ज्ञान प्रकाशतं । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुबर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविंद माधव वासुदेव श्रीवामनं । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरा में केशोराय विराजे गोकुल बाल मुकुंदजी । श्रीवृंदावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविंदजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे । धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावने ॥ ग्वाल बाल संग सखा विराजे संग राधा भामिनी । वंसीबट तट निकट यमुना मुरली की टेर सुहामिनी ॥ कृष्ण कलिमल हरन सबके जो भजे हरि चरन को । भक्ति अपनी देहु माधो भवसागरके रतन को ॥

जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वंभरं । द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकरं । कृष्ण अष्टपदी की धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं । गुरू रामानंद नीमानंद स्वामी छबि दत्तदास समापतं ॥

## राग भैरव ।

मंगल आरती गोपाल की । नित उठ मंगल होत निरखे मुख चितवन नयन विशाल की ॥ मंगल रूप श्यामसुंदरको मंगल छबि भ्रुकुटी भालकी । चतुरभुज दास सदा मंगल निधि वानिक गिरिधर लालकी ॥ १६२ ॥

## राग रामकली ।

आरति कीजै श्याम सुंदर की । नंदकुमार राधिका बर की ॥ भक्ति कर दीप प्रेम कर बाती । साधु संगति कर अनुदिनराती ॥ आरति ब्रज युवती मनभावे॥श्याम लीला हित हरिवंश गावे॥१६३॥

आरती कीजै सुंदर वर की । नंदकिशोर यशोदा नंदन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ नव विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन कर की । विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुज धरकी ॥ १६४ ॥

## राग कालिंगडा ।

आरती लीजो श्री नंदके लाला मदन गुपाला । टेरत हैं कबके जन ठाढे होउ वेग दयाला ॥ कोटि शशि तेरे नखकी शोभा कहां लौं दीपक बाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद बाजे क्या रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना विधि बहु बाला । खंड ब्रह्मंड त्रैलोक नाचे हों क्या कीट कंगाला ॥ आछी तेरी आरती आछी तेरी शोभा आछीतेरी भक्ति रसाला । भगवान दास पर किरपा कीजे मेटियजी यमजाला ॥ १६५ ॥

## राग श्याम कल्याण ।

आरति युगल किशोर कि कीजै । तन मन प्राण निछावर कीजै॥ गोर श्याममुख निरखन कीजै । हरिको स्वरूप नयन भर पीजै ॥ रवि

शशि कोटि वदन जाकी शोभा । ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलन कि सेज फूलन गल माला । रत्न सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै । नटवर वेष निरख मन मोहै ॥ ओढे नील पीत पट सारी । कुंजन ललना लाल विहारी ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवर धारी । आरति करत सकल ब्रजनारी ॥ नँदनंदन वृषभानु किशोरी । परमानँद स्वामी अविचल जोरी ॥ १६६ ॥

## राग बरवा ।

कंचन सिंहासन रत्न जडित प्रकाश रवि सम सोहई । तापर विराजत श्यामसुंदर रूप मुनि जन मोहई ॥ मुख कमल पर अलिमाल सम अलकां कुँडल छबि पावई । हरि नाशिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जडित कानन स्वर्ण कुंडल छाजई । पट पीत गज मणि माल भूषण अंग धाम विराजई ॥ शुभ कंठ कंठी मणिमयी उर माल वैजंती लसै । भृगु रेख कौस्तुभ मणि जनेऊ देव मुनि जन मन बसै ॥ कंकण जडाऊ सहित पहुँची श्री कृष्ण हाथन में बने । प्रति अंगुरी मुँदरी विराजत रत्न नग लागे घने ॥ हरि बाम अँग सुवरण वरण अनूप अति राजत रमा । जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद उमा ॥ भुज चार कर में शंख चक्र गदा पद्म अति राजई । कटि पीत धोती किंकिणी दोउ चरण नूपुर बाजई ॥ श्री सहित विष्णु स्वरूप ऐसो प्रेम से जो ध्यावई । तत्काल पावन होतहै चारों पदारथ पावई ॥ १६७ ॥

## राग गुर्जरी ।

श्रितकमलाकुच मंडल धृतकुंडल ए ॥ कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे ॥ दिनमणि मंडल मंडन भवखंडन ए ॥ मुनिजन मानसहंस जय जय० ॥ कालिय विषधरगंजनजनरंजन ए ॥ यदुकुलनलिन दिनेश जय जय० ॥ मधु मुर नरक विनाशन गरुडासन ए ॥ सुर कुल केलि निधान जय जय० ॥ अमल कमल

दल लोचन भवमोचन ए ॥ त्रिभुवन भवन निधान जय जय० ॥ जनकसुताकृत भूषण जित दूषण ए ॥ समर शायित दशकंठ जय जय० ॥ अभिनव जलधर सुंदर धृतमंदर ए ॥ श्री मुख चंद्र चकोर जय जय० ॥ तव चरणे प्रणतावय मितिसंभावण ए ॥ कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय० ॥ श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्ज्वल गीत जय जय० ॥ १६८ ॥

## राग धनाश्री।

परम पुनीत प्रीति नँदनंदन यही विचार विचार। कहो शुक श्री भागवत विचार ॥ हरिजीकी भक्तिकरो निशिवासर अल्प जीवन दिन चार। चिंता तजो परीक्षित राजा सुन शिख शीख हमार ॥ कमलनयनकी लीला गावो मिट गये कोटि विकार। भजन करो विश्वास तजो नृप चिंता शोकनिवार ॥ खट्वांग दिलीप मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतवार। तुम तो राजा परमभक्त हो मानो वचन हमार ॥ हरि जीकी भक्ति युगोयुग वरणों आन धर्म दिनचार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार॥ के राजा मोहिं भोजन दीजै के जावो व्रत हार। राजाकहै मोहिंका संकटदीजो नाहिंन और उपाय। द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय ॥ तब पांडवसुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार। चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रत हार ॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करते यही विचार। एको ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार ॥ सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार। सूर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार॥ १६९ ॥

## राग सोरठ।

टेर सुनो ब्रजराज दुलारे। दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय परचो हूं द्वार तिहारे॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीको प्यारे। भ्रमत रह्यो इन सँग विषयन में तोपद कमलन में उर न। ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लिये

उधारे । महां लौं खेप भरी रच पचके चकित रहे लखिके बनजारे॥ अबतो एक बार कहो हँसके आजहि सों तुम भये हमारे । याही कृपा ते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे ॥ १७० ॥

## राग मलार ।

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत न टारे ॥ भक्तन काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहँ जहँ भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये ॥ जो भक्तन सों वैर करत है सो निज वैरी मेरो ॥ देख विचार भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो ॥ जीतों जीत भक्त अपनेकी हारे हार विचारों । सूर श्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥ १७१ ॥

## राग सारंग ।

दास अनन्य मेरो निज रूप । दर्शन निमिष ताप त्रयमोचन पर्सत सुकत करत गृह कूप ॥ मेरी बांधी भक्त छुडावे बांधे भक्त न छूटै मोहि । एक बेर मोको गहि बांधे तो पुनि मोपै जुवाब नहोहि ॥ मैं गुण बंध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास । नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेम प्रकाश ॥ १७२ ॥

## राग विभास ।

ऊधो हौं दासनको दास । जो जन मेरो नाम जपतहै मैं तिनहीके घट परकास ॥ धन्ने के मैं गऊ चराई नामेंको देहरा फेरिया । त्रिलोचन के मैं भयो व्रतीया सुदामें को दरिद्र हरिया ॥ कबीर के मैं रह्यो बनिजारा सैने की विरती धाया । गजके जाय चरण गहे मैं काढ जलों थल ल्याया ॥ जो जन कहत करौं मैं सोई संत मेरी रहरास । हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावतहै दुनीदास ॥

## राग काफी ।

जो जन ऊधो मोहिं न बिसारे ताहि ना बिसारों छिन एक घरी । जो मोहिं भजे भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्मके फंदन राखों सुख आनंद करी । चतुर सुजान

सभामें बैठे दुःशासन अनरीतकरी ॥ सुमिरण कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर उबार धरी। ध्रुव प्रह्लाद रैनि दिन ध्यावें प्रगट भये वैकुंठ पुरी ॥ भारत में भरुहीके अंडा तापर गज को घंट ढुरी। अंबरीष गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छांहि करी॥ सूर के स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीश हरी॥ १७४॥

# फुटकर पद.

## राग रामकली।

जयति श्रीराधिके सकलसुख साधिके तरुणि मनि नित्त नवतनु किशोरी। कृष्णतनुलीन घन रूपकी चातकी कृष्णमुख हिमकरनकी चकोरी ॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी । कृष्ण अनुराग मकरंदकी मधुकरी कृष्ण गुणगान रससिंधु बोरी ॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठ कला तदपि भोरी। विमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्त चोरी ॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ १७५ ॥

धनि यह राधिकाके चरण। सुभग शीतल अति सकोमल कमल के से वरण ॥ रसिक लाल मन मोदकारी विरह सागर तरण। विवस परमानंद छिन छिन श्यामजीके शरण ॥ १७६ ॥

मेरी मति राधिका चरण रज में रहो । यही निश्चय कर्यो अपने मनमें धर्यो भूलके कोऊ कछू औरहू फल कहो ॥ करम कोऊ करो ज्ञान अभ्यास हूं मुक्तिके यत्न कर वृथा देहो दहो। रसिक वल्लभ चरण कमल युग शरण पर आश धर यह महा पुष्ट पथ फल लहो ॥ १७७॥

## राग मलार ।

हमारे माई श्यामजीको राज । जाके अधीन सदाही साँवरो या ब्रजको शिरताज ॥ यह जोरी अविचल श्री वृंदावन नहीं और से काज। विठ्ठल विपुल विनोद विहारन ज्यों जलधर सों गाज ॥

## राग परज ।

हम श्री श्यामजूके बल अभिमानी । टेढे रहैं मोहन रसिया सों बोलें अटपटी वानी ॥ पड़े रहैं अलमस्त झकोए शिरपर राधा रानी । किशोरी अलीके प्राण जीवन धन बृंदावन रजधानी ॥ १७९॥

## सवैया ।

ब्रह्म में ढूंढ्यो पुराणन वेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन ॥
देख्यो सुन्यो न कहूं कबहूं वह कैसो स्वरूप औ कैसे सुभायन ॥
ढूंढत ढूंढत ढूँढि फिरचो रसखानि बतायो न लोग लुगायन ॥
देख्यो कहां वह कुंज कुटीन में बैठे पलोटत राधिका पायन ॥ १८०॥

## राग कल्याण ।

राधाजी सुहागन राधे रानी । श्याम सुंदर ब्रजराज लाड़िलो ताके वश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र विराजै बृंदावन रजधानी । जीत लियो ब्रजराज पपीहरा आनँद घन रसदानी ॥ १८१ ॥

## राग विहाग ।

राजत निकुंज धाम ठकुरानी । कुसुम सेज पर पौढी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललिता चरण पलोटत लाल दृष्टि ललचानी । पांय परत सजनीके मोहन हित सों हाहा खानी ॥ भई कृपालु लाल पर ललता दे आज्ञा मुसुकानी । आवो मोहन चरण पलोटो जैसे कुँवरि न जानी ॥ आज्ञा दई सखीको प्यारी मुख ऊपर पटतानी । बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजै सुख सानी ॥ गावनलगे रसिक मनमोहन तब जानी महरानी । उठ बैठी व्यास की स्वामिनी श्रीवृंदावन रानी ॥ १८२ ॥

## राग रामकली ।

नव कुँवर चक्र चूडा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मणि पट्टरानी ॥ शेश गृह आदि वैकुंठ पर्यंत लौं लोक थानेत ब्रज राजधानी ॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारों जहां भरत पानी ।

सूर शशि पहरुवा पवन जल इंद्रहू वरुण दासी भाट निगम बानी ॥ धर्म कुतवाल शुक सूत नारद जहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी । सत्व गुण पौरिया काल बँधुवा जहां डांडी पति काम रति सुख निशानी ॥ कनक मरकत धरणि कुंज कुसमित महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी । पल न बिछुरत दोऊ तहिं न पहुँचत कोऊ व्यास महलिन लिये पीकदानी ॥ १८३ ॥

## राग गौरी

वृंदावनके राजाहैं दोउ श्याम राधिका रानी । चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरैं जहँ पानी ॥ कर्म धर्म दोउ बटत जेवरी घर छाये ब्रह्मज्ञानी । योगी यती तपी संन्यासी तिनहूं नेक न जानी ॥ पचिहारे वेद पुराण लगनिया गावत सगुणियां बानी । घर घर प्रेम भक्ति की महिमा सहचरि व्यास बखानी ॥ १८४ ॥

## राग देवगंधार ।

ब्रज नव तरुणि कदंब मुकुट मणि श्यामा आज बनी । नख शिख लौं अँग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कवरी गूंथत कच कनक कंज बदनी । चिकुर चंद्रिकन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी ॥ सौभग रस शिर श्रवत पनारी पिय सीमंतठनी । भ्रुकुटि काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी॥ तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी । दशन कुंद सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल बिंदु कनी । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसव तनी ॥ भुजमृणाल बल हरत बले युत परस सरस श्रवनी । श्याम शीश तरु मनो मिंड-वारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलन को ह्रदनी। कृश कटि पृथु नितंब किंकिणि भृत कदलि खंभ जघनी॥ पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी । नव नव भाव विलोक भाम इव विहरत वर करनी ॥ हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी । गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥

## राग कान्हरा ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी । ब्रज युवति यूथ में रूप औ चतुरई शील शृंगार गुण सभन में आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुरसुर रागरी । सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नव कुंज में श्याम बड भागरी ॥ १८६ ॥

## राग परज ।

आज उज्यारी भई लो रात॥आप उज्यारी भई तेरी सेज उज्यारी चमक सुंदर पिया प्यारी ॥ कान्हके शिर मुकुट विराजै राधा शिर जरद किनारी ॥ १८७ ॥

## राग देवगंधार ।

आज वन राजत युगल किशोर । नंद नँदन वृषभानु नंदनी उठे उनीं दें भोर ॥ डगमगात पग परत शिथिल गति परसत नख शशि छोर । दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ हित हरिवंश सम्हार न तन मन सुरत समुद्र झकोर ॥ १८८॥

आज अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रसमें भीने नागरि नंद किशोर ॥ अंशन पर भुज दिये विलोकत इंदु वदन बिब ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चित चोर । परिरंभन चुंबन आलिंगन सुर मंदिर कल घोर ॥ पग डगमगत चलत वन विहरत नव निकुंज वनघोर । हित हरिवंश लाललनामिलिहियोसिरावतमोर ॥१८९॥

## राग बिलावल ।

आज इन दोउअन पै वलि जैये । रोम रोम सों छबि बरसतहै निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ॥ १९० ॥

## राग रामकली ।

उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां । कुंडल सों लर लट बेसर सों

पीतपट हारन सों वनमाल बहियां सों बहियां॥ हंस गति अति छबि अंग अंग रही फबि उपमा बिलोकिबेको पटतर नहियां। कामके कलोल छूटे सेजहूंके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियां॥

## राग प्रभाती।

छांडो कृष्ण युगल बैयां भोर भई अँगना। दीपककी ज्योति फीकी चंद्रहू को चांदना॥ मुखको तँबोल फीको नयनहूं को आँजना॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना। गैयां सब वनको जात पक्षी चात चुगना॥ घर घर दधि मथन होत छनकत हैं कँगना। ग्वाल बाल द्वारे ठाढे उठो नंद नंदना॥ सूरश्याम मदन मोहन ऐसो नयनठगना। श्रीराधाजूके कुंडल सोहैं कृष्णजूके बँगना॥

## राग कालिंगडा।

प्रीतम नूपुर मति न उतारो। इनकी धुनि सुनि पार परोसिन कहा करैगी हमारो॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नहिं टारो। नारायण जे शरण चरणकी तिन्हें न कीजे न्यारो॥ १९३॥

## राग भैरव।

भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी। बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि तम विगत भई उजियारी॥ दधि मथि माखन तुमपै ल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी। ललतादिक सखियां सभ ठाढी मेवा पान लिये जल झारी॥ सुन प्रियवानी सुखरस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी। दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपौ भई सुखारी॥ आदि सनातन राधे मोहन विलसत हुलसत सँग सुकुमारी। दंपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी॥ १९४॥

## राग रामकली।

लटकत आवत कुंज भवन ते। ढुर ढुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवन ते॥ चौंक परत कबहूं मारग बिच चलत सुगंध पवन ते। भर उसास राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवन

ते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहुँ प्यारी तन ते । रसिक टरो जिन दशा श्यामकी कबहूं मेरे मनते ॥ १९५ ॥

## राग कान्हरा ।

प्रीतिकि रीति रँगीलोइ जानै । यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपो मानै ॥ यमुना पुलिन निकुंज भवन में मान माननी ठानै । निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहिं न आनै ॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आन से बानै ॥ जय श्री हित हरिवंश चतुर सोइ लालहिं छाँड मेंड पहिचानै ॥ १९६ ॥

## राग रेखता ।

हर इक तरफ चमन में कैसी बहारछाई । चल देखिये छबीली गुलशन कि खुशनुमाई ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवारी । फूलोंके भार सेती क्या झुकरही हैं डारी ॥ सखियों के संग जाके देखो विपिनकि शोभा । नागर नवल छबीली छबि देखके मन लोभा ॥ फूलन की गूंध वेनी सखियन भली बनाई । हँस हँस के ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई ॥ १९७ ॥

टुक बंगला में बैठो बाग की बहार है । घर को न जावो प्यारी यां भइ अवार है ॥ जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई । क्या सर्व सुहागिल सेवती क्या गुल डोरी लगाई ॥ चारों तरफ लगी हैं क्या गुलाबकी क्यारी ॥ क्या सर्व सफेद कनेरहै क्या गुलाबास न्यारी ॥ हँस करके ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई । गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई ॥ १९८ ॥

कीजे गवन भवन में वृषभानुकी दुलारी । देखो बहार कैसी बड गोपकी कुमारी ॥ फूले गुलाब चंपा केसर कि फूली क्यारी । सुंदर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी ॥ चहुँ ओर मोर बोलैं कोयल कि कूक प्यारी । पहरो सम्हार भूषण ओढो सुरंग सारी ॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी । माखनको चोर ठाढो विनती करै तिहारी ॥ १९९ ॥

## दादरा।

महलन चलो नवल अलबेली। रंग महलमें सेज बिछीहै चुन चुन कुसुम चमेली॥ चंपा मरुवा और केवडा बिच बिच फूल रवेली। चित्रकारी मेरे देखोजी मंदिरमें सुंदर गर्व गहेली॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरण की मैं चेली॥ २००॥

## लावनी।

चल वृषभानु कुमारी बाग अवलोक बनी शोभा भारी। भांति भांतिके खिलेहैं फूल झुकी धरणी डारी॥ सुन पिय वचन चली हँस सुंदर पहुँची नजर बाग की ओर। वचन अमीसे कहतेहैं नागरि से पिय नंद किशोर॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिन में कैसी बनी मरोर। अति सुढार हैं, रौस सुरखी पट्टीकी हरी किनोर। फूले चीन गुलाब चारु गुलतुर्रा केतकि है न्यारी। भांति भांति के०॥ गेंदा गुलाबास गुलतुर्रा गुलसब्बू और गुलगोटी। गुल इलायची, लगीहै गुलमेहँदी रँगकी मोटी॥ फूली गुलचांदनी भली यह गुलबहार झुक में लोटी॥ कुंद केवडा, भली कचनारनकी सुंदर जोटी॥ रायबेल चंपा बेला मोतिया जूही फूली प्यारी॥ भांति भांतिके०॥ गुलखैरा गुलदाउद नीकी आवत महक चमेली की। मौलसिरी है, ललित केवरा माधुरी बेली की॥ सरो सरस कनेर फुहारन में बहार जलरेली की। हौज बीच में, भली शोभा बाढी जल केली की॥ फूले कंज तडागन में तिनपै अलिपाँती झुकन्यारी॥ भाँति भाँतिके०॥ करो विहार आज या उपवन सुनो कुँवर जिय भावत है। कुंज छबीली छबीली ऋतु वसंत सरसावत है॥ बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुर सुर गावत है। पवन सुहावन विविध विधि चलत अनंद बढावत है॥ कुंजभवन मिलि बैठे दोऊ निरखें रसिक जन बलिहारी। भांति भांतिके॥ २०१॥

## राग दादरा।

प्यारी तेरे अंग में फूलनकी बहार है। फूलनके बाजूबंद

फूलनके गजरे फूलनके सोहैं गल हार ॥ चंपा मरुवा राय चमेली सब फूलन में गुलाब । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि सब गोपिन में गुपाल ॥ २०२॥

## राग वसंत ।

नई बहार आई मन भाई । ब्रजकी नारि सब बन बन मिल मिल फुलवा बीनन को धाई ॥ डारी डारी रस लेत भवँरवा कोयलिया बोल रही अंबुआ मौल रहे सब शीतल मंद सुगंध मारुत बहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न वेग कुँवरि कुंजन में फूल रही फुलवारी प्यारी तोहिं श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०३ ॥

ललित लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पाथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृग मद सौरभ रभस वशंषद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृत हासे ॥ विरहि निकृंतन कुंत मुखाकृति कतकि दंतुरि ताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगंधौ ॥ मुनि मनसा मपि मोहन कारिणि तरुणाकारण बंधौ ॥ स्फुरदाति मुक्त-लता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ वृंदावन विपिने परिसर परि गत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव भणितामिद मुदयतु हरि चरण स्मृति सारं ॥ सरस वसंत समय वन वर्णन मनुगत मदन विकारं ॥

देख सखि आज बन्यो श्री वृंदाविपिन समाज । आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज ॥ राधारमण वसंत

मचायो पंचम धुनि सुनि कान । धरणि गिरत सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान ॥ किलकत कोकिल कुंजन ऊपर गुंजत मधुकर पुंज । बजत महारव वेणु झांझ डफ ताल पखावज रुंज ॥ केसर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहिं धाई ॥ छिरक कुंवर बूका भर चोवा लिये कंठ लिपटाई ॥ वर्षत सुमन विबुध कुल ऊपर पावन परम पराग । तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्यास बडभाग ॥ २०५ ॥

कोयलिया बोलन लागीरे । फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे केसू फूले अँबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार ॥ पिया बिन मेरो मन भयो विरागी ॥ अवधि बीती अजहूं नहिं आये कुब्जा सौति विरमाये ॥ रैनि दिवस रसना रटत उनहीं सँग लागी ॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुखनिधान ॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनँद उर बाढे ॥ २०६ ॥

## राग विभास ।

प्यारी तुम कौन होरी फुलवा बीनन हारी ॥ नेह लगनको बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी । नंदलाल वनमाली सों तुम बोलो क्योंनहिं प्यारी ॥ हँस ललता तब कही श्याम सों यह वृषभानु दुलारी । तिहारे कहा लागे या वन में रोके गैल हमारी ॥ राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी । सूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी ॥ २०७ ॥

## राग कालिंगडा ।

कोइ फुलवा लेहुरी फुलवा । नील श्वेत पीरे पचरंगी वरण वरण के हरवा ॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा । ललित किशोरी विवस होय चट पहराये पिया गरवा ॥ २०८ ॥

## राग जंगला दादरा ।

प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां मेरी फुलबगियामें चलोगे के ना । विविध रंग फूली फुलवारी अलबेली मन भामिनियां ॥

बहुत दिनाकी आशा लागी सींच सींच कर कामिनियां । सफल करो पद तल अंकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥ २०९ ॥

## राग गौरी ।

द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे । नई नई तान लेत बंसी में ठाढो गौरी गावे ॥ चलो सखी वाको मुखदेखें नंदकिधेनु चरावे । साँवरी सखी सोई बड भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ २१० ॥

## राग गौरी ।

मुरलीकी टेर सुनावे री माई को । मोरे आँगन में एडोई डोलै मोर मुकुट छवि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बतियां रहस रहस करगरे लगावे॥सूर घूंघट वाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे२११

## राग देश ।

अकेली मत जइयो राधे यमुना तीर । बंसीबट में ठग लागत हैं सुंदर श्याम शरीर ॥ बिन फाँसी बिन भुज बल मारत बिन गांसी बिन तीर ॥ वाके रूप जाल में फँसके को बचिहै ऐसो वीर ॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनमें राखो धीर । बीरन पान करन हम त्याग्यो कालिंदीको नीर ॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गई ते धृग धृग जन्म शरीर २१२

## राग विहाग ।

मेरे गिरिधारी जी सों कवन लरी । गिरिधारी जीके चरण कमल पर वार डारों सगरी ॥ चलरी यशोदा मैया तोहिं बताऊं जो हमसे झगरी । गोरे वदन पर नीला पट ओढे चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तूतो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी । सूरदास वन में जब पाऊं तो बातें हमरी ॥ २१३ ॥

## राग रामकली ।

श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे । श्री गोकुलके निकट

बहति है लहरनकी छबि आवै ॥ सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावै । मदनमोहनको अतिही प्यारी पटरानी जो कहावै ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको वेद विमल यश गावै ॥ २१४ ॥

## राग कालिगडा।

सखी स्वप्ने में घबरानी तुझ पर जादू किन डारा रे । स्वप्ने में देख्यो वाहीको मिलाऊं तनु तेरेकी तपन मिटाऊं तीन लोक मूरत लिख ल्याऊं चित्ररेखा तब नाम धराऊं पहले लिखों स्वर्ग की रचना तामें ना कोउ न्यारा रे ॥ दूजे लिखों पतालके बसैया तामें ना कोउ स्वप्न दिखैया बार वार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करों कछु वश ना मेरो होत न घटसे न्यारा रे ॥ तीजे लिखे मध्यके वासी श्रीवृंदावन लिख लइ काशी द्वारावतीके हो तुम बासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तब सकुचाय रही कछु मनमें घूँघट बहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युमनकी मूरत लिख ल्याई तब वाको कछु हाँसी आई अनिरुधको जब दियो दिखाई प्रेम सहित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्ने में मोहिं मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलँग सहित वाको लै आई ऊषाको जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको बासी जीवन प्राण हमारारे ॥ २१५ ॥

## पद ।

भजन भावना हीय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी । कुआँ पर्‌यो आकाश उडत खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलनकी चटपटी । वृंदावन हित रूप कहां लग वरणों सृष्टि अटपटी ॥ २१६ ॥

## कुण्डलिया ।

साँचे श्रीराधा रमण, झूठो सब संसार । बाजीगरको पेखनो, मिटत न लगत अबार ॥ मिटत न लगत अबार भूतकी संपति जैसे ।

महरी नाती पूत धुआं के बादर तैसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभ वश घर घर नाचें। झूंठ घढे सुनार वैनके बोले साँचे ॥२१७॥

## छंद ।

देखा देखी रसिक न होइ है रस मारग है बंका। काहू सिंह की सरवर करिहै गीदर फिरे जो रंका॥ असहन निंदा करत पराई कभूं न मानी शंका। बृंदावन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्यपथ डंका॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये। स्तुति निंदा छोड पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुख सुख हानि लाभ सम वर्तन आनि परे सो सहिये। भगवत चरण शरण गह गोविंद मन वांछित सुख लहिये ॥ २१९ ॥

## कवित्त ।

कामिनी निहारची काम संतन विचारचो राम योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शार्दूल मल्लनको वज्र तूल शत्रुनको शूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चंद्रमा चकोरनको भ्रमरनको कंज मंजु मकरंद लेखिये। कंस जाने काल ग्वाल बाल सब जान सखा एक नंदलाल ही अनेक रूप देखिये॥

## राग विहाग ।

ऊधो चलो विदुर घर जैये। दुर्योधनके कहा काज जहँ आदर भाव न पैये॥ गुरुमुख नहीं बडो अभिमानी कापर सेवक रहिये। टूटी छत्त मेघ जल बरसै टूटो पलँग बिछैये॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये। सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये॥ तुम तो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये। हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढैये॥ २२१ ॥

## राग जंगला ।

जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं। तो लाजों गंगा जननीको संतनु सुत न कहाऊं॥ शर धनु तोड महारथ मारूं कपिध्वज सहित

गिराऊं। पांडव सैन समेत सारथी शोणित सिंधु बहाऊं॥ जीवों तो यशलेवँ जगतमें जीत निशान फिराऊं। मरों तो मंदिर भेदि भानु को सुरपुर जाय बसाऊं॥ इतनी शपथ करौं प्रभु तुमरी क्षत्रिय गति ना पाऊं। सूरश्याम रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊं॥ २२२॥

जो मैं पारथ नाम कहाऊं। हठ कर इंद्र चाप शोणित शर मज्जन वेग कराऊं॥ गीध कबंध कंध बैठाऊं काग कराल उडाऊं। दे भगदत्त द्रोण दुःशासन इक इक बाण लगाऊं॥ प्रलय करूं कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊं। भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शर की सेज सुलाऊं॥ इतनी न करों शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं। सूरदास पारथ परतिज्ञा इक छत राज कराऊं २२३॥

## राग सोरठ।

वा पट पीत की फहरानि। कर गह चक्र चरणकी धावन नहिं बिसरत वह बानि॥ रथ सों उतर वेगि पग धावन कच रज की लप टानि। मानो सिंह शैल से उतरयो महामत्त गज जानि॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेदकी आन। सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान॥ २२४॥

## कवित्त।

आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो जाके हित राम नरसिंह रूप धारयो है॥ जाको यश परम पुनीत व्यास भागवत में गायो सो भयो भक्त प्रभुजीको प्यारो है॥ तैसोई सपूत भयो वैरोचन ताके आप छायो यश जग में कुल ऐसो तिहारो है॥ पूजो मन काम मेरी सुनियें हो राजा बलि याते आशीर्वाद तुमको हमारो है॥ २२५॥

## राग श्यामकल्याण।

सुन लेहु बात हमारी नगर सब॥ पढने जाओ प्रह्लाद संग सब राम नाम उर धारी। हरनाकुशके नाश करनको होंगे नरसिंह अवतारी॥ माखन चोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी॥२२६॥

सुन लेहु राजकुमार अरज मेरी ॥ याके पुत्र चढे अगनी में राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सब संसार ॥ माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार ॥ २२७ ॥

छंद ।

मतले तू रामको नाम झूठ मत बोले वृथा कुम्हारी । मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढ लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो आगिन चढे बच नहीं इनको अपराध महारी । यह तो बिल्ली करत विलाप दोष भयो भारी ॥ २२८ ॥

## राग श्यामकल्याण ।

मतले रामको नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी । काल जो तेरे शिर पर आयो आगई दशा तिहारी ॥ राम नामको वाद न कीजे लीजे शोच विचारी । माखन चोर दास यूं भाषे मेरो पिता बलधारी ॥ २२९ ॥

छंद ।

कुम्हरी मन में अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आई । डेउढी पर ठाढी भई अरज दासीने जाय सुनाई ॥ तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतर्यो आज॥तुम चलो वेग महराजवेर भइ भारी२३०

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूं मैं सत्य कि वानी । गुण भूलोंगो नाहिं पढाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मैंने हिरदे में जानी । विष प्याले छुडवाय प्याय दियो अमृत पानी ॥ २३१ ॥

छंद ।

पांच बरस के भये कुमर जी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद बढाये जी ॥ षंडामको ब्राह्मण दोनों राजा निकट बुलायेजी । लेजाओ चटसार कुमरको अस कछु रीति पढाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचाली जी । धर्मको खंडन पापको मंडन हत्या हृदय बसाओजी ॥२३२॥

## लावनी ।

विद्या पढने गये गुरू कि चटशाला । तिन भर भर पट्टी रामनाम लिख डाला ॥ प्रह्लाद काज भगवान भक्त हितकारी । भये संतनके हित काज आप गिरिधारी ॥ निरखी प्रभुकी प्रह्लाद प्रथम प्रभुताई । बिल्ली ने बच्चे धरे अँवा में लाई ॥ बिन जाने आँच कुम्हारि जो दई है लगाई । कीनी प्रभु आय सहाय बचे सुखपाई ॥ जिन जाना राम स्वभाव परम शुभकारी ॥ भये संतनके० ॥ इतने में पाँडे आय निहारी पाटी । पढ रह्या राम का नाम चलाई साटी ॥ क्या तुझे राम से काम कह्यो ललकारी ॥ भये संतनके० ॥ भूपति बोला ललकार कहाँ हरि तेरो । तू है मूरख नादान मौत ने घेरो ॥ अब छोडूँगो नाहिं गयो मैं हारी ॥ भये संतन के०२३३॥

## राग श्यामकल्याण ।

पाँडे जी मोहिं राम नाम लिख देह । गंगाजल तजि पियत कूप जल अमृत छाँड विष देह ॥ और पढन से कहा काज है वृथ त्रास क्यों देह । युगलदास प्रभुके चरणन में बार बार शिर देह२३४

## कडा ।

प्यारे जी गिनती कई हजार पढे हम बिकट पहारे । पट्टी लिखी अनेक लगे हरि नाम पियारे ॥ प्यारेजी राम नामके हरफ मैंने हिरदे में धारे । औ सब झूठा ख्याल जगत् में धुंध पसारे ॥ २३५ ॥

पाँडे जी मैं नहिं रखता प्यार कुमरकी शामत आई । पूत नहीं यमदूत करैं मेरि लोग हँसाई ॥ पाँडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई । मार उडाऊं खाल करैगा कौन सहाई ॥२३६॥

प्यारे जी फूलों कीसी सेज कुमर हरिके गुण गावे । धन मेरो महराज पार जिनका नाहिं पावे ॥ प्यारे जी निश्चय करके रटै विपतिके फंद छुडावे । दर्शन ते गति होय मुक्तके धाम बसावे ॥

## राग देश ।

जननी विष मोहिं दे पिलाय । अब और कछू तो नाहिं उपाय ॥

मेरो आप हरी कर ले सहाय ! इकबाँह पकरके खैंच लाय ॥ मोहिं गिरि पर्वत से दियो गिराय । तहां आप हरी ने मोहिं लियो उठाय ॥ इक जलती अगिनमें दियो बिठाय । तहँ कूद परे हरि आप धाय ॥ मोहिं अमृत हृदयसे लियो लगाय । हरिकी गति मोपै लखी नजाय। मोरे रोम रोममें रह्यो समाय। कहै युगल चरण में चित लगाय॥

## राग वसंत ।

नहीं छोडूं रे बाबाराम नाम। मेरो और पढन सों नहीं काम ॥ प्रह्लाद पठाये पढन शाल । संग सखा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढावत आल जाल । मेरी पटिया पै लिखदेउ श्रीगोपाल ॥ यह षंडेमर्को कह्यो जाय । प्रह्लाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड वान । तुझे तुरत छुडाऊं कह्यो मान ॥ मोको कहा सतावो बार बार।प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोडूं गुरुहिंगार । मोहिं घाल जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो रिसाय । तुझे राखन हारो मोहिं बताय ॥ प्रभु खंभसे निकसे हो विस्तार । हरन, कुश छेद्यो नख विदार॥ श्रीपरमपुरुष देवादिदेव । भक्त हेतु नरसिंह भेव ॥ कह कबीर कोउ लखे न पार । प्रह्लाद उधारे अमित बार ॥

## राग भैरव ।

मंगल रूप यशोदा नंद । मंगल मुकुट कान मधि कुंडल मंगल तिलक विराजत चंद ॥ मंगल भूषण सब अँग सोहत मंगल मूरत आनँद कंद । मंगल लकुट कांख में चापे मंगल मुरलि बजावत मंद ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । मंगल ब्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुति छंद २४० ॥

## राग भूपाली कल्याण ।

मुकुट पर वारी जाऊं नागर नंदा । सब देवन में कृष्ण बडे हैं ज्यों तारों में चंदा ॥ सब सखियन में राधे बडी हैं ज्यों नदियों में गंगा । चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि काटो यमके फंदा ॥२४१॥

## राग देश ।

आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्णयुग मणि सतयुग दिशन

पूर्ण सब घट रमण रमैया । दिवस मणि भास्कर निशा मणि चंद्रमा उडुगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जंबूद्वीप खंडन मणि भरतखंड चतुर महैया ॥ स्वर्ग मणि वैकुंठ राजन मणि इन्द्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्मा सब जग रचैया । हस्तिन मणि ऐरावत विहंगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहंस मणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमश ऋषि आयुर्बल मणि मार्कंडेय गिरि मणि सुमेरु थिरैया । तरुन मणि कल्पवृक्ष वीरन मणि महावीर सागर मणि पय समुद्र सरित मणि विष्णुपदी तीरथ मणि ब्रज स्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तन मणि प्रह्लाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्बसी तुरंगन मणि उच्चैःश्रवा इंद्रधामरहैया । रागमणि भैरव ऋतुन मणि वसंतऋतु शास्त्रमणि वेदांत रंजन मणि संगीत पार ना लहैया ॥ ताननमणि तानसेन गायन मणि नारद गंधर्व मणि हाहाहूहू बीणन मणि सरस्वती बीन प्रात ही नाम लेया । स्वरन मणि खरज स्वर सुर्तन मणि तैश्यरा मूर्छना मणि आनंदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोविंद नाम लै कृष्णानंद भवसागर पार पैया ॥ २४२ ॥

## राग बिलावल ।

धर्ममणि मीन मर्याद मणि रामचंद्र रसिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी । कठन मणि कमठ बल विपुल मणि वाराह छलन मणि वामन देह विक्रम धरी ॥ गिरिन मणि कनकगिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि सरन मणि मानसर नदिनमणि सुरसरी । खगनमणि गरुड द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवध पुरी ॥ सुभट मणि परशुधर क्रांतमणि चक्र वर शक्ति मणि पार्वती जान शंकर बरी । भक्त मणि प्रह्लाद प्रेम मणि राधिके मणिनकी माल गुह कंठ कान्हर धरी ॥ २४३ ॥

## राग भैरव ।

मदन गुपाल हमारे राम । धनुष बाण धर विमल वेणु कर पीत

बसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाये कोटिक काम । दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धारचो कर वाम ॥ तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम । परमानँद प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुण ग्राम ॥ २४४ ॥

## राग सारंग ।

हरि हरि हरि सुमिरण करो ॥ हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरिकी कथा होतहै जहां । गंगा हू चल आवें तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवें । गोदावरी विलंब न लावें ॥ सर्व तीर्थको बासो तहां । सूर हरिकथा होत है जहां ॥ २४५ ॥

## राग बिलावल ।

नंदरायके नव निधि आई । माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीत बसन भुज चारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यंत्र गति चरचि अरगजा अंग चढाई । अक्षत दूब लिये शिर वंदत घर घर बंदनवार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई ॥ २४६ ॥

## राग जैतश्री ।

नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो । तुमरे पुत्रभयो हौं सुनिकै अति आतुर ह्वै धायो ॥ बंदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आये । इक पहले ही आशा लागी बहुत दिनन के छाये ॥ ते पहरे कंचन मणि भूषण नाना वसन अनूप । मोहिं मिले मारगमें मानो जात कहूंके भूप ॥ तुमतो परम उदार नंदजी जो मांग्यो सो दीनो । ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सर साटो कीनो ॥ कोटि देहु तो परचो रहे गो विन देखे नाहिं जैहौं । नंदराय सुन विनती मोरी तबहिं विदा भल ह्वैहौं ॥ दीजे वेग कृपा कर मोको जो हौं आयो मांगन । यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवे आँगन ॥ मदन मोहन मैया कह टेरै यह सुनके घर जाऊँ । हौं तो तुमरे घर को ढाढ़ी सूरदास मोहिं नाऊँ ॥ २४७ ॥

## राग कान्हरा।

अनोखा लाडला खेलन मांगत चंद । हँसन खेलनको रारि करत है मनमें भयोरी अनंद ॥ २४८॥

## राग जैतश्री।

दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आयेहैं। तब हँस बोले कान्हर मैया इनको किन्हें पठायेहैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत जहां सघन बन झाऊ। पैठ पताल व्याल गह नाथ्यो तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातें कहत हँसत बलदाऊ। सप्त रसातल शेषासन रहि तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊ । मीन रूप धरके जब मारयो तबहिं रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलहिं खिसाऊ। कमठ रूप धर धरणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरबाऊ । धरि वाराह रूप रिपु मारयो लै क्षिति दंत अगाऊ ॥ विकट रूप अवतार धरयो जब जन प्रह्लाद बचाऊ । होय नरसिंह जब असुर विदारयो तहां न देख्यो हाऊ॥ बामन रूप धरयो बलि छल कर तीन पैग बसुधाऊ। श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊ ॥ मारयो मुनि विनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊ । इकइस बेरु करी निछत्र क्षिति तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ राम रूप रावण जब मारयो दश शिर बीस भुजाऊ । लंक जराय छार जब कीनो तहां रहे कहँ हाऊ ॥ माटीके मिस बदन बिकास्यो जब जननी डरपाऊ। मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबहुँ प्रतीति न आऊ ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर तहिं कर भाव बताऊ । तुर्त चीर द्वै टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ भक्त हेतु अवतार धरयो सब असुरन मार बहाऊ । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊ॥ २४९ ॥

## राग रामकली।

किहिं मिस यशोमति के जाउँ । सकल सुखनिधि मुख

निरखके नयन तृषा बुझाउँ ॥ द्वारे आरज सभा जुर रही निकसवे नहिं पाउँ। बिन गये पतिवर्त छूटे हँसै गोकुल माउँ ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउँ । मूललगन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउँ ॥ २८० ॥

## राग दादरा ।

जग में देखत हूं सब चोर । प्रथमें चोर जोर इंद्रिन वश महा लुब्ध मन मोर ॥ पांच चोर सबके उर भीतर चोरी करैं करावें । चोर चोर सब जयको खावें कोऊ पार न पावें ॥ हाकिम चोर चोर मुतसद्दी चोर शहर व्यापारी । तैसेइ चोर जानिये सबको कहा पुरुष कहनारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत वृंदावन बालक वत्स चुरायक । साधु चोर हरि हृदय चुरायो जो त्रिभुवनके नायक ॥ पांच सात मिल चोरी कीनो जो जासों बन आई । सूरदास गुण कहँ लग बरणै माखन चोर कन्हाई ॥ २८१ ॥

## दोहा ।

विश्वभरण पोषण करन, कल्पतरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवस भगधाम ॥

## राग धनाश्री ।

कबके बाँधे ऊखल दाम । कमल नयन बाहर कर राखे तू बैठी सुखधाम ॥ हो मिर्दयी दया कछु नाहीं लाग रही घर काम । देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरो वेग बडी विरिया भइ बीत गये युग याम । तेरी त्रास निकट नाहें आवत बोल सकत नहिं राम ॥ जन कारण भुज आप बँधाइ वचनाकियो ऋषि काम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर भो नाम ॥२८२॥

## राग सारंग ।

हलधर सों कह ग्वालि सुनायो । प्रातहिं ते तुम्हरो लघु भैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो ॥ काहूके लरिकहिं हरि मारचो भोरहिं आन रोवत गुहरायो । तबहीं ते बांधे हरि बैठे सो हम

तुमको आन जनायो ॥ हम बरजी बरज्यो नहिं मानत सुनतहि बल आतुर ह्वै धायो । सूरश्याम बैठे ऊखल लग माता डर तनु अतिहि त्रसायो ॥ २८३ ॥

निरख श्याम हलधर मुसकाने । को बांधे को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने ॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने । यमलार्जुन तरु उधरत कारण करत आप मन माने ॥ असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावतबाने । सूरदास प्रभु भाव भक्तिके अति मति यशुमति हाथ बिकाने ॥ २८४ ॥

## छंद ।

अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानंद मन सन्मुखखरे ॥ जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धर धावत हरे ॥ जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे । सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे ॥ धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही । धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥ धन धन उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढावहीं । धनि सो जननी बांधि राखत जाहि वेद न पावहीं ॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ लाइयो । धन्य सो तृण जासुकी रजु श्याम भुजन बँधाइयो ॥ धन्य ऋषि धन शाप दीनो अति अनुग्रह सो कियो । जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो ॥ अब कृपा कर देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै । जहां जन्महिं कर्म वश तहँ एक तुमरी रति रहै ॥ दीनबंधु कृपालु सुंदर श्याम श्री ब्रजनाथ जू । राखिये निज शरण अब प्रभु करिये हमहिं सनाथ जू ॥ २८५ ॥

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी । जब जब भीर परी संतन पै प्रकट होय प्रतिपाल करी ॥ आदि अंत सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी । कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अंतर्यामी ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शेष जपत नित नाम नये । सो भव तारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट

भये ॥ जाको नाम सुनत यम डर्पत थरहर कांपत काल हियो । ताको पकर नंदकी रानी ऊखल सों लै बांध दियो ॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमाजाय न कहत बनी । जैसुखसागर सब गुण आगर शोभा अंग अनंग घनी ॥ नारदको हम अति गुण मानें शाप नहीं वरदान दियो । जा कारण ते प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥ जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि प्रगट नंदके आँगन ऊखल संग बँधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुखकारी ॥ तुमरी माया जीव भुलानो किहिं विधि नाथ तुम्हैं जाने । तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तबहीं तुमको पहँचाने ॥ हे मुकुंद मधूसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे । इन चरणन में सदा रहै मन यह वरदान हमैं दीजे ॥ जै केशव जै अधम उधारन दयासिंधु हरि नित्य मगन । जै सुंदर ब्रजराज शशी मुख सदा बसो मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन मोद भरें । कर नित करें तुम्हारी सेवा नयन संत जन दरश करें ॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करें । नारायण विन भक्ति न रीझो वेद संत सब साख भरें ॥ २९६ ॥

## राग सुघराई ।

बजावै मुरलीकी तान सुनावै यहि विधि कान्ह रिझावै । नटवर वेष बनाय चटक सों टाढे रहे यमुना के तीर नित वन मृग निकट बुलावै ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवै । मोर मुकुट कुंडल वनमाला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवै । सूर श्याम के अंग अंग प्राति कोटि काम छबि छावै ॥ २९७ ॥

## राग वसंत ।

बरज यशोदे तू अपनो बाल । अपनो बाल रसिया गोपाल ॥

नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान करन गई यमुना तीर, लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जल प्रवाह मोरी लागी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ ॥ रहुरी ग्वालन मत झूठ बोल । मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुना तीर ॥ घर आवे जब बाल सार । आंगन धाये जब ढोटा सार ॥ देखो सूर प्रभुके यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुखों भई है लाल ॥ २५८ ॥

## राग बरवा ।

माई नित उठ कुंजन रोकत ब्रज वनवारी । कल न परत मोरी मटकी फोरी और भीजी पचरँग सारी ॥ जाय कहूं जी मैं नंदजू के आगे कबके छैल विहारी । हम रँग प्यारा देख मुसकत है और देत रस गारी ॥ २५९ ॥

## पीलो ।

हे प्यारी नाहिं फोरी गागरिया हेरी छबि हार नई पनिहार । तू तोरी मोरी चकिया की डोरी तापै देती है गार ॥ तू जोबन अलमस्त ग्वारन चलत न आप सँभार । झूम झूम पग धरत भूम पर मैं तोहिं दीना सँभार ॥ २६० ॥

## राग गौरी ।

छबीले बंसी नेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृंदावन दुर्लभ प्रेम तरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वै हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ विनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दै कान । या यश को सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप वेष ब्रज धरहो फिरहो सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई । सोंह दिवाय नंद बाबाकी रहे सकल गहि पाई ॥ सुन सुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई । गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मन मोहन कियो मधुर धुन गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुन

वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नाशा पुट सुन सुंदर मुख बेन । मानो नितत भाव दिखावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकतमोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कमल कोमल कोशरस चाखन उड आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानो सुधासिंधु में क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल । रस सभ दियो मदन मोहनको प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित वैजंती चरणन पर श्वासा पवन झकोर । मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमंडलु फोर ॥ डोलत लता मंद मारुत गति सुन सुंदर मुख बैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पद रेखा सुभग सांवरे गात । मनु षटवधू एक रथ बैठीं उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज मांगत निरखत रूप निधान ॥ २६१ ॥

## राग पूरवी ।

धरें टेढीपाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रिभंगीलाल । कुंडलोंकी छबि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे वनमाल ॥ सांवरो बदन पर पीत पट ओढन मुख मुरली बाजे मधुर रसाल । श्रीमत बल्लभ बन ते आये संग लिये ब्रजबाल ॥ २६२ ॥

## राग वसंत ।

वर घरते वनिता जो बन निकसीं आज कंचन थार भर निछावर करन मोहनलाल की । सप्तसुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपगत अति रसालकी ॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मराल की । तानसैनके प्रभु रस वश कर लीनी टेढी मूरत चितवन गोपालकी ॥ २६३ ॥

## राग कल्याण ।

अपने लालको जिमावत मैया । कर कर कौर मुखारविंद में मधु

मेवा पकवान मिठैया ॥ व्यंजन खाटे मीठे खारी अतिही स्वाद बन्यो अधिकैया । चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लालको ब्यारू करावत लेत बलैया ॥ २६४ ॥

मोहन जानी तिहारी बात। ब्यारू पर घर कर आवत यहां कछू नहीं खात ॥ यही स्वभाव तिहारो जनमको चोरीविन न अघात । नंददास कहत नंदरानी प्रेम लपेटी बात ॥ २६५ ॥

## राग नट ।

हरिकी लीला कहत न आवे । कोटि ब्रह्मांड छिनहिं में नाशे छिनही में उपजावे॥ बालक वच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझावे ॥ शिव सनकादिक अंत न पावें भक्तवछल कहवावे । सूरदास प्रभु गोकुल में सो घर घर गाय चरावे ॥ २६६ ॥

## राग सोरठ ।

हमरी फेंट छोड श्रीदामा । काहेको तुम रारि वढ़ावत तनक बातके कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बाँह गहतहो धाई । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबर आई ॥ हम काहेको तुमहिं बराबर बडे नंदके पूत । सूरश्याम दीनेही बनिहै बहुत कहावत धूत २६७॥

## राग कल्याण ।

तोसों कहा धुताई करिहों । जहां करी तहँ देखी नाहीं कह तासों मैं लरिहों ॥ मुँह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात। पावोगे फल अपनो कीयो रिसन कँपावत गात ॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाहीं ऐसे गये बिलाई। हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई॥

## राग देवगंधार ।

कालीके नथन काज कालीनाथ आये हैं। ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना वेहद भयो तिमिर मिटाये हैं ॥ ब्रह्मा वीचार कही बालिको ना सुध रही भूल गयो सब कछु वेग उठधाये हैं। चरणन में आय परे हो अधीन आगे खडे धन्य धन्य भये भाग

दरश दिखाये हैं ॥ और केती नर नार हर्ष बढ़ी प्रेम धार नख शिख रोम रोम आनँद बढाये हैं । कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदायेहैं । यमुनाके मध्य काढ फणहूं के ऊपर ठाढे राग रंग निरत करत अधिक सुहाये हैं ॥ कहत यों दुनीदास वृंदावन भयो विलास इच्छा पूरी नंदकी यशोदा कंठ लगायेहैं ॥ २६९ ॥

## राग वसंत ।

श्रीराधे देडारोना बांसुरी मोरी । जिस बंसी में मोरे प्राण बसतहैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे बांस की पोरी । काहे से गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊं गउआं घेरी ॥ मुख से गाओ प्यारे तालसे बजाओ लकुटी से लाओ गैयां घेरी । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणनकी चेरी २७०

## राग टोडी ।

खोलोजी किवाँर कोहै एती बार हरी नाम है हमार बसो कंदरा पहारमें । हौं तो आली माधव कोकिलाके माथे भाग मोहन हों प्यारी फिरो मंत्रके विचार में ॥ रागी हो रँगीली जावो क्यों न दाता पास भोगी हों छबीली जाय धसोजी पतार में ॥ नायक हों नागरी तो टांडो क्यों न लादो जाय हौं तो घनश्याम प्यारी वरसो जी बहार में ॥

# श्री रघुनाथलीला ।

## दोहा ।

मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुषबाणलियो हाथ ॥१॥
तुलसी कौशलराज भज, मतचितवे काहू ओर ।
सीता राम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ २ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहनी ओर ।
ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुरतरु तोर ॥३॥
सीतापति रघुनाथजू, तुमलग मेरी दौर ।

जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥
नाहिं विद्या नाहिं बाहुँबल, नहीं गांठमें दाम ॥
तुलसी ऐसे पतितकी, तुम पति राखो राम ॥ ५ ॥
कामिहिं नारि पियारिजिमि, लोभिहिं प्रियजिमिदाम ॥
ऐसे हो कब लागिहो, तुलसीके मन राम ॥ ६ ॥
बार बार बर मांगहों, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ७ ॥
दीजे दीनदयालु मोहिं, बड़ो दीन जन जान ॥
चरण कमलको आसरो, सत्संगतिकी बान ॥ ८ ॥

## राग भूपाली ।

गाइये गणपति जगवंदन । शंकर सुवन भवानी नंदन ॥ सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुंदर सब लायक ॥ मोदक प्रिय मुद मंगल दाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥ माँगत तुलसि दास कर जोरे । बसैं राम सिय मानस मोरे ॥ २७२ ॥

## राग विभास ।

जै भगीरथ नंदनी मुनि चित चकोर चंदनी नर नाग विबुध वंदनी जै जह्नु बालिका । विष्णु पद सरोज जासि ईश शीश पर विभासि त्रिपथगासि पुण्य राशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल बहसि वारि शीतल त्रयताप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका । पुर जन पूजोपहार शोभित शशि धौल धार भंजन भवभार भक्त कल्प थालिका ॥ निज तट बासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कीट जटिल तापसि सभ सर्स पालिका । तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देहु मोह महिपकालिका ॥ २७३ ॥

## राग काफी ।

धन धन धन मात गंग चाहत मुनि जन प्रसंग प्रगटी रघुनाथ चरन करन सुख विहारी । दीनी विधि बूंद डार अरि अनंग शीश धार आई मृत मध्य लोक संतनको प्यारी ॥ पर्वत द्रुम लता तोर

स्वर्ग औ पताल फोर भागीरथ करनधार सगर तनय तारी । अमित वारि अति उतंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन कर पाप पुंज हारी ॥ माता मैं याँचों तोहिं राम भक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसि दास दीन हो पुकारी ॥ २७४ ॥

आनँद वन गिरिजापति नगरी मन क्यों ना वास लगावत । काशी समान नहीं द्वितिया पुर ब्रह्मादिक गुण गावत ॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत । निकट प्रवाह वहत जहँ गंगा सुर नर मुनि हर्षावत ॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत । कीट पतंग जीव नाना विधि सबकी मुक्ति करावत ॥ अंतकाल सदा शिवशंकर तारक मंत्र सुनावत । अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहस मुख गावत ॥ राम सिया पद हेत प्रेम प्रभु तुलसिदास गुण गावत ॥ २७५ ॥

## राग आसावरी ।

आज सुदिन शुभघरी सुहाई । रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह बार योग समुदाई । हर्षवंत चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई ॥ वर्षहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई । कौशल्यादि मात सभ हर्षत यह सुख वरणि न जाई ॥ सुन दशरथ सुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई । वेद विहित कर क्रिया परम शुचि आनँद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज बधाई । पुरबासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मणि तोरन बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई । मागध सूत द्वार वंदीजन जहँ तहँ करत बडाई ॥ सहज शृंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई । गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजियो तनय सुखदाई ॥ बीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अबीर उडाई । नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि देह दशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई । देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भये सुर

संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई । सबहिं सुमन विकसत रवि निकसत विपिन कुमुद बिलखाई ॥ जो सुख सिंधु सकृत सीकर ते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमगि अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहों गाई ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तब पाई॥

## राग भैरव ।

सूरज वंशी नमो गुरु इष्ट हमारो दशरथ सुत राजा राम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुषधारी सुंदर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम । धीरज प्रवीन प्रभु रघुकुल तिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ २७७ ॥

## राग तिलंग ।

ढाढिन चल दशरथ घर जाइये । ढाढ़ी कहै सुनो मेरी प्यारी जहां सकल सिधि पाइये ॥ कंचन वसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये । रतन हरी प्रभु राम जनमकी विमल बधाई गाइये ॥

हों तो रघुवंशिन को ढाढी । सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयों आशा बाढी ॥ तुमरोइ यश गाऊं जहँ जाऊं पूछो दुनिया ठाढी । रतन हरी मेरो नाम रामको लेहुँ बलैयां गाढी ॥ २७९ ॥

## राग तिलंग ।

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छोना । राज समाज सकल सुख संपति अधिक २ नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशिवासर अधिक जन्म धर मौना । रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ॥ २८० ॥

## सवैया ।

वरदंतकि पंगति कुंद कली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकैं घन बिज्जु जगैं छबि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघुवारी लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ॥ न्योछावर प्राण करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥ २८१ ॥

## राग कान्हरो ।

ठुमुकि चलत रामचंद्र बाजत पैंजनियां । किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियां ॥ अंचल रज अंगझार विविध भांति सों दुलार तन मन धन वारिदेत कहत मृदु वचनियां । मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कंचन रुनझुनियां ॥ आनंद सज कंबु कंठ ग्रीवा अति रुचिर रेख काच कुटिल कमल वदन मंद सों हँसनियां । विद्रुम सों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नाशा अति सुभगबीच लटकत लटकनियां ॥ अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहिं वरणे पार कह न सके शेश जिहिं सहस्र तो रसनियां । तुलसिदास रूप रंग परतरको दिये कहा रघुवरकी छबि समान रघुवरछबिबनियां ॥ २८२ ॥

## राग विभास ।

भोर भयो जागो रघुनंदन । गत व्यलीक भक्तन उर चंदन ॥
शशि कर हीन छीन द्युति तारे । तमचर मुखर सुनो मेरे प्यारे ॥
विकसत कंज कुमुद विलखाने । लै पराग रस मधुप उडाने ॥
अनुज सखा सब बोलन आये । बंदिन अति पुनीत गुण गाये ॥
मन भावतो कलेऊ कीजे । तुलसिदासको जूठन दीजे ॥ २८३ ॥

## राग प्रभाती ।

प्रात समय रघुवीर जगावे कौशल्या महतारी । उठो लाल जी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी । वाणी वेद विमल यश गावें रघुकुल यश विस्तारी ॥ वंदीजन गंधर्व गुण गावें नाचत देदे तारी । उमा सहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी ॥ कर अस्नान दान प्रभु दीनो गो गज कंचन झारी । जय जयकार करत जन माधो तन मन धन बलिहारी ॥ २८४ ॥

## प्रभाती ।

जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे । राजिव लोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे । मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव विलास आश त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे । मनो वेद बंदी मुनि वृंद सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे । मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंब टारे । तुलसिदास अति अनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंद्व भारे ॥ २८५ ॥

## राग बिलावल ।

आज तो निहार रामचंद्रको मुखारविंद चंदहू से अधिक छबि लागत सुहाई री । केसरको तिलक भाल गरे सोहै मुक्तमाल घूंघरवारी अलकन पर कुंडल छबि छाई री ॥ अनियारे अरुण नयन बोलत अति ललित वैन माधुरी मुसकान पर मदन हूं लजाई री । ऐसे आनंद कंद निरखत मिट जात द्वंद छबि पर वनमाल कान्हर गई हों बिकाई री ॥ २८६ ॥

## राग विभास ।

बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृप भवन द्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे । बिलखत कुमुदिन चकोर चक्रवाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गूंजत अलिन्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध

विधि सँवारे । करतल गह ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पटपीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्य पुंज निज विचारे । तुलसीदास संग लीजै जान दीन अभय कीजै दीजै मति विमल गावै चरित वर तिहारे ॥ २८७ ॥

## राग ललित ।

छोटीसी धनुहियाँ पन्हैया पगन छोटी छोटी सी कछोटी कटि छोटी सी तरकसी ॥ लसत झंगुली झीनी दामिनीकी छबि छीनी सुंदर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अंग जोहे जिया आवत सनेहकी सरकसी ॥ मूरतकी सूरत कही न परै तुलसी पै जाने सोई जाके उर करकै करकसी २८८ ॥

## राग खमाची जंगला ।

पगिया शिर लाल हरी कलँगी उर चंदन केसर खौर दिये । मनमोहन राम कुमार सखी अनुहार नहीं जबजन्मलिये ॥ पग नूपुर पीत कसे कछनी बरमालती की वनमाल हिये । विहरैं सरयू तट कुंजन में तहां रामसखे चित चोर लिये ॥ २८९ ॥

## राग आसावरी ।

सखीरी मुनि सँग बालक काके । रतनारे नयना जाके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके । राम लषण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब आये राजाके । आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सियाके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुषबाण कर जाके । गौतमऋषिकी नारि अहल्या तारी है चरण छुवाके ॥ सब सखियां मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके । तुलसिदास सेवक रघुनंदन लेख लिखे विधनाके ॥ २९० ॥

## राग कान्हरा ।

ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनंदनी । मधुर वचन तोतरे

त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नील वसन मंद हास रुचिर दशन झलकत उरमाल सकल देववंदनी। नूपुर पग बजत मानो सामवेद करत गान क्षुद्र घंट रुचिर नाद उर अनंदनी॥ जगत मात सखिन संग विहरत बहु करत रंग अग्रदास निरखत छबि भव निकंदनी२९१

## राग मलार।

बिहरत बागवा में देखे कुल भानवा। क्रीट मुकुट कंचनको झलकें मकर मनोहर कुंडल अलकें भाल तिलक केसरको राजे गल वैजंती माल विराजे मधुर वचन करलीने धनुष बानवा ॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसकात फिरत वन आछे काकपक्ष शिर सुंदर सोहें देखत राम लषण मन मोहें विधि शंकर इनहीं को धरें ध्यानवा। कही सखी जब ऐसी वानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जग में तारी शिला चरणकी रजने दरशन लीजो तजो गृह मानवा॥ कुसुम समेत वाम कर दोना छोटा कुँवर सखी अति लोना या देखत सब भई सुखारी तुलसी मुदित विदेह कुमारी बहुरि चली गिरिजाके भवनवा॥ २९२॥

## राग देस।

मैया मोको वैरन धनुष भयोरी। जन्म जन्मको परा शरासन सड घुन क्यों न गयो री॥ देश देशके भूपति आये तिल भर कछु न टरयो री । कहा कहौं मैं माइ बापको हो तैंने विष क्यों न दियोरी॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियोरी। तुलसीदास प्रभुके कर परशे खंडो खंड भयो री॥ २९३॥

## राग परज।

सखी रँग भीने दोउ राजकुमार। निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार॥ भुज दंडन चंदन मंडन पर चमक चांदनी चार। ललित कंठ रेखा विचित्र सखि उर कमलनके हार॥ रंगभूमि मणि जटित मंच पर बैठे सभा मँझार। मानो रवि उदयाचल गिरि ते निकस्यो तिमिर विदार॥ खंड खंड ब्रह्मंड

खंडके भूपति जुरे अपार । कैसे धनुष उठायो तोरयो किनहुँ न पायो पार ॥ कटि निखंग कर धनुष बाण लिये हरन चले महिभार । लाहा रामचंद्र छबि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ २९४ ॥

## राग केदारो ।

लेहुरी लोचननको लाहु । कुँवर सुंदर साँवरो सखि सुमुखि सुंदर चाहु ॥ खंड हरकोदंड ठाढे जानु लंबित बाहु । रुचिर उर जयमाल राजत हेत सुख सभकाहु ॥ चितै चित हित सहित नख शिख अंग अंग निवाहु । सुकृत निज सिय राम रूप विरंचि मतिहिं सराहु॥मुदित मन वर वदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ तयन सुखमा अयन हाथ सरोज सुंदरताहु । बसत तुलसीदास उर पुर जानकीको नाहु ॥२९५॥

## राग केदार ।

मनमें मंजु मनोरथ होरी । सो हर गौर प्रसाद एक ते कौशिक कृपा चौगनी भोरी ॥ प्रण परिताप चाप चिंता निशि शोच सकोच तिमिर नहिं थोरी । रवि कुल रवि अवलोकि सभा सर हित चित वारिज वन विकस्योरी ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगल मूरत नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी । राज समाज भूर भागी जिन लोचन लाहु लह्यो इक ठौरी ॥ व्याह उछाह राम सीवाको सुकृत सकेल विरंचि रच्योरी । तुलसीदास जाने सो यह सुख जा उर बसत मनोहर जोरी ॥ २९६ ॥

## राग भूपाली ।

बन्यो सिय प्यारीको बनरा । कि वरवश मोहलेत मनरा ॥ मौर शिर सोनेको धारी । विविध मणि चित्र चमतकारी ॥ करन छवि मेंहदी की भारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ कंकन की कमनीयता, कही कवन पै जाय ॥ अलक झलक लख खलक ललक आली पलक न परत सुहाय ॥ गले गज मोतियन को गजरा । चलन चितवन गति चित्र चोरी । वचन की रचन लाजतोरी ॥

गरब तज विवस भई गोरी। धामके काम दाम छोरी ॥ हँसन असी मुख म्यान ते, सुधा मुखी सित धार ॥ काढ कामिनी कतल करी, इस दशरथ राजकुमार ॥ रँगीली अँखियन में कजरा ॥ २९७ ॥

## राग परज।

बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो। दशरथ कुँवर साँवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो॥ अनब्याही ब्याही सब ब्याही देखत रूप ठगीलो। रामसखे अब लगत प्राण सम पियरो अवध नवीलो ॥२९८॥

## राग दादरा।

आली सियाबर कैसा सलोना। चितवन में चित आन फँस्यो है देख सखी चल राज ढटोना ॥ जनकशहर में कहर मच्यो है भूल्यो खान पान सबसोना । श्री रघुराज मोरवारे पर अबतो मोहिं फकीरिनहोना ॥ २९९ ॥

## राग भूपाली कल्याण।

देख सखी शिर पाग रामके कैसी सोही है। मर्कत गिरिपै चंद्र चाह चपला जनु मोही है॥ बड़ि बड़ि भुजा विशाल विभूषण लख तृण तोरी है। सुंदर नयन विशाल बदन पर हांसी थोरी है ॥ उर मोतियनकी माल कान कल कुंडल जोरी है। नाभिगँभीर उदर त्रिवली लख शारद बौरी है ॥ पीतांबरकी कछनी काछे पीत पिछोरी है। रामगुलाम अनूप रूप लख मति मेरि थोरी है ॥ ३०० ॥

## राग कान्हरा।

देखोरी छवि राम वदनकी। कोटि कोटि दामिनि दर्पण द्युति निंदत कांति कपोल रदनकी॥ नाशा मृदु मुसकान माधुरी मंद करी अति घुमड मदन की। फब रह्यो क्रीट मुकुट अलकन पर मनो फांस दृग मीन फँसनकी॥ चोरत चित भ्रुकुटी दृग शोभा कुंडल झलक खौर चंदनकी। रामसखे छबि कहि न जात जब सुधि न रहत लख वदन बसनकी ॥ ३०१ ॥

## राग खमाच।

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोइ जाने। सुन दशरथके कुँवर

लाड़िले कासों कहूं को माने । चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने । रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिंचाने ॥

## राग परज ।

तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराज किशोर ॥ मिथिलापुर में आय सबनके बरबस प्राण ठगे । कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृंगारपगे ॥ राम सखे लखि जनु रतिपतिके शायक से उर गडे ॥

## राग कालिंगड़ा ।

पिया तोरी नजरिया जादू भरी । जिहिं चितवत तिहिं वश कर राखत सुंदर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफन युत मुख चंद्र प्रकाशे नाशा मणि लटकत मन हरिया । युगल प्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल मानो रूप मछरिया ॥ ३०४ ॥

तेरी नजरों कि सैफकी धार । सुनिये हो अवध छैल दशरथके घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिलापुर के बजार । मधुर अली पिया सांची कहदेउ कब आओगे दिलदार ॥

## राग भैरवी ।

जालम नयन मेरे नाहिं रहिंदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर अराम नहिं बहिंदे ॥ बरज बरज रही अरज न मनदे हरज मरज सब सहिंदे ॥ करं कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी खहिंदे ३०६

## राग श्यामकल्याण ।

कुँवर दशरथके रंग भरे । कोटि काम सुंदर सुख मंदर अंदर आन अरे ॥ रंगीली पगिया पेच धरे । रत्न जडित शिर पेच पेच मोरे मनके बीच परे ॥ श्रवण शुभ कुंडल सुघर धरे । अलकां झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे ॥ बनी मोतियन की माल गरे । कमल नयन सुखदैन रैन दिन मन ते नाहिं टरे ॥ करन कंकन रत्न जरे । श्याम वरण मन हरन रत्न हरि चरण शरण उबरे ॥

## राग विलावल ।

क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे कानन कुंडल कर

धनुष बाण सोहै री। अरुण नयन अनियारे अतिहीं लगत प्यारे दशरथ दुलारे सबहीको मन मोहै री॥ सुंदर नाशा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बांकी भौं है री। लंबित भुज अति विशाल भूषण जडित जाल अंग अंग छबि तरंग कोटि मदन मोहै री॥ पीतांबर सोहै गात मंद मंद मुसकरात जनक भवन चले जात गति गयंद को है री। कान्हर करुणानिधान मेरे सखि जिवन प्रान जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहै री॥ ३०८॥

## राग खमाच।

रामकुमार लाल दशरथके या गलियन अबहीं जो गयोरी। पहरे तनु भूषण फूलनके अँग अँग अद्भुत रूप छयोरी॥ ठाढी देख अटा पर मोको खेलन मिस छिन एक ठयोरी। गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूंघट पट तब खोल दयो री॥ तब अपनाय लई मैं वा पिया हियमें प्रेम अँकूर भयोरी। रामसखे भूली सुध बुध सब अँखियन में अब राम रयोरी॥ ३०९॥

## राग दादरा।

सखि लखन चलो नृप कुँवर भलो मिथिलापति सदन सिया बनरो। शिर क्रीट मुकुट कटिमें पियरो हँसि हरि हरत हमरो हियरो॥ गल साजत है मोतियन गजरो अनियारी अँखियन सोहत कजरो। चित चाहत है उड जाय मिलूं रघुराज छांड सगरो झगरो॥ ३१०॥

## राग देश।

हँस पूछैं जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फंद छुडाये। तिहारो यही अचरज मन भाये॥ गज औ ग्राह लरैं जल भीतर दारुण द्वंद्व मचाये। गजकी टेर सुनी रघुनंदन गरुड छोड उठ धाये॥ भिलनीके बेर सुदामाके तंडुल रुचि रुचि भोग लगाये। दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर पाये॥ इंद्रने कोप कियो ब्रज ऊपर छिनमें बारि बहाये। गोवर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको मान

घटाये ॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो महभारत में गाये । भारत में भरुहीके अंडा घंटा तोर बचाये ॥ ले प्रह्लाद खंभ से बांध्यो राजन त्रास दिखाये । जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये॥छोरे न छुटे सिया जीको कँगना कैसे चाप चढाये । कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ जहँ जहँ भीर परी संतन पर तहँ तहँ होत सहाये । तुलसि दास सेवक रघुनंदन आनँद मंगल गाये ॥ ३११ ॥

## राग जंगला ।

लैल्योरी लोचन भर लाहू ॥ पुष्पन वर्षत मुनि जन हर्षत सिया रामको अजब बिवाहू । मिथिलापुरकी सखी सयानी समझ समझ शिखदेव सब काहू ॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नाहिं नगर अयोध्या जाहू । तुलसीदास परस्पर दोउ मिले नृप दशरथ मिथिलापुर नाहू ॥ ३१२ ॥

## जंगला ।

देखो री यह नयनन भर भर होत बरात बिदा दशरथकी ॥ गलिन मलिन गृह महल अटा पर अरुण भाल कामिनि गावें री । या विधि सियजीको ब्याहन आये कब रघुनाथ बहुरि आवें री ॥ धन्य अयोध्या धनि मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम बर्‍यो री । धन्य धन्य बालक दोउ बांके धनि राना दशरथ पतनी री ॥ खान पान बिसराय सभी मिलि बार बार सिय रामहिं देखें । इत लक्ष्मण उत भरत शत्रुहन भाग भले राजा दशरथ के ॥ मणि बिन सर्प चकोर चंद्र बिन जल बिन मीन कहु कैसे जिये री । तुलसीदास छबि वरण कहत है यह मूरत मेरे मन में बसी री ३१३ ॥

## राग कान्हरो ।

भुजन पर जननी वार फेर डारी । क्यों तोर्‍यो कोमल कर कमलन शंभु शरासन भारी ॥ क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताडका मारी । मुनि प्रसाद मेरे राम लषण की विधि सब करवर टारी ॥ चरण

रेणु लै नयनन लावत क्यों मुनिवधू उधारी । कहो धों तात क्यों जीति सकल नृप बरी विदेहकुमारी ॥ दुसह रोष मूरति भृगुपति अति नृपति निकर छे कारी । क्यों सौंप्यो सारंगहार हिय करत बहुत मनुहारी ॥ उमँग उमँग आनंद विलोकत बधुन सहित सुतचारी । तुलसिदास आरती उतारत प्रेम मगन महतारी ॥ ३१४ ॥

## राग कालिंगडा ।

निरखत रूप सिया रघुवरको छबि नहिं जात बखानी । आरति करत कौशल्या रानी ॥ कनक थार गज माणिक मुक्ता भरयो वेद विधानी । मारयो मान सकल भूपनको महिमा वेद बखानी ॥ तोरन धनुष जनक प्रण पूरण तीन लोक में जानी । जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी ॥ सुरपुर नारि अवध पुरबासी करत विमल यश गानी । नचत नवल अपसरा मुदित मन बरष सुमन हर्षानी ॥ रत्न मंदिर में रत्न सिंहासन बैठे सारँगपानी । मात कौशल्या करत आरती हर्ष निर्ख मुसकानी ॥ दशरथ सहित अवधपुर बासी उचरत जै जै बानी । तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ३१५ ॥

## राग ललित ।

रघुबर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है करियो गमन सकारे ॥ रघुबर कहैं सुनो मेरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूं घर मात कौशला दशरथ बाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुंब ते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ३१६ ॥

## राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो रघुराया । चौदा बरस मोहिं कब लग बीते मोहिं पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन प्रजाके बासी रो रो हाल बजाया । राम लषण सिया वनको सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसिदास जिन हरि नाहिं सुमरे विरथा जन्म गँवाया ॥

## राग देश ।

बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मात की करनी सकल दुनिया सों न्यारी है ॥ विमुख जिन राम सों कीना ऐसी जननी हमारी है । लगी रघुवंश में अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणी पै यही करता पुकारी है । सुना जब तात का मरना मनो बरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ बेसुध दृगन से नीर जारी है। धरूं मैं ध्यान सूरत का मुझे तृष्णा जो भारी है ॥ परूं रघुनाथके पाऊं यही तुलसी विचारी है ॥३१८॥

## राग विहाग ।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसें तेरे देखन को ॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन मो नयनन के तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

## राग कालिंगडा ।

मैं कौन बन ढूंढों री माई मेरे दोनो बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई । बीच जानकी अधिक विराजे राजा जनककी जाई ॥ अंतर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई । राजा दशरथ ने प्राण तजेहैं कैकेयी मन पछताई ॥ इंद्र गरजे भादों बरसे पवन चले पुरवाई । कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर बजत बधाई । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई ॥ ३२० ॥

## राग बिलावल ।

नृपति कुँवर राजत मम जात । सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अंशन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट विच नूतन पात । फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहि सहज मुसकात ॥ संग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजत बिन भूषन नव सात । सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन

विकसत मनु प्रात ॥ अंग अंग अगणित अनंग छबि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ३२१ ॥

## राग कल्याण ।

पूछत ग्राम वधू मृदु बानी । गौर श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुमरेको लगत सयानी ॥ शील स्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुष समंजल पानी । पिय तन चितै दृष्टि नीचेकर सखिन विलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देश ते आये जिहिं पुर बसो सुमंगल खानी । चलत पियादे पाँय त्रान विन राजकुँवरि किमि करो बखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी । ठान कुमति उर बसी सवति पन राज समय वन दीनो रानी ॥ सियके वचन सुनि सखी दुखितभई पल छिन मनो विरह गलानी । एक कहै भल भूप न कीनो वन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ राम लषण सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी । सो भवसिंधु तरै गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी ॥ ३२२ ॥

## राग बिलावल ।

फिर फिर राम सिया तन हेरत । तृषित जान जल लेन लषण गये भुज उठाय ऊंचे चढ टेरत ॥ अवनि कुरंग विहंग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत । मगन न डरत निरख कर कमलन सुभग शरासन सायक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूं दिशि मनो चकोर चंद्रमहिं घेरत । ते जन भूरिभाग्य भूतल पर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ ३२३ ॥ ॥

## राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो सिय प्यारी । मात कैकयी वनवास दियोहै प्राणों सों अधिक प्यारी ॥ कपटी मृगके पाछे धायो लछमन कियो रखवारी । मैं तोहि सिया बहुत समुझायो तैं एक

न मानी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धरणि पर लछमन रोय पुकारी । तुलसीदास प्रभु वन वन ढूँढत विधनाकी गति न्यारी ॥ ३२४ ॥

## राग गौरी ।

कुटुंब तज शरण राम तेरी आयो । तज गढ लंक महल औ मंदिर नाम सुनत उठ धायो ॥ भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो । मूरख अंध कह्यो नहि मानै बार बार समुझायो ॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँस कंठ लगायो । जन्म जन्मके मिटे पराभव राम दरश जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथके बंधू दीन जान अपनायो । तुलसीदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभयपद पायो ॥ ३२५ ॥

## राग केदार ।

दीन हित विरद पुराणन गायो । आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो ॥ तुमरे रिपुको अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो । सुन गुण शील स्वभाव नाथ को मैं चरणन चित लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख दासनके ताते कह न सुनायो । करकरुणा भर नयन विलोको तब जानों अपनायो । वचन विनीत सुनत रघुनायक हँस कर निकट बुलायो ॥ भेट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परस अभय कियो जन पर हेतु दिखायो । तुलसिदास रघुवीर भजन कर को न अभयपद पायो ॥ ३२६ ॥

## राग धनाश्री ।

सत्य कहों मेरो सहज स्वभाउ । सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सब विधि दीन हीन अति जड मति जाको कतहुँ न ठाउँ । आये शरन भजों न तजों तिहि यह जानत ऋषिराउ ॥ जिनको हौं हित सब प्रकार चित नाहिन और उपाउ । तिन हित लगि धर देह करों सब डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहत हों सकल सभा पतियाउ । नाहिन

कोउ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ । तुलसिदास तज आश त्रास सब ऐसे प्रभुको माउ ॥ ३२७ ॥

## राग काफी जंगला ।

तात कि शोच न मात कि शोचरु शोच नहीं मोहिं अवध तजे की । शोच नहीं वनवास लिये कि शोच नहीं मोहिं सीया हरे की ॥ बाली हतेकी शोच नहींरे शोच नहीं मोहिं विपति परेकी । लछमन धरणि परे का शोच नहीं शोचनहीं मोहिं लंक जरे की। तुलसी शोच भयो इक मोको भक्त विभीषण बाहँ गहेकी ३२८

## राग विहाग ।

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बंध रघुवीर आये । अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उडत पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगर में धनुष ना सक्यो उठाय कोई । तोरयो धनुष मज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ वालि सों शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य ना जगत माहीं । लग्यो जब बाण रघुनाथके हाथको गिरि परयो धरणि फिर उठ्यो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की वेग धावो नहीं विलम कीजै । सूर स्वामी रंग लाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥ ३२९ ॥

## राग गौरी ।

अब देखो राम ध्वजा फहरानी । हलकत ढाल फरक्कत नेजा गरद उठी असमानी ॥ लक्ष्मण वीर वालि सुत अंगद हनूमान अगवानी । कहत मंदोदरी सुन पिय रावण कौन कुमति सिय आनी ॥ जिस सागर का मान करत है तापर शिला तरानी । तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बडाई । ध्रुव मंडल से पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई ॥ हनूमान जैसे पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई । जरत अग्नि में कूद परैंगे शोच कभूं नाहिं पाई ॥

मेघनाद से पुत्र हमारे कुंभकर्ण से भाई । एक बेर सन्मुख होय लडैं-
गे युग युग होत बडाई ॥ इक लख पूत सवालख नाती मौत आपनी
आई । अग्रके स्वामी गढ लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी ॥२३०॥

## राग कालिंगड़ा ।

जय जय जय रघुवंशदुलारे । सुखसागर रविवंश उजागर लीला
ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर सँहारन गौतम नारि
उधारन हारे । जनक स्वयंवर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारण
हारे ॥ पिता वचन सुन राज काज तज अनुज सहित वनको पग-
धारे । वालि वधन वैदेही शोधन लंकापति भुज भंजन हारे ॥
जगनायक प्रभु संत सहायक गावत वेद पुराण पुकारे । राम सखे
रघुनाथ रूप लख युग युग येही विरद तिहारे ॥ २३१ ॥

## राग श्यामकल्याण ।

सखी वह देखो रघुराई । गगन मगन पुष्पक विमान पर हैं बैठे
सुखदाई ॥ संग में फवी जनक जाई । ज्यों सावन घन माहिं दामनी
दमकत छबि छाई ॥ कपिनकी भीर संग भारी । हनूमान सुग्रीव
विभीषण अंगद युवराई ॥ मात कौशल्या हरषाई । कंचन थार
सुधार आरती करें सुमनभाई ॥ देवगण फूलन झरि लाई । अटल
राज संपति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई ॥ याचकन मन माँगी
पाई । देत अशीश अघाय रतनहरि बलि बलि बलि जाई ॥२३२॥

## राग गौरी ।

अवध आनंद भये घर आयेहैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भर-
तजी भैया पाछे कैकयी माय । घर घर मिले अयोध्या वासी पाछे
कौशल्या हरिकी माय ॥ जवहीं राम सिंहासन बैठे कहो लंक की
बात ॥ मात कौशल्या पूछन लागी कैसे तोडे गढलंक । बाट घाट
लक्ष्मणने रोक्यो औघट रोक्यो राय ॥ दरवाजा अंगद ने रोक्यो
कूद पडे हनुमान ॥ रावण मार अहिरावण मार्यो दियो विभी-
षण राज ॥ गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसी दास ॥ २३३ ॥

## राग पीलू।

भरत कपि से उऋण हम नाहीं। सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गयो छिन माहीं॥ लंकाजार सिया सुध लाये गरब नहीं मन माहीं। शक्ती बाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माहीं॥ द्रोणागिरि पर्वत लै आये भोर होन नहिंपाई। अहिरावणकी भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माहीं॥जो पै भरत हनुमत नहीं होते को लावे जग माहीं। आज्ञा भंग कभूं नहिं कीनी जहिं पठयो तहिं जाई॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई॥ २३४॥

## राग प्रभाती।

प्रात समय उठ जनकनंदनी त्रिभुवन नाथ जगावे। उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर कंकण सुरझावे। घूंघर वारी अलकें झलकें पाग के पेंच सँवारे॥ कमल नयन मुख निरख रामको आनँद उर न समावे। कान्हर जास आश रघुवरकी हरष निरख गुण गावे॥ २३५॥

## राग कल्याण।

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी। नील नीरद वरण वपुष भुवनाभरन पीत अंबर धरन हरन द्युति दामनी॥ सरयू मज्जन किये संग सज्जन लिये हेतु जन पर हिये कृपा कोमल घनी। सजनी आवत भवन मत्त गज वर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करन विवरत चतुर सरस सुखमा जनी। ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत धरहर करत रुचिर जनु युग फनी॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नाशिका सुभग शुक आननी। चिबुक सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सुधर वचन गंभीर मृदु हास भव भाननी॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तनी। युगल कंचन मकर मनो विधु कर मधुर पियत पहँचान कर सिंधु कीरति

भनी ॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक भाल सु विशाल चहुँ पास वनी गज मनी । श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उडगन अनी ॥ मंदरन पर खरी नारि आनँद भरी निरख वरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी । दास तुलसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरत छवि आपनी ३३६॥

## राग पहाड ।

छवि रघुवीरकी चित चोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कँलगी हीर । उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर ॥ कृपा निवासीके प्राण जीवन धन सुध हूं न भूपण चीर ॥

हगन बसी रघुवीर की छवि हो ॥ शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर ॥ शीतल मंद सुगंध झकोरा बहती है त्रिविध समीर । जानकीदास छवि देख मगन भये शोभा श्याम शरीर॥३३८॥

अँखिया लगीं थारे रूप रँगीले रामा ॥ क्यारी करूं कछु वशना मेरो बूड गेयां रस कूप ॥ चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराई में अनूप । कृपा निवासी लगन ना छूटे सुनियो अवधके भूप॥३३९॥

## राग सोरठ।

अँखिया राम रूप अनुरागी । श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुंदर बदन मदन शत शोभा निरख निरख रस पागी । रत्न हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रँग रागी ॥३४०॥

अँखिया राम रूप रस भीनी । कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी ॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रँगीनी । रत्नहरी कैसे अब निकसे होगइ ज्यों जल मीनी ॥ ३४१ ॥

## राग खट ।

मेरो हग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो । वन प्रमोदकी कुंज गली में चोरयो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसक्यान विलोकन से कछु टोना मोपै डारो । राम सखे अब बिन पिया देखे सब सुख लागत खारो॥

## राग कालिंगडा ।

बाँको हमारो यार सँवलिया । बाँकी लटपटी पीत लपेटे बाँकी बाँधे तलवार सँवलिया । बाँके शीश जरतकी पगिया बाँके घोड़े असवार सँवलिया । रामसखेको मन हरिलीनो दशरथ सुत सरदार सवँलिया ॥ ३४३ ॥

## राग जंगला ।

काहेको बाँधे तीर कमनियां । भौंहैं कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियां ॥ संत हृदय वन मन मृग ढूंढत चुन चुन मारत शब्द रसनियां । रामसखेको घायल कीनो बन आवे ले जाउ घर कनियां ॥ ३४४ ॥

क्या बुलाक अधरन पर हलकें । जबते दृष्टि परी है मेरी तब ते छिन पल परत न पलकें ॥ किधों असमसर शर संधाने क्षषा सुखमा पर सरवर झलकें । सिया राम पिया मुख मयंक पर मनो अमीकी मूरत झलकें ॥ ३४५ ॥

यह दोउ चंद्र बसें उर मेरे । दशरथ सुत औ जनकनंदनी अरुण कमल कर कमलन फेरे ॥ चंद्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरे । बैठे सघन कुंज सरयू तट चन्द्रकला तन हँस हँस हेरे ॥ ललित भुजा दिये अंश परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरे । रामसखे छबि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे॥

जय श्री जानकीवल्लभ लालहिं । मणि मंदिर श्री कनक महल में विपुल रँगीली बालहिं ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं । युगल विहारी भावत दोऊ लालन लखि छबि भई निहालहिं ॥ ३४७ ॥

## राग वडहंस मलार ।

तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे । नवल दुलहैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे ॥ झूले देत डरत अति सुंदर चोरत चित्त हमारे । सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रिया रू[illegible] मतवारे ॥

मधुर प्रियाके गरे लाग अब मिलो जानकी प्यारे ॥ ३४८ ॥

## राग पीलो ।

झूलन सीताराम अवधपुर रंग महिल में । मणि कंचनको रच्योहै हिंडोरा झूलत पिया प्यारी परम सहिल में ॥ विमलादिक सखी रसिक झुलावें अतर लगावें परमचहिल में । सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परम टहिल में ॥ ३४९ ॥

## राग देश मलार ।

सावन घन गरजें घूम घूम । बरसत शीतल जल झूम झूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हंस चकोर चहूं दिश डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम ॥ कंचन को हिंडोला झलके रेशम पाट मढ़े मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कली दल तूम तूम ॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मंद सुगंध महा छवि छाई झूलें जनकसुता रघुराई बहु बाल झुलावें ऊम ऊम ॥ गावें राग रामनी भामिन दमक रही मानो छवि दामिन झूटा देत नारि गज गामिन पायल बाजें छम छूम छूम ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छवि निर्खत छाय रह्यो सुख रूम रूम ॥ ३५० ॥

## राग वसंत ।

गावो वसंत वसंत पंचमी मंगल दिन रघुराज कुँवरको । आवो सब मिल गंधर्व गुणी जन तान तरंग उमंग रंग भर को ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रँगी सारंगी करको । गाय गाय रघुनायक गुण गण रतनहरी हिये रामही हरषो ॥ ३५१ ॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसंत आई । नवल कुसुमावली फूल चहुँदिशि रही नवल मारुत नवल सुगंधछाई ॥ नवल भूषण वसन पहन दोउ रँगमगे नवल पिया सखी निरखैं सुहाई । नवलगुण रूप जोबन जडत नित नयो रतन हरि देत आशिष बधाई ॥ ३५२ ॥

खेलत वसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ। झोरिन अबीर पिचकारी हाथ ॥ बाजैं मृदंग डफ ताल वेणु। छिरकें सुगंध भरे मलै रेनु ॥ बरषत प्रसून वर विबुध वृंद। जै जै दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ २९३ ॥

## राग टोडी।

अवध नगर सुंदर समाज लिये खेलत राम लषण होरी। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ केशर रंग करी घनघोरी ॥ इत ते भरत शत्रुहन आये उडत गुलाल लाल भई खोरी। रतनहरी श्री अवध विहारी चिरजीवो सुंदर दोउ जोरी ॥ ३९४ ॥

## राग होरी दादरा।

खेलत रघुराज आज रंग भरी होरी। राम लषण भरत शत्रुहन सुंदर वर जोरी ॥ कंचन पिचकारी करन केसर रँग बोरी। गह गह भर रंग भरत कह कह हो होरी ॥ उड़त रंग बर गुलाल भर भर भर झोरी। गारी दे दे अबीर डारत बरजोरी ॥ रंगसों मृदंग बाजत डफकी घनघोरी। गाय गाय धाय धाय मीडत मुख रोरी ॥ अवध नगर रंग बढ्यो सजनी निरखोरी। रतनहरी रामराज युग युग न टरोरी ॥ ३९५ ॥

## राग होरी।

दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलत आवै री। राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री ॥ कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छवि पावै री। उडत गुलाल लाल रँग भीने मन सो भावै री ॥ डफ मृदंगकी धुन मिल अद्भुत राग सुहावै री। रतनहरी श्री अवध विहारी पै बलि बलि जावै री ॥ ३९६ ॥

## राग परज।

लाल गुलाल जिन डारो। बरजोरी न करो रघुनंदन छोडोजी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक जाय बैयां छूट जाय कचवारो। रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूंघट पट न उघारो ॥ ३९७ ॥

## राग होरी ।

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमें बसी निकसे न पलक । गाल गुलाल लाल रँग भीनी तेरी प्रेम भरी अँखियनकी पलक ॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजब फँसी कुंडल में अलक । रतनहरी जो सुनो तो कहूं इक अरज हमारी है तुमरे तलक ॥ २५८ ॥

## राग देश ।

रघुवर तुमको मेरी लाज । सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम बड़े गरीबनिवाज ॥ पतितउधारन विरुद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज । हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघ खंडन दुखभंजन जनके यही तिहारो काज । तुलसिदास पर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज ॥ २५९ ॥

## राग वसंत ।

वंदौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटे भव भेद ज्ञान ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पद पंकज अज महेश ॥ निज भक्त हृदय पाथोज भृंग । लावण्य वपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोह तम मारतंड । अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि । कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणारविंद । जानकी रमण आनंदकंद ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल । निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकातिलक गुणगहन राम । कह तुलसिदास विश्राम धाम ॥ २६० ॥

## राग नट ।

हौं हरि पतित पावन सुने । हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने । और पतित अनेक तारे जात कापै गने ॥ जान नाम अजान लीने जान यमपुर मने । दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ २६१ ॥

## राग जंगला।

चितहिं राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं । चितहिं दीन ओर कोर बार बार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिबी विचार लीन लाय लीन पाछहिं ॥ लुगा रोटि महीन मोटि खरा खोटि बडा छोटि तुमसे नहिं कछू ओट हाथ है तिहारे । ना तिहाई रोजगार पेट हीसे एहै काज सुनिये गरीबनिवाज राम ररन उदर भरन मेरे राम राखो शरण यथा धेनु बाछहिं ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय बारिउ कहार जहां आसन करडासहिं । बचे जूठन को प्रसाद तोरा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुध लीजो मोरी इनके सब पाछहिं ॥ कौल ते बेकौल हों तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहिं खोर राम खेद देव आछहिं । मांगों बलि चरण सेई बार बार हेई हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे । ताते कर चरण जोर मोको नहिं और ठौर तुम तज और जाऊं कहां अवधके दुलारे ॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहों तुमरी ओर चौकट नहीं छूटे नाथ जोकोई झिझकोरे । शीश झगर नाक रगर कल न परै तुमरी बिगर छूटे नहीं नाम नगर डगरश्याम प्यारे॥

## राग देश।

करुणानिधान सुनियोजी कछु मेरो काजहै भारी। प्रहलादके हित कारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब संतनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्ततेरी जो आन सभामें घेरी चीरोंकी लाई ढेरी अब आई बार मेरी ॥ तुमहो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी बेर माधो कहिं सोये हो तो जागो॥गजकी जो अरज मानी यह विदित वेद वानी अब मेरी ओर देखो मोहिं अपनो कर लेखो ॥ भक्तनके फंद काटे अघ कोट कोट नाठे जी मैं बारबार टेरूं टुक घाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी मैं गिनत गिनत हारे महाराज अवध बिहारी भज रामसखे बलिहारी ॥ ३६३ ॥

## राग भैरव।

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे । काको नाम पतित पावन जग

किहिं अति दीन पियारे ॥ कौने देव बराय विरदहित हठि हठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण विटप जड यमन कवन सुर तारे ॥ देवदनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवस विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपो हारे ॥ ३६४ ॥

## राग टोड़ी ।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहों हौं दीन देखों सोई ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहिब तो घनेरे । पै तौलौं जौलौं रावरे न नेक नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदत वेद चारी । आदि अंत मध्य राम साहिबी तिहारी ॥ तोहिं माँग माँगनो न माँगनो कहायो । सुन स्वभाव शील सुयश याचक जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहँग अपने करलीने । महाराज दशरथ के रंक राव कीने ॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो । बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ॥ ३६५ ॥

## राग टोड़ी ।

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी । हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी ॥ नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों । मोसमान आरत नहिं आरत हर तोसों ॥ ब्रह्म तू हौं जीवहौं तू ठाकुर हौं चेरो । तात मात गुरु सखा तू सभ विधि हित मेरो ॥ तोहिं मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै । ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै ॥ ३६६ ॥

## राग झंझोटी ।

मैं किहि कहौं विपति अति भारी । श्रीरघुवीर दीन हितकारी ॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा । तहँ बसे आय बहु चोरा ॥ अति कठिन करें बरजोरा । मानें नहिं विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ हंकारा ॥ मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करैं उपद्रव नाथा । मरदैं मोहिं जानि अनाथा ॥ मैं एक अमित बटपारा । कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहू नाहिं उबारा । रघुनायक करो सँभारा ॥ कह तुलसिदास

सुन रामा। लूटैं तस्कर तव धामा ॥ चिंता यह मोहिं अपारा। अपयश ना होय तिहारा ॥३६७॥

## राग आसावरी।

लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण बिसार शोच तज जो हरि तुमको भावत ॥ सकल संग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मोसम मंद महा खल पामर कौन जतन तिहिं पावत ॥ हरि निर्मल मन प्रसन हृदय असमंजस मोहिं जनावत। जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत। तिहूं गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव संत यह कह औरन समुझावत। हौं तिनसों हरि परम वैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत। राख शरण उदार चूडामणि तुलसि दास गुणगावत॥३६८॥

## राग कालिंगड़ा।

हम रघुनाथ गुणनके गवैया। ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नहिं जाने ताता थैया ॥ भेरू ध्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया। गीत संगीत प्रबंध त्रिवत जाति इनके नाहिं गढैया ॥ डूम अथाई काल कलाउँत नाहिन भांड भवैया। रतनहरी रघुनाथ भजन विन काहू सों राम रमैया ॥ ३६९ ॥

मैं तो पतित उधारो श्री रामा। मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मैं तो बाबल देघर नंढडी। गलहार हमेल सोहे कंढडी ॥ प्यारे बाझों नहीं जीया मैं ठंढडी। मैंतो बाबल दे घर भोलड़ी ॥ आगे जंज पिछे मेरी डोलड़ी ॥ बाझों नहि मैं सोहदड़ी। हत्थी छल्ले छापां-बाहीं हो चूडीयां। प्यारे बाझों सभी गल्लां हो कूडीयां ॥ लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां। शाहुसैन फिरै जी उतावला। पहली चोट न थींदे चिट्टे हो चावला ॥ कोई ढंग मिलें साई हो रावला ॥ ३७० ॥

## राग आसावरी।

कौन जतन विनती करिये। निज आचरण विचार हार हिय मान

जान डरिये ॥ जिहिं साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये । जाते विपति जाल निशि दिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म वचन परहित कीने तरिये । सो विपरीत देख परसुख विन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसँग सुदृढ धरिये । निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आदरिये ॥ संतत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये । कहो अब नाथ कौन बल ते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाव ते द्रवो तो निस्तरिये । तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पच पच मरिये ॥ ३७१ ॥

## सवैया ।

आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जायँ न जाने ।
जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥
धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने ।
को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने॥३७२॥

## कवित्त ।

जाही हाथ धनुष चढायो है सीतापति जाही हाथ रावण सँहारि लंक जारी है । जाही हाथ तारचो औ उबारचो हाथ हाथी गहि जाही हाथ सिंधु माथ लक्ष्मी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरिवर उठाय गिरिधारी भयो जाही हाथ नंद काज नाथ्यो नाग कारी है । हौं तो अनाथ हाथ जोर कहों दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ महबेकी बारी है ३७३

## राग भैरवी ।

कब ढुरिहो रघुनाथ हमारे । जैसे ढुरे भक्त प्रहलादहिं खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे ॥ जैसे ढुरहे राजा बलिके देत दरश नित नित प्राति द्वारे । जैसे ढुरहे भक्त विभीषण लंका जार सो रावण मारे ॥ जैसे ढुरहे द्रुपदसुता पै खैंचत चीर दुशासन हारे । ऐसे ढुरहो दास तुलसि पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥ ३७४ ॥

## राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै । निशि दिन नाथ देउँ शिख बहु विधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै । होय अनुकूल बिसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशि बासर शिर पद त्रान बजै । तदपि अधम विचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ़ लजै ॥ हौं हारयो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ३७५ ॥

## राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की । परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृपित जान मति घन की । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यों गच कांच विलोकि शेर जड छांह आपने तनकी । टूटत अति आतुर अहार वश क्षति बिसार आननकी ॥ कहँ लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ ३७६ ॥

## राग टोडी ।

और कौन मांगिये को मांगवो निवारि है । तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्म धाम राम काम कोटि रूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सब के द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजै ॥ सेवा विन गुण विहीन दीनता सुनाये । जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचक रुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्रतू चकोर मोहिं कीजिये ॥ ३७७ ॥

## राग जैजैवंती ।

प्रीति की रीति रघुनाथ जाने । जात कुल वरणको नाहिं माने ॥ प्रीति प्रह्लादकी जान करुणानिधी खंभ सों प्रगट नख

उदर भाने । दौड गजराजके फंदको काटने गरुडको छोड आये उलाने ॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सराने । गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोट सी लंक गढ को ढहाने । वैर को भाव उत्साह हरि मिलनको अंतकी बेर अंग में समाने ॥ भक्त भगवंत अंतर निरंतर नहीं यही तो निगम आगम बखाने । दास कान्हर यही रीति रघुनाथ की आपसे भक्तको सरस माने ॥ ३७८ ॥

## राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निवाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया विसराई । रण पर्‍यो बंधु विभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई । तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई । केवट मीत कहत सुख मानत वानर बंधु बडाई ॥ प्रेम कनौडो राम सों प्रभुत्रिभुवन तिहुँ काल न भाई । तेरो ऋणी हौं कह्यो कपि सों ऐसी मानिहै को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई । तौ तोहिं जन्म जाय जननीजड तनु तरुणता गँवाई ॥

## राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूं सों करत नेह सो प्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहँचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु विभीषण

शरण आयो जानि। भरत ज्यों उठ ताहि भेटत देह दशा भुलानि॥ कौन सौम्य सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि। किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि। भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठानि॥ ३८०॥

## राग प्रभाती।

साँचे मनके मीता रघुवर सांचे मनके मीता। कब शवरी काशीको धाई कब पढ़ि आई गीता॥ जूठे फल ताके प्रभु खाये नेक लाज नहिं कीता। लंकापतिको गर्व हरयो है राज्य विभीषण दीता॥ सुग्रीव सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता। सफल यज्ञ मुनि जनके कीने सब भूपन-बल जीता॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता। तुलसिदास प्रभु शुद्धचित्त लख सबहिं मोक्ष पद दीता॥ ३८१॥

## राग सोरठ।

ऐसे राम दीन हितकारी। अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी॥ साधन हीन दीन निज अघ वश शिला भई मुनि नारी। गृह ते गवन परश पद पावन घोर शाप ते तारी॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान बनचारी। भेट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहिं कुलजाति विचारी॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी। सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भय टारी॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रत धारी। जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेद ते न्यारी। जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो वालि सह गारी॥ रिपुको बंधु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी॥ अशुभ होय जिनके सुमिरण ते वानर रीछ विकारी। वेद

विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी । कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ ३८२ ॥

## राग भैरव ।

ऐसी हरि करत दास पर प्रीति । निज प्रभुता बिसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्म की डोरी । सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी माया वश विरंचि शिष नाचत पार न पायो । करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिन सों नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभुवन पति वेद विदित यह लीख । बलि सों कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज मांगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार । अंबरीष हित लाग कृपानिधि सो जनम्यो दश बार ॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहि खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल यम काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी । तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंत करधारी ॥ ३८३ ॥

## राग जैतश्री ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेतु पुनीत परिहर पामरन पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय । मातकी गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहित गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन । जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नम ते शिशुपाल दिन प्रति देत गिन गिन गार । कियो लीन सो आप में हरि राजसभा मँझार ॥ व्याध चरणहिं बाण मारयो मूढ मति मृग जानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज वानि ॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय । प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ३८४ ॥

## राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जग माहीं । विन सेवा जो द्रवै दीन पर राम

सरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गीध शवरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो संपति दशशीश अर्प कर रावण शिव पै लीनी । सो संपदा विभीषणको अति सकुच सहित हरि दीनी । तुलसि दास सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरा । तो भज राम काम सब पूरण करै कृपानिधि तेरो ॥ ३८५ ॥

## राग जंगला ।

ऐसो श्रीरघुबीर भरोसो । वारि न बोर सको प्रहलादहिं पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहुभाँति सतायो हठकर वैर करोसो । मारचो चहै दास नरहरिको आपै दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारण पठयो जहर खरोसो । राम नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा पकरो सो । ऐंचत ऐंचत भुज बलहारे नेक न अँग उघरो सो ॥ ऐसो० ॥ भारत में भरुहीके अंडा कोटिनदल बिखरोसो । राम नाम जब पक्षी टेरचो घंटा टूट परो सो ॥ ऐसो० ॥ जारचो लंक अंजनीनंदन देखत पुर सगरो सो । ताके मध्य विभीषणको गृह राम कृपा उबरो सो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठ कर हरि सुमिरो सो । मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरो सो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास राम को का कर नारि नरो सो । और प्रभाव कहाँ लग वरणों ज्यहि यमराज डरो सो ॥ ऐसो० ॥ ३८६ ॥

रे मन राम भरोसो भारी । पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बांधे पतित छुडाये ऐसे पर उपकारी । सबकी खबर लेत दुख सुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी । मिहरदास प्रभु शरण गहे की राखो लाज हमारी ॥ ३८७ ॥

## राग काफी ।

जानकी नाथ सहाय करैं जब कौन बिगार करै नर तेरो । सूरज मंगल सोम भृगू सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नाहिं गम्यता संग शनीचर होत उचेरो ॥ दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमंतर प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ गये चीरके भार घनेरो । गर्भमें राख्यो परीक्षित राजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारत में भरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो । जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगत में भाग बडेरो ॥ रघुवंशी संतन सुखदाई तुलसिदास चरणको चेरो ॥ ३८८ ॥

## राग बडहंस ।

जगके रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवारेहो । अब देख प्यारे खंभ में नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो।अब देख प्यारे सभा में जहँ कपटके पाँसेपरे॥ द्रौपदीको चीर बढायके खैंचत दुशासन हरेहो ॥ अब देख प्यारे समरमें तैयार दोऊदल खरे ॥ चिगना बचे भरदूलके गज घंट वापर परे हो । अब देख प्यारे लंकमें संकट विभीषणको परे ॥ तुलसी सराहत राम को जिन अवध मंगल भरे हो ॥ ३८९ ॥

## राग झंझोटी ।

अस कछु समुझि परै रघुराया । विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुण भव पार न पावै कोई । निशि गृह मध्य दीपकी बातन तम निविरत नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखै न विपति नशावै ॥ षट रस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै । विन बोले संतोपजनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ जब लग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश मन माहीं । तुलसिदास तब लग जग भरमत सुपनेहुं सुख नाहीं ॥ ३९० ॥

हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृषा सत्य भासे जब लग नहिं कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानिये संसृत नहिं जाय गुसाईं । बिन बांधे निज हठ शठ परवश परचो कीरकी नाईं ॥ सुपने व्याध विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करैं जागे विन पीर न जाई॥श्रुति गुरु साधु स्मृति सम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि बिन तजे भजे विन रघुपति विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै । तुलसिदास मैं मोर गई विन जिय सुख कभूं न पावै ॥ ३९१ ॥

## राग बिलावल ।

केशव कहि न जाय क्या कहिये । देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नाहिं विन तनु लिखा चितेरे । धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे ॥ रवि कर नीर बसे अति दारुण मकर रूप तिहि माहीं । वदन हीन सों ग्रसे चराचर पान करन जे जाहीं ॥ कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै । तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहुँचानै ॥ ३९२ ॥

## राग भैरव ।

राम जप राम जप राम जप बावरे । घोर भव नीर निधि नाम निज नावरे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साधरे । ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे । राम नामहीसे अंत सभहीको काम रे ॥ जग नभ वाटिका रही है फैल फूल रे । धूआं कैसे धौल हैं तू देख मत भूल रे ॥ राम नाम छाँड जो भरोसा करै और रे । तुलसी परोसा त्याग मांगे कूर कौर रे ३९३ ॥

राम नाम जप जिय सदा सानुराग रे । कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥राम नाम सुमिरण सब विधिहीको राजरे । राम को बिसारबो निषध शिरताज रे॥ राम नाम महामणि फणि जग जाल रे । मणि लिये फणि जिये व्याकुल विहाल रे॥राम नाम कामतरु

देत फल चार रे । कहत पुराण वेद पंडित पुकार रे ॥ राम नाम प्रेम परमारथको सार रे । राम नाम तुलसीको जीवन अधार रे ॥६९४॥

## राग जैजैवंती ।

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है । मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साज है ॥ सुपने ज्यों धन पछान काहे पर करत मान बारूकी भीत तैसे वसुधा को राज है । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आज है ॥ ३९५ ॥

## राग भैरव ।

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको । संवरनिसंवरको सखा असहायको ॥ भाग है अभागेहूंको गुण गुणहीनको । गाहक गरीबको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो जो वेद साख है । पांगुरेको हाथ पांव आंधरेको आंख है ॥ माई बाप भूखे को अधार निराधारको । सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन रामनाम सों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसों ऊसरो ॥ ३९६ ॥

## राग पहाड ।

सब मतको मत यह उपदेशू । मूल मंत्र यह उचित शिखावन भज मन सुत अवधेशू ॥ अहिपुर नरपुर देवलोक पुर रंक फकीर नरेशू । जो जापक सिय रामनामको सो भवसिंधु तरेसू ॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू । तुलहिं न सीता राम नाम सम वेद पुराण कहेसू ॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू । यह सब गावत नाम महातम काग भुशुंडि खगेशू ॥ नाम प्रतीत राख हिरदे में उमा सों कह्यो महेशू । तुलसिदास यह नाम कि महिमा कलिमल सकल हरेसू ॥ ३९७ ॥

## राग कालिंगडा ।

राम सुमिरले सुमिरन करले को जाने कल की । खबर ना या

जगमें पलकी ॥ रैनि अँधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी । धीरे धीरे पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी ॥ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर नातां छलकी । शिर पर गठरी धरी पापकी कौनकरै हलकी ॥ भवसागरके त्रास कठिन हैं थाहि नहीं जलकी । धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो काया मंडल की।भज भगवान आन नहिं कोईआशा रघुबरकी३९८॥

## राग धनाश्री ।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई । राम नाम सुमरन बिन बूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई । इन में कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने । तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने । शूकर कूकर योनि भ्रम्यो तऊ लाज न आई । राम नाम छाँड अमृत काहे विष खाई । तज भर्म कर्म विधि निषेध राम नाम लेही । गुरु प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही ॥ ३९९ ॥

## राग भैरव ।

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै । शंकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैवट छाजै ॥ श्यामचरण पद पीठ अरुण तल लसत विशद नखश्रेनी । जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चलि ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुज सुंदर भँवर तरंग विलासा । मज्जहिं सुरसज्जन मुनिजन मन मुदित मनोहर बासा ॥ विन विराग जप याग योग व्रत विन तीरथ तनुत्यागे । सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ ४०० ॥

## राग विभास ।

भज मन रामचरण सुखदाई । जिहि चरणन से निकसि सुरसरी शंकर जटा समाई ॥ जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई । जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लव-लाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई । सोई

चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषिनारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृग सँग धाई । कपि सुग्रीव बंधु भय ब्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुत सुतकी प्रभु निज मुख करत बडाई ॥ ४०१

## राग परज ।

भज मन रामचरण दिन राती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशि दिन भजन करत अलसाती ॥ विरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिन राती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ संवत सोरासौ इकतीसा जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत है प्रथम अरजकी पाती ॥ ४०२ ॥

रे मन क्यों न भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भंजनजनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू तीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चंचल चित हो वीर । मंद मंद मुसकात सखन सों बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निंदत कर कमलन धनु तीर।रामदास रघुनाथ भजन विन धृग धृग जन्म शरीर॥

## राग सोरठ ।

रे मन राम सों कर प्रीत । श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत । काल ब्याल ज्यों परचो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि तोहिं ग्रसिहै समझ राखो चीत । कहै नानक राम भजले जात औसर वीत ॥ ४०४ ॥

## राग धनाश्री ।

सुन मन मूढ शिखावन मेरो । हरिपद विमुख काहू न लह्यो

सुख शठ यह समझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयनन ते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमत निशि दिवस गगन में तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँ पुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहबो ताहू केरो ॥ छुटै न विपति भजे विन रघुपति श्रुति संदेह निवेरो । तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

## राग ललित ।

गाले रे गोबिंद गुणारे । ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछता वेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूंद से पिंड प्रगट कियो नयन नाशिका मुख रसना रे । ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरचो एक छिना रे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहु रूप बना रे । वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे । ना माने तो साख बताऊं अजामील गणिका सधना रे ॥ धन यौबन अंजलिको जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे । जो सुख चहै भजे रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

## राग भैरव ।

जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी । देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहे संसृत संताप रे । बूडचो मृग बारि खायो जेवरीके सांप रे ॥ कहै वेद बुध तूतो बूझ मन माहिं रे । दोष दुख सुपनेके जागे ही पै जाहिं रे ॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूं ताप रे । राम नाम शुच रुच सहज स्वभाव रे ॥ ४०७ ॥

## राग प्रभाती ।

क्यों सोया गफलतका माता जागो रे नर जाग रे ॥ या जागे कोइ योगी भोगी या जागे कोइ चोररे । या जागे कोइ संत पियारा लगी राम सों डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे । ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरे सोइ

हंस कहावे कामी क्रोधी कागरे । तनु का चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुकी सरां बिच तू कीता अनुराग रे । रैनि बसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे ॥ साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे । नितानंद भज राम गुमानी जागन पूरण भागरे ॥ ४०८ ॥

## राग देश ।

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करैं भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिये । हर होनी अन होनी करदे सो सब शिरपर सहिये ॥ करे कृपा हरि नाम जपावे सो अंतर ले गहिये । मिहरदास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये ॥ ४०९ ॥

## राग पूरवी ।

अपनी ओर निबाहिये वाकी वाहू जाने । भली बुरी कछु जानत नाहीं कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ ४१० ॥

## राग सोरठ ।

जाको प्रिय न राम वैदेही । सो छाँडिये कोटि वैरी सम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत महतारी । बलि गुरु ब्रजवनितन पति त्यागे भईं जग मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मानियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं । आंजन कहा आंख जिहिं फूटे बहुतो कहों कहांलौं ॥ तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद सोइ है हितू हमारो ॥४११॥

## राग मलार ।

जाको लगन रामकी नाहीं । सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सब हीके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई । विन हरि भजन इंद्रायनके फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ ४१२ ॥

## राग केदारो ।

ऐसे जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरणबिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत बदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कभूं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवे को अमित जतन उर आने । तुलसी चित चिंता न मिटै विन चिंतामणि पहिंचाने ॥ ४१३ ॥

## राग भैरव ।

मोह जनित मल लाग विविध विध कोटों जतन न जाई । जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिंदा सुन श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये । सब प्रकार मल भार लाग निज नाथ चरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धि हेतु श्रुति गावे । रामचरण अनुराग नीर विन मल अति नाश न पावे ॥ ४१४ ॥

## राग धनाश्री ।

मेरी प्रीति गोविंद सों ना घटे । मैं तो मोल महँगे लीया जी सटे ॥ चित्त सुमरण करूं नयन अवलोकनो श्रवण वाणी सुयश पूर राखूं । मन सुमधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसन अमृत राम नाम भाखूं । साधु संगति विना भाव नहिं ऊपजे भाव विन भक्ति नहिं होय तेरी । कहत रामदास इक वीनती प्रभु सों पैज राखो राजा राम मेरी ॥ ४१५ ॥

## राग पीलो ।

सिया राम विना बीते जात दिना । धन जोबन और सुख संपदा रैनि का सुपना ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरो कोउ नहीं अपना । कहत कवीर सुनो भाई साधो झूठे मित्र घना ॥ ४१६ ॥

## राग भैरव।

राम कृष्ण उठ कहिये भोर । यह अवधेश वही ब्रज जीवन यह धनुष धरन वह माखन चोर ॥ इनके चमर छत्र शिर सोहै उनके लकुट मुकुट कर जोर । इन सँग भरत शत्रुहन लछिमन बलदाऊ सँग नंद किशोर ॥ इन सँग जनक लली अति सोहै उत राधा सँग करत कलोर । इन सागर में शिला तरायो उन गोवर्द्धन नखकी कोर ॥ इन मारचो लंकापति रावण उन मारचो कंसा बरजोर। तुलसीके यह दोऊ जीवन दशरथ सुत अरु नंद किशोर ॥ ४१७ ॥

## राग गौरी

श्री रामचंद्र कृपालु भज मन हरन भव भय दारुणं । नव कंज लोचन कंज मुख करकंज पदकंजारुणं ॥ कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुंदरं । पट पीत मानो तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥ भज दीनवंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनं । रघुनंद आनँद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनं ॥ शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं । आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥ इमि वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं । मम ह्रदय कंज निवास कर कामादि खल दल गंजनं ॥ ४१८ ॥

छंद–नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोप्रमेय वैभवं ।
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भंजनं ॥
मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं ।
विशुद्ध बोध विग्रहम् समस्त दूषणापहं ॥

नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतांगतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल जे नरा भजंति हीन मत्सरा ।
पतंतिनो भवार्णवे वितर्क बीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनो यदा भजंति मुक्तिदं मुदा ।
निरुध्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुंच शाश्वतं तुरीय मेव केवलं ॥
भजामि भाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं नतोह मुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहिमे ॥
पठंतियेस्तवं इदं नरादरेण ते पदम् ॥
व्रजंति नात्र संशयः त्वदीय भक्ति संयुताः ॥ ४१९ ॥

## अथ चेतावनी सामयिक.

### सवैया ।

पूरण ब्रह्म बताय दियो जिन एक अखंड है व्यापक सारे ॥
रागरु द्वेष करे अब कौन सों जोई है मूल सोई सब डारे ॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्त्व विचार कह्यो निरधारे ॥
सुंदर शुद्ध किये मल धोयके वा गुरुको उरध्यान हमारे ॥ ४२० ॥

### कवित्त ।

काहू सों न रोष तोष काहू सों न राग दोष काहू सों न वैर भाव काहू की न घात है ॥ काहू सों न बकवाद काहू सों नहीं विषाद काहू सों न संग नातो कोऊ पक्षपात है ॥ काहू सों न दुष्ट वैन काहू सों न लैन दैन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है ॥ सुंदर कहत सोई ईशनको महाईश सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै ॥४२१ ॥

लोह कू ज्यों पारस पपाण हूं पलट लेत कंचन छुवत होय जग में प्रमानिये ॥ द्रुमको ज्यों चंदन हू पलट लगाय बास आपके

समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीटको ज्यों भृंगहू पलटके करत भृंग सोऊ उड़जाय ताको अचरज न मानिये ॥ सुंदर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात शुद्ध शीख पलटै सो सतगुरु जानिये ॥ ४२२ ॥

गुरु बिन ज्ञान नांहि गुरु बिन ध्यान नांहि गुरु बिन आतम विचार न लहत्व है । गुरु बिन प्रेम नांहि गुरु बिन प्रीति नांहि गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत्व है ॥ गुरु बिन वास नांहि बुद्धिको प्रकाश नांहि भ्रम हूं को नाश नांहि संशय ही रहत्व है । गुरु बिन बाट नांहि कौड़ी बिन हाट नांहि सुंदर प्रगट लोक वेद यों कहत्वहै॥

कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊदेत राज साज देव ऋषि मुन्योहै । कोऊ देत यश मान कोऊ देत रस आन कोऊ देत विद्याज्ञान जगत में गुन्योहै ॥ कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निद्धि कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्योहै । सुंदर कहत एक दीयो जिन राम नाम गुरु सों उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है ॥

भूमिहूकी रेणुकी तो संख्या कोऊ कहतहै भार हूं अठारह द्रुम तिनके जो पात हैं । मेघन की संख्या सोऊ ऋषिन विचार कही बूंदन की संख्या तेऊ आयके बिलात हैं ॥ तारनकी संख्या सोऊ कहीहै पुराण मांहि रोमन की संख्या पुनि जितनेक गात हैं ॥ सुंदर जहां लौं जंतु सबहीको आवै अंत गुरुके अनंत गुण कापै कहे जात हैं

गोविंदके किये जीव जातहैं रसातलको गुरु उपदेशे सोतो छूटैं यमफंदते ॥ गोविंदके किये जीव वश परें कर्मनके गुरुके निवाज सूं तो फिरत स्वच्छंद ते ॥ गोविंदके किये जीव बूडत भवसागर में सुंदर कहत गुरु काढे दुख द्वंद ते ॥ औरहूं कहांलौं कछु मुखते कहूं बनाय गुरुकी तो महिमा है अधिक गोविंद ते॥४२६॥

जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत बुद्धि में विचार कर बहु अभिलाषिये ॥ चिन्तामणि पारस हूं कल्पतरु कामधेनु औरहूं अनेक निधि वारि वारि नाखिये॥ तातै मन वच कर्म कारि कर जोर कहूं सुंदर चरण शीशमेल दीनभाषिये ॥ बहुत प्रकार तीनों लोक सब शोधे हम ऐसी कौन भेट गुरुदेव आगे राखिये ॥ ४२७ ॥

कानके गयेते कहा कान ऐसे होत मूढ़ नयनके गयेते कहा नयन ऐसे पाइये ॥ नासिका गयेते कहा नासिका सुगंध लेत मुखके गयेते ऐसे मुख कहा गाइये ॥ हाथके गयेते कहा हाथ ऐसो काम होत पांवके गयेते ऐसे पांव कित धाइये ॥ याहीते विचार देख सुंदर कहत तोहिं देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये ॥ ४२८ ॥

बार बार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय ममताकी पोट शिर काहेको धरत है। मेरो धन मेरो धाम मेरे सुत मेरी बाम मेरे पशु मेरो ग्राम भूल्यो यों फिरत है ॥ तूतो भयो बावरो बिकाय गई बुद्धि तेरी ऐसो अंध कूप गृह तामें तू परत है ॥ सुंदर कहत तोहिं नेकहूं न आवे लाज काज कूं बिगारके अकाज क्यों करतहै४२९

बैरी घर माहिं तेरे जानत सनेही मेरे दारा सुत वित्त तेरो खोस खोस खायँगे। औरहू कुटुंब लोग लूटें चहूं ओरहीसे मीठी मीठी बात कर तोसों लपटायँगे ॥ संकट परेगो जब कोऊ नहीं तेरो तब अंतही कठिन वाकी बेर उठ जायँगे ॥ सुंदर कहत ताते झूठोही प्रपंच सब सुपनेकी नाईं सब देखत बिलायँगे ॥ ४३० ॥

श्रवण लै जाय कर नादकी ले डारें फाँस नयन वाले जाय कर रूप वश कर्योहै ॥ नासिका लैजाय कर बहुत सुँघावै गंध रसन लैजाय कर स्वाद मन हर्योहै ॥ चर्म लैजाय कर नारी सों सपर्श करै सुंदर कोऊक साध ठगन सों डर्योहै ॥ काम ठग क्रोध ठग लोभ ठग मोह ठग ठगनकी नगरी में जीव आय पर्योहै ॥ ४३१ ॥

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन भीगत ही गर जात माटी कोसो डेलहै ॥ मुक्तिके दुआरे आय सावधान क्यों न होय बार बार चढत न त्रियाको सों तेलहै ॥ करले सुकृत हरि भजन अखंड नर याही में अंतर परै यामें ब्रह्म मेल है ॥ मनुष जनम यह जीत भावै हार अब सुंदर कहत यामें जूवाको सों खेल है ॥ ४३२ ॥

## सवैया।

इंद्रिनको सुख मानत है शठ याहिते तू बहुते दुख पावै ॥

ज्यों जल में झख मांस है लीलत स्वाद बँध्यो जल बाहिर आवे ॥
ज्यों कपि मूठ न छांडत है रसना वश बंध परचो विललावे ॥
सुंदर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुर खाय सो कानछिदावे॥४३३॥

देखतके नर दीखत हैं पर लक्षण तो पशुके सबही हैं ॥
बोलत चालत पीवत खात सुवे घर वे बन जात सही हैं ॥
प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित भारवही हैं ॥
और तो लक्षण आय मिले सब एक कमी शिर शृंग नहीं हैं॥४३४॥

पेट ते बाहिर होतही बालक आयके मात पयोधर पीनो ॥
मोह बँध्यो दिनही दिन ऐसे औ तरुण भयो त्रियके रस भीनो॥
पुत्र प्रपौत्र बँध्यो परिवार सो ऐसेही भाँति गये पन तीनो ॥
सुन्दर राम को नाम बिसारके आपहि आपको बंधन कीनो॥४३५॥

## कबित्त ।

दुनिया को दौरताहै औरतको लोरताहै औजूद को मोरताहै बटोई सराय का ॥ मुरगीको मोसताहै बकरीको रोसताहै गरीब को खोसताहै बेमहर गायका ॥ जुलमको करताहै मालक सों न डरताहै दोजखको भरताहै खजाना बलाय का ॥ होयगा हिसाब तब आवेगा न ज्वाब कछू सुंदर कहत गुनहगार है खुदाय का ॥ ४३६ ॥

## सवैया ।

ये मेरे देश विलायत हैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती ॥
ये मेरे मात पिता पुनि बंधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती ॥
ये मेरी कामिनी केलि करै नित ये मेरे सेवक हैं दिन राती ॥
सुंदर वैसेहि छांडि गयो सब तेल जरचो सो बुझी जब बाती॥४३७॥

कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है॥
कै यह देह जमीं में खाद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है ॥
कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है ॥
सुंदर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है४३८

तू कछु और विचारतहै नर तेरो विचार धरचो ही रहैगो ॥
कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोही लहैगो ॥
भोर कि सांझ घरी पल मांझ सो काल अचानक आय गहैगो ॥
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुंदर यों पछिताय रहैगो ॥४३९॥
बीत गये पिछले सबही दिन आवत है अगले दिन नेरे ॥
काल महा बलवंत बडो रिपु साधि रह्यो शर ऊपर तेरे ॥
एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे ॥
सुंदर संत पुकार कहैं सब हौं पुनि तोहिं कहों अब टेरे ॥४४०॥
सोय रह्यो कह गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर काल दहारे ॥
धामस धूमस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोहिं पछारे ॥
ज्यों वनमें मृग कूदत फांदत चित्र गले नख सों उरफारे ॥
सुंदर काल डरे जाके डर ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारे ॥४४१॥
मात पिता युवती सुत बंधव आय मिल्यो इनसे सनबंधा ॥
स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिन अंधा ॥
कर्म अकर्म करै तिनके हित भार धरे नित आपने कंधा ॥
अंत विछोहभयो सबसों पुनि याहीते सुंदर है जगधंधा ॥ ४४२ ॥

## कवित्त ।

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन माल मैं तो बहु विध भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हुकम कोऊ मेटै नाहि मेरी युवती कूं मैं तो अधिक पियारो हूं ॥ मेरो वंश ऊंचो मेरे बाप दादा ऐसे भये करत बडाई मैंतो जगत उजारो हूं ॥ सुंदर कहत मेरो मेरो कर जाने शठ ऐसे नहीं जाने मैंतो कालहीको चारो हूं ॥ ४४३ ॥

देहतो स्वरूप तोलौं जौलौं है अरूप माहिं सब कोऊ आदर करत सनमान है ॥ टेढ़ी पाग बांध बार बार ही मरोरै मूंछ बाहूं उसकारे अति धरत गुमान है ॥ देश देशहीके लोक आयके हजूर होय बैठ कर तखत कहावै सुलतान है ॥ सुंदर कहत जब चेतना शकति गई वही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ ४४४ ॥

## सवैया ।

नयननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जुगई है ॥
याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई तब रात भई है ॥
आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु और ठई है ॥
सुंदर ऐसेहि आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है ॥ ४४५ ॥
जो दश बीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगैगी ॥
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथ्वीपति होन कि चाह जगैगी ॥
स्वर्ग पतालको राज्य करों तृष्णा अधिकी अति आग लगैगी ॥
सुंदर एक सँतोष बिना शठ तेरी तो भूख कभी न भगैगी ॥ ४४६॥
काहेको दौरतहै दशहू दिशि तू नर देख कियो हरिजू को ॥
बैठ रहै दुरके मुख मूंद उघारके दंत खवायहै टूको ॥
गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको ॥
सुंदर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदय विसवास प्रभू को॥४४७॥
भाजन आप गढ़्यो जिनने भरि है भरि है भरि है भरि है जू ॥
गावतहै जिनके गुणको ढरि है ढरि है ढरि है ढरि है जू ॥
आदि हू अंत हू मध्य सदा हरि है हरि है हरि है हरि है जू ॥
सुंदरपास सहाय सही करि है करि है करि है करि है जू ॥ ४४८ ॥

## कबित ।

या शरीर माहिं तू अनेक सुख मान रह्यो ताहि तू विचार यामें कौन बात भली है ॥ मेद मज्जा मांस रग रगन में रक्त भर्‌यो पेट हू पिटारा सीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाडनसों मुख भर्‌यो हाडन के नयन नाक हाथ पांव सोऊ सब हाडन की नली है ॥ सुंदर कहत याहि देख जिन भूले कोय भीतर भँगार भरी ऊपर ते कली है४४९

कामिनीको अंग अति मलीन महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं ॥ हाड मांस मज्जा मेद चाम सों लपेट राखे ठौर ठौर रकत के भरे ही भँडार हैं ॥ मूत्र हूं पुरीष आँत एक मेक मिल रही औरहू उदर माहि विविध विकार हैं ॥ सुंदर कहत नारी नख शिख निंदा रूप ताहि जो सराहैं सोतो बड़ेही गँवार हैं ॥ ४५० ॥

## सवैया ।

सर्प डसे सुनहीं कछु तालुक बीछू लग सुभलो कर मानो ॥
सिंह हूँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो ॥
आग जरो जल बूड मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो ॥
सुंदर और भले सबही दुख दुर्जन संग भलो जिन जानो ॥ ४५१ ॥

## कवित्त ।

अपने न दोष देखे परके अगुण पेखे दुष्टको सुभाव उठि निंद्याई करतहै ॥ जैसे कोऊ महल सँवार राख्यो नीके कर कीरी तहां जाय छिद्र ढूंढत फिरत है ॥ भोर हीं ते सांझ लग सांझ हीते भोर लग सुंदर कहत दिन ऐसेही भरत है ॥ पांव के तरेकी नहीं सूझे आग मूरखको और सों कहत शिर ऊपर बरतहै ॥ ४५२ ॥

देखबेको दौरे तो अटक जाय वाहीं ओर सुनबे को दौरे तो रसिक शिरताज है ॥ सूंघवे को दौरे तो अघाय न सुगंध कर खायवे को दौरे तो न धीपे महराज है ॥ भोग हीको दौरे तो नृपति हू न क्यों ही होय सुंदर कहत याहि नेकहू न लाजहै ॥ काहूको न कह्यो करे आपनीही टेक धरै मन सों न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है ॥४५३॥

## सवैया ।

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा ॥
जो मन काहू सों क्रोध करे तब क्रोध मयी होय जाय तद्रूपा ॥
जो मन मायाही माया रटे नित तो मन बूडत मायाके कूपा ॥
सुंदर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है ब्रह्म स्वरूपा ॥४५४॥

## कवित्त ।

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत मनहीको भ्रम गयो जगत बिलात है ॥ मनही के भ्रम जेवरी में उपजत सांप मनके विचारे सांप जेवरी समात है ॥ मन हीके भ्रमते मरीचिका को जल कहें मनहीके भ्रम सीप रूपा सा दिखात है ॥ सुंदर सकल यह दीखे मनहीको भ्रम मनहीके भ्रम गये ब्रह्म होय जातहै ॥ ४५५ ॥

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं तिनके तो वचन सुहात कहि कौन को ॥ कोकिलारु सारिका पुनि सुवा जब बोलत हैं सब कोऊ कान दै सुनत रवधौन को ॥ ताहि तैसो वचन विवेक कर बोलियत योहीं आक वाक बक तोरिये न पौन को ॥ सुंदर समझकर षचन उचार करो नहीं तौ समझकर बैठो गहि मौन को ॥

## सवैया ।

कोउक निंदत कोउक वंदत कोउक देत हैं आयके भक्षण ॥ कोउक आय लगावत चंदन कोउक डारत धूरि ततक्षण ॥ कोउ कहै यह मूरख दीसत कोऊ कहै यह आय विचक्षण ॥ सुंदर काहू सों राग न द्वेष सो ये सब जानहु साधुके लक्षण ॥ ४५७ ॥

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई ॥ राज मिलै गज बाज मिलै सब साज मिलै मन बांछित पाई ॥ लोक मिलै सुरलोक मिलै विधि लोक मिलै बैकुंठ हूं जाई ॥ सुंदर और मिलै सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाई ॥ ४५८ ॥

## कवित्त ।

देवहूं भयेते कहा इंद्रहूं भयेते कहा विधि हूके लोक ते बहुरि आइयत है ॥ मानुष भयेते कहा भूपति भयेते कहा द्विजहूं भये ते कहा पार जाइयत है ॥ पशु हूं भयेते कहा पक्षी हूं भये ते कहा पन्नग भये ते कहा क्यों अघाइयत है ॥ छूटबे को सुंदर उपाय एक साधु संग जिनकी कृपा ते अति सुख पाइयतहै ॥ ४५९ ॥

इंद्राणी शृंगार कर चंदन लगायो अंग ताहि देख इंद्र अति काम वश भयोहै ॥ शूकरी हूं कदम के चहिल में लोट कर आगे जाय शूकर को मन हर लियो है ॥ तैसो सुख शूकर को तैसो सुख मघवाको तैसो सुख नर पशु पक्षी हूँ को दियोहै ॥ सुंदर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख सोई साधु जगत में जीत कर गयोहै ४६०

## सवैया ।

मूयेते मोक्ष कहैं सब पंडित मूयेते मोक्ष कहैं पुनि जैना ॥ मूयेते

मोक्ष कहैं ऋषि तापस मूयेते मोक्ष कहैं शिव सैना ॥ मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहै तेहूं धोखे हि धोखे बखानत बैना ॥ सुंदर आतम को अनुभव सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥ ४६१ ॥

## कवित्त ।

सोम नाम विप्र वर गिरिजाके बरकर लीनो सुधा फलकर दीनो नरनाह के ॥ भूपति स्वपतनीको रानी निज मीत हीको ताने दीनो गीतर्कीको नीको फल चाह के ॥ आगे गणिका सरामे धरापति आगे धरा धरानाथ माथ धुना सुना धुना ताहि के ॥ हाहा कामिनीके हित हते काम नीके अब ताहि तजों ताहि भजों शीश शशी जाहि के ॥ ४६२ ॥

## सवैया ।

जिनको नित मैं चितमों चितमों तिनकी रति मोतन माहिं रतीना ॥
वह आन पुमानके संग रती पुनि ता मन में गणिका गृह कीना ॥
धृग है अबला भृत कंदर्पहिं अरु मोहिं धिकार जो मार अधीना ॥
इत रीत समूह की प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना४६३

## कवित्त ।

ग्रंथनके ज्ञाते माते मत्सर कीच बीच धरा नाथ मद साथ भरे दरशात हैं ॥ दूषण चमोर मोरे भूषण से भाषणको पंडित भूपाल तो न सुनें मोरी बात हैं ॥ पुनः आन जंतु जेते दुखी दीन मूढ तेते मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाषे राखे हवन को राखे तैसे जीरण मो गात में सुबात होत जात हैं ॥४६४॥

## सवैया ।

शांत निजांत्र किं न गहे कत डोलै वृथा भव मों सपना ॥
होय यथा सुतथा निज ह्वै तुमते अनथा वह होवत ना ॥
प्रीति न साथ वितीत भली कछु हाथ मिली ना यथा स्वपना ॥
मान गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥ ४६५ ॥
भावी के भाव अभाव यथा न रमो तिनमों नभ के सुमना ॥

मध्य के भोग के मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥
ब्रह्म नपुंसक मों मन तूं विन ता तव दंपति मों सुख ना ॥
टेरत मैं प्रति फेर तुमें तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

## कवित्त ।

इंद्रियोंके भोग सारे भारे रोग देन वारे ताको कीजै हेय मत श्रेय पथ तजरे ॥ पाप अद्रि नाशनको वज्र पाकशासनको दाहे दोष घासनको मोक्ष शिखी सजरे ॥ हूजो शांत भव बीच प्रापत कदापि नीच आपनी कलोल लोल गत ते न लज रे ॥ क्षणभंग भव राग ताको मन करो त्याग मोष को वैराग सहकारी तास भजरे४६७॥

प्रवार के सनेहके निवार देह मन बीच बीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुनः दीप्तागनमें नागन में नदी वेग माहिं जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देव नदी तीरकी पवित्र धरा पर बैठ नीलकंठ माहिं नीठ उतकंठा ठानिये ॥ अब ऐसी रीत करो भोगन की प्रीत हरो गुरु वेद वाक्य धरो तीन ताप हानिये ॥ ४६८ ॥

भूमि सेज मूल फल मेव नष बलकल करने न परें देव आगे रचधरेहैं ॥ करो इन्हें साथ रति प्यारी प्रेम वारी मति उठो उठो तामें अब जामें बिब ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ मन बोल कटु जाके चित चिता आम कर सदा जरे हैं ॥ ऐसे धनवाननके नाम मात्र कानन में जाहिं महाकामिन में कबौं नाहिं परे हैं ॥४६९॥

दीप में पतंग परे जरे न प्रताप जाने मीनसअज्ञाने भषे कुंडी मिले मास को ॥ गज मजी हेत परो खात खात अंकुश को राग में कुरंग राग करे निज नास को ॥ पंकजकी गंध बीच नीच भृंग मीच सहे इत्यादि अज्ञनास करें निज सास को ॥ अहो हा सघन महा मोह को प्रताप लहा शुभाशुभ जानों पे न हानो भोग आसको

## सवैया ।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥
के चित मोसम नीचनके चित मों बहु मान मदादिक धारे ॥

शून्य यथा मठ साधनको अति मोषको साधन दोष प्रहारे ॥
सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाम समारे ॥ ४७१ ॥

## कवित्त ।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर बशते न मित्रनसे नशते मरयाद आदि दिन में ॥ कौन भेद भोगनके भेद में न तजै जन एकको वियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावैं तब मनको तपावैं भारी मोषै तिनैं आप ताप मोषै तिनै छिन में ॥ ऐसे मोष प्रतिबंधी विषै लखे मैं संबंधी को कुभागी विना मैं जो रागी होत इन में ४७२

जाहि मात पिता ते मैं भयो उत्पति तेतो काल वशभये चिर काल बीत गयो है ॥ सम वैस वारे द्वारे सुमरत सिधारे सारे रहे हम शेष देह वृद्ध वेष लयोहै ॥ नदी रेत तीर पर तरु यों शरीर भयो प्रति दिन मृत तीर तीर अब अयो है ॥ गिले काल व्याल सैम मेढक के अजे हम भजे भोग मच्छरको मोसों मूढ जयोहै४७३॥

जाके बामें दाहिने सुमंत चक्र होते अग्र राजनकी सभा थी मयंक मुखी नारियां ॥ भूपनके पुत्र थे विचित्र वीर अहंकारी वृंद बंदीजन होते वंशके उचारियां ॥ अहो भाई भारो कष्टभारी भूप भये नष्ट सुमरत पदे प्रविष्ट जाकी कथा भरियां ॥ हिंसक प्रपंच सब रंचको असंग पुना ताहि काल वीरको जुहार बार बारियां ॥ ४७४ ॥

गंगतीरपर हिमगिरि शिलापर हम बांधे पद्मासनको मन इंद्रिय जीतके ॥ ब्रह्मके ध्यानकी अभ्यास विध सों निवास योगनिद्रा माहिं करों हरों ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करें शृंगो संग कंडू प्रोंहि सुख सों अभीत मोको जाने सम भीत के ॥ पार्वती नाथ मैं अनाथके अभीत वारे उत्तम दिहारे कब आवैं ऐसी रीतके ४७५॥

काशी गंगाके किनारे भवते किनारे होय कदों बसों वसन कौपीन एक धारके ॥ दोऊ हाथ जोर कर नाय माथ नमोंकरों मृदुवाणी साथ ररों नाम समरार के ॥ भो प्रभो भवानी बर शंकर त्रिनेत्र हर त्रिपुरारी चंद्रधर भव भवहारके ॥ क्षण सम दिन सब मोरे बीत जावैं जब ऐसे अह आवैं कब कहो कृपाधारके ॥ ७६६ ॥

रुचत सुमेर मों न आवै कहूं काम जो न निज गौरता मैं सोना सदा गलतान है ॥ जीवजे संतोष कर त्रिपत सदीव तर ताको शेष न अनंद रह्यो कछु आन है ॥ पुना जेई आन जन धन लोभ कर मन व्याकुल हैं जाके ताकी तृष्णा महान है ॥ कौनके निमित्त ऐसी संपदा अमित्त रची इत विध करके न विधि बुधवान है ॥ ४७७ ॥

हिंसा नाहिं करें परद्रव्य को न हरें सत्य वचन उचरें पुण्य समय पुण्य कर हैं ॥ यथा वितकथा पर नारोंकी न सुनें भनें ताते गुंग बोला बने भोला सम चरहैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भंग गुरों विषे नम्र अंग मित्र भाव सब संग करें हरें हर हैं ॥ गायो सर्व ग्रंथन में संत ऐसे पंथन में राग दोष मोष चरें जैसे दिनकर हैं ॥ ४७८ ॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी कभी भिक्षाग्रास कभी व्यंजन अहार है ॥ कभी शत खंडवती गोदरीको ओढें यती कंबरको कबहूं दिगंबरको धार है ॥ कभी भानकर तपे कभी शीश छत्र दिपे कहूं सतकार होत कहूं त्रिसकारहै ॥ तदापि न संत जन सुखी दुखी होत मन आत्मा असंग लखैं देहको विहार है४७९

देव एक महादेवनदी देवनदी सेव गिरि गुहा धाम एव चीर दिशा चारहै ॥ एव कालमीत नीको व्रत निरदीनताको संग बुध युवतीको प्रिय बटु डार है ॥ सुता निरवैरता कुमार ब्रह्मको विचार और कहा भनों जाको बन्यों या अचार है ॥ ऐसे सदाचार परवार कर जोऊ नर सदा परवारो सदा ताहिको जुहार है ॥ ४८० ॥

शुचि वनके निवासी मृगों संग हासी खेल मेल दासदासीको नमे धफल आसी है ॥ कभी प्रत नदी तट कभी समसाने मठ कबहूं पषाण बट तरु तरे बासीहै ॥ केवल प्रशांत मन तुल्य आयतनबन तदपि एकांत घन बासी सुखरासी है ॥ ईशके उपासीकी प्रकाशी या विभूति ताहि गावे सुनै ध्यावै नाहिं पावै यम फांसीहै ॥ ४८१ ॥

तजे दुराराध्य स्वामी कृपण कुमगगामी वजावत चल चित भूपनके भानिये ॥ ताते मैं स्थूल चाह पूरीहोत नाहिं ताते लायो मन

ताहिं माहिं पद जो महानिये ॥ जरा हरे काय हरे काल समुदाय प्राण ताते तप करो सखे विदुषों बखानिये । तप विना आन मम श्रेयको न मध्य जग तप नाम चित्तकी एकाग्रताको जानिये ॥

## सवैया ।

शुचि गंग तरंगकी बूंद कनीकर शीतल चारु हिमंचलकी सिल॥
जिहिं फूल फलान उपान धरे शिवको नित सेवत देववधू मिल ॥
परभोजन में निज जो जनदे दिल ता गिरको कतकाल लयो गिल॥
अपमानसही अपमानसही विद धीर सही नृपधाम अही विल ॥
प्रति कानन विरछन ते मन बाछत लाभ सुखेन फलादि अपारा ॥
सरिताके स्थान स्थान विषे शुचि शीतलमिष्ठ मिले बहु बारा ॥
जल पत्रवती मृदु सापर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा ॥
सटके मतिमान महा भटके मतिमान तहां कत होत खुवारा४८४॥

## कवित्त ।

कंदरा ते कंदमूल कहां निरमूल भये वार वारे नग किधों देतहैं न वन को ॥ मीठे फलों वारी डारी तरों की न फल देत कैधों द्रुम देत हैं न वलकल जन को ॥ दुख सों मनाक धन साधके मदांध भय मद व्यार साथ जो भ्रमावैं भूल तनको ॥ खलोंके कुमुखोंको सबल सुपुर्ष पेखे अहो कैसे तजे ऐसे चिंतामनवन को ॥ ४८५ ॥

तुंग भोग इंद्रलोक सत्त लोक लग जेते तेतेही तरंग सम भंग पहिचानोरे ॥ जीवनके जीवनेकी रास एक सास सोऊ दामिनी समान क्षण माहिं हानि जानोरे ॥ जोबनको सुख थोरे दिनमें विमुख होरे मीतनकी प्रीति पुनि नीति न पछानोरे ॥ सकल संसारको विचारके असार तजो बोध हेत बुद्धिमानो मेरी बुद्धिमानो रे४८६ ॥

माँस ग्रंथि कुचन को कंचनके कुंभ कहें सोम सम मुख कफधाम को उचारे हैं ॥ चंपाकलीके समाने दाडिमके दाने भाने हाडन की दांत पांत को दिवाने सारे हैं ॥ मूत्र भिगी जंघन की संघनी बडाई भन निंदत गजिंद कर केला को निवारे हैं ॥ अहो निंद योग रूप अंगनाको ताकी ऊप धुनें मतवारे शीश धुनें मतिवारे हैं ॥ ४८७ ॥

जरा कर श्वेत बार नरोंके निहार नार करे ताहि त्रिसकार भागे फेर नारको ॥ हाड घटी रजु नार मंदर सहेर डार विप्र नार वृद्ध रूप कूप चमिआरको ॥ दाहे तीन ताप भान नैन बैन ज्ञान कान तजे ताहि मान आदि यों उदार दार को ॥ अहो कष्ट जीव दुष्ट तजे न अनिष्ट अजे नारी तजे तन भजे मन अजे नारको ॥ ४८८ ॥

आननकी छबि वली गणों कर टली गली काननकी गली बल अंकों में न भास है ॥ लोइनाके माहिं कछु लोइ नाहिं परे स्वच्छ रसना सो रसनासो नास कला नास है ॥ केश भये उजर न रह्यो कछु उजर जवानी गई उजर न सासको विसास है ॥ तृष्णा तो अनंतअंतभयोहै संघातसभ शांत भई शांति नाहिं शांतभोगआसहै॥

तनु वृद्ध भये ते न वृद्ध भई भोग आश मन में तो भोगनकी कोटि मन रत है ॥ सने सने उत्थान लोचनकी दुतिहान मानवको बहु मान हान भयो अत है ॥ सखे सम बैस वारे प्राणों वत जेई प्यारे कबके पधारे नाक देख ऐसी गत है ॥ अहो अजे नीचनिज मीच बीच हासी भजे जीव ना चहत मृत जीवना चहतहै ॥ ४९०.॥

शुभ शत संवत नरानकी प्रमान आयु तास आध भागनास होय रैन सोय है ॥ बाल वृद्ध माहिं ताहिं आधो भाग बाधो आहि जाडता अशक्यताकी खाण बैस दोय है ॥ शेशकी अवध जोऊ आधि व्याधि संम सोऊ भ्रमनो विदेश होऊ सेवकादि खोय है ॥ जीवनकी आयु माहिं सुखको तो नाउँ नाहिं तोयके तरंगके समान भंग होय है ॥ ४९१ ॥

विविध प्रकार वेद अर्थके संवद वारी चेतना मों चंचलाई सो निकाई हत है ॥ नानाविध वाक्यनके कौतुक में रस जोऊ सो विरस भयो जाहि माहिं विलसत है ॥ भांति भांति सकल विकलप प्रशांत जामें रजो तमो रहत सुसतोके सहत है ॥ ईश्वरकी सेव हित ऐसो चित चाहियत ऐसे चितहीमों सत चित विकसत है ४९२

हरि में सनेह तर जनम मरन डर उर माहिं कीनो घर बंधु में न राग है ॥ मनोभव जो विकार मंद संसकार डार संग दोष दुख टार

बसेकांत बाग है ॥ या वैराग भये कहा होर त्याग योग रहा हती सब चाह जो वैराग ते वैराग है ॥ हेतु परमारथको उत्तम वैराग ऐसो भाग बडे भागको अभाव ताते भाग है ॥ ४९३ ॥

भोग में रोग भय सुखों विषे क्षय भय धन मध्य भय भूप चोर को रहत है ॥ दास माहिं स्वामि भय जय माहिं रिपु भय भय कुल बीच नीच नारीको महत है ॥ मान में हान भय गुणी में खलान भय काय में कृतांत भय भय सर्वगत है ॥ निरभय वैराग एकधरो नगे सविवेक गायो मैं अनेक बार थाकी मोरी मत है ॥ ४९४ ॥

## सवैया ।

तीर्थानके माहिं सनान समान करें बहु दान महान मनी के ॥
समसान मठान तरून तरे असथान करे उत तीर नदी के ॥
मुख मौन धरे तज भौन चरे अरु वेद रटे सुपढावत नीके ॥
गुण एतत वृंद बरात जना वर एक वैराग विना सब फीके ॥४९५॥

## कवित्त ।

अंत तो मलीन दीन हीन पुरुषारथ सों कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहों ॥ विषया अधीन और कहा लौं कहे प्रवीन काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहों ॥ रावरे समर्थ हैं मोसे खल तारबेको अधम उधारन हो और ते नदा चहों ॥ सरल सुजान संत प्यारेकी निछावर मोंहि दीजे शरणागत संत संग मों परो रहों ॥ ४९६ ॥

## सवैया ।

आपनो रूप पिछान सी लाभ न भूल सी हान बड़ी नहिंजीको ॥
नाहिं बड़ो सुख भक्ति तें दूसरो दुःख न जानवो राधिका पीको ॥
चारिहु नीक न जान परैं विन साधु के संग कहो कर नीको ॥
वेद कहे अरु लोक लखै सत संगत सेव्य सही सबहीको ॥ ४९७ ॥

## झूलना ।

समता गहे सच्चको जाने दुःख सुःख सम आडा है ॥ मेटे मान मोह मगरूरी काम क्रोध सो खाडा है ॥ छोड़ कुसंग संग सम साधे

सुरत शब्द मन गाडा है ॥ यों शिर के पद चलै संत ढिग क्या तनु हलुवा माडा है ॥ ४९८ ॥

इंद्रियजीत करै वश अपने तजै जगतकी आसा है ॥ जोड़ै प्रेम नेम साई सों रहै दरस रस प्यासा है ॥ आपा मेट गर्द कर डारै शिर दे लखै तमासा है ॥ यहि विधि गहै संत तब होवै यों क्या दूध बतासा है ४९९ ॥

## कवित्त ।

मूठी एक माटीको घरौंदा सो शरीर मन ताको कहै मेरो वपु अति अभिरामहै ॥ आगे पाछे भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें जानै जाको खेह विट कृमि परिनाम है ॥ विषयको भोग जैसे दाद को खुजाये सुख अंत दुखराशि तामें मानत विश्राम है ॥ इंद्रिन के संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है ॥ ५०० ॥

## कुंडलिया ।

भेड़िन में जिमि सिंहको सावक रह्यो भुलाय ॥ तिन के सँग भेंभें करै निज पौरुष बिसराय ॥ निज पौरुष बिसराय तिनहि के धारे लच्छन ॥ ये नहिं समुझे नेक सकल ये मेरे भक्षन ॥ तैसे गो गण संग फिरत मन पगभ्रम बेड़ी । आप अपनपौ खोय भयो भेंडिनमें भेंडी ॥

## कवित्त ।

रविको प्रकाश जैसे देखियत मुकुर मध्य मुकुरको प्रकाश जैसे जलको अभास है ॥ जलके प्रकाश हूं ते होत जो प्रकाश तो तो देख्यो परै मंदिर के भीतर उजास है ॥ तैसे परमात्मा ते आत्मा विचार लीजे आत्माते मन मन ते जगत बिलासहै ॥ साक्षी परमात्मा अखंडित सबहीं के माहिं सबही ते न्यारो सदा आनँदकी रास है५०२

स्वपने में सती यती मुनिराव रंक सब स्वपने में चार दश लोकन फिरत है ॥ स्वपने में मेरा तात मात भ्रात नारी सुत मेरो यह धाम ग्राम नाम यों कहत है ॥ स्वपने में भवके समुद्र मांझ

बह्यो फिरै पैरत थकत पुनि बूडत तरत है ॥ जागे विन जाने नाहिं आपही सकल भयो आपही तो निरखत आपही निरत है ॥५०३॥

## सवैया।

चाह जिती चित चौंहै अनेकन होत तितो दुख ही जु विचारै ॥
है इन इंद्रियको सुख हेत सुतेरो न हेत जो नीके निहारै ॥
पेट लफाये फिरै जु कहा अति दीन दुवारन दांत निकारै ॥
लै हरिकी किन भक्ति सदा जु चहै सुखसों अपनी निस्तारै॥५०४॥
दैनै दई फल फूल अनेक औ मूल जितै तित तोहि अहारै ॥
डासनको कुशलै परिभूमि चहै जितही तित पायँ पसारै ॥
ताल तरंगिन ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारै ॥
याके लिये हठके शठ तू कह पांवर पौरिन हाथ पसारै ॥ ५०५ ॥

## कवित्त।

जाको जाको चौंहै सोतो जातहै चलाहै सब कौनसी निबाहै नेह देहहूं तो छीजिये ॥ रवि शशि तारागण सुरासुर सातों सिंधु भूमिहू अकाशको विनाशही पतीजिये ॥ ब्रह्मा औ कीट लौं विनाशवंत दीसैं सब आपा मान रह्यो सोतो आपहूं न जीजिये ॥ कासों मानो नातो कासों करत हिताहित सो देख जो परत शोचकाको काको कीजिये ॥ ५०६ ॥

अंगी अरधंगी हितबंध सनबंधी ताके हेत मति बंधी मन पाछे पछताय है ॥ अंग ही लौं अंग छिन भंगी जब होय गयो नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है ॥ घर ही लौं कोई कोई आंगन डगर ही लौं चिता के समीप कोऊ जाय है तो जाय है ॥ जेता है हुतंगी दिना चार हीके रंगी सब अंतके समयको तेरो संगी रामराय है ॥ ५०७ ॥

## सवैया।

आये कहांते कहो तुम आप है आये कहांते तुम्हारे ये नात है ॥
जात भये कितको सिगरे अरु तू मरके कितको कहँ जात है ॥

नाचत पूतरी पेखनो लों जग डोर नचावन हारके हाथ है ॥ तेरो कहा जो तू मेरो कहै हठ हेरो विचार कहा विललात है॥५०८॥

## कवित्त ।

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात मान लियो अरि मित्र जाति अरु पांति है॥ मान लियो आपा पर मान लियो नारि नर मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नर्क स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो मान लियो हानि लाभ भांति हूं विभांति है ॥ जग सब झूठ है मरीचिका की ज्योति जैसे जान लियो सांच मान लियो एक बात है ॥ ५०९ ॥

## राग विहाग ।

ओहै वह वह झाकींदाहुण पडदा किसतों राखींदा ॥ जिस तन इशक का जोर हुआ वह बेखुद ह्वै बेहोश हुआ वह क्योंकर रहे खमोश हुआ जिन प्याला पीता साकी दा ॥ तुसीं आप असांवल आएहो किस कोलों भेद छिपाएहो किते अदम पीर बनआएहो बिच पडदा रखिया खाकीदा ॥ तुसीं आपे कहंदे सारे होतुसीं आपे कहंदे न्यारे हो तुसीं आपे लयो नजारे हो किते लाला नयन झमाकीदा ॥ तूं ना कर इतना झेडा है तुध बाझों दूज केहडा है असां देख्या बडा अंधेरा हैं अपने आप नूँ दूजा आखींदा॥ किते रूमी हो किते शामी हो तुसीं आपने आप तमामी हो किते साहिब किते सलामीहो केन्हां खोटा खरा सुलाकीदा मनसूर नूं सूली चाढ्या ईशाह शम्मस पोश उतारयाई हुण मिसकीनांबल आया हैं कुछ लेखा रहिंदा बाकी दा ॥ बुल्या इस तन दी तूं भाठी कर बाल हड्डां नूं काठी कर ज्ञान अगन सों ताती कर फिर तिसपर मधुवा चाखीदा ॥ ५१० ॥

## राग जंगला ।

कोई मोडो दिलांदियां बागां नूं ॥ मन समझाया समझे नाहीं रात दिने उठ पैंदा राहीं ढूंडन जाय स्वादां नू ॥ यह मन मेरा कौआ

कहिये विना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसांतज कागां नूं ॥ और किसी को दोष न दीजे जो कछु बीजिया सो लुन लीजे दोष है अपन्याँ भागां नूं ॥ कहे हुसैन सुनो भाई साधो मन मजबूत पकड जब बांधौ फेर की करो किताबां नूं ॥ ५११

तेरा राम बसता है तेरेही मनमें मूरख काहेको भटकत बनमें॥ दूध दहीकी मटिया जमाई तामें माखन वस्तु लभाई मथन विना कुछ हाथ न आवे जैसे चंदा छिप जात घन में ॥ पथरी में आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरू अपने से आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पन में ॥ मंहिदीके पात में लाली रहत है बिन घोटे रंग चढे न हाथ पै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधन में ॥ गजके कुंभ सों निकस्यो मोती अँधेरे से क्या क़ीमत होती हेमदास कोई विरला जाने ज्ञानी समझतहैं सैनन में ॥ ५१२ ॥

सतगुरु पूरा पाया भला मैं साहब पूरा पाया है ॥ गढ कंचन के महल त्यागे त्यागी सगरी माया है ॥ दारा सुत दोनों मैं त्यागे गोविंद हिरदे में समाया है ॥ जन्म जन्म का सामैं दुखिया छिन में दुःख गँवाया है ॥ खुदी गई आनँद सँग राता गोविंद का गुण गाया है ॥ मन महलां मैं सेज विछावा सुख में जाय समाया है ॥ जाग्रत स्वपना दोनों त्यागे तुरिया माहिं जमाया है ॥ पवन दा घोडा सुरत लगामां भय दा चाबुक लाया है ॥ प्यादे ते असवार बनाया बिन पंखा जुउडायाहै ॥ शौह अपने दी रैणी रंगसां गूढ़ारंग रँगाया है ॥ कहत विचारा दिलसुख प्यारा प्याला प्रेम पिलाया है ॥ ५१३ ॥

केती हजारां आलम हैं तांतूं केहडी कुडे तांतूं केहडी कुड़े नी॥ तेरे जेहीयां लखँ हजारां बाह बाह पट्टियां फिरन बजारां इस फिरने सिर लाख पजारां तांतूं आपेई इल्लत सहेडी कुडे ॥ सुरमापा मटकेनी हैं तांतूं सबदी वल्ल तकेनी हैं गिरगां वांग टपेनी हैं तेरे मगरे ई फिरदा लै हेडी कुडे ॥ जद तूं ओथों आई सी तेरी मूरत सकल अलाही सी तेरी चुनडी नूं दाग न स्याहीसी हुण तैं आपेई चिक्कड लबेडी कुडे ॥

उमर गंवाल‌ई मार पंज गिटडा एह जग तैनूं लगदा मिठडा एथे रहन किसीदा न दिसदा आचढ हुसैनां दी बेडी कुडे ॥ ५१४ ॥

## कबित्त ।

दाताऊ महीप मानधाताऊ दिलीप जैसे जाके यश अजहूं लौं द्वीप द्वीप छाये हैं । बलि ऐसो बलवान को भयो जहान बीच रावण समानको प्रतापी जग जायेहैं ॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे जाके गुण दीनद्याल भारतमें गाये हैं । कैसे कैसे शूर रचे चातुरी विरंचि जूने फेर चकचूर कर धूरमें मिलाये हैं ॥ ५१५ ॥

चले गये छांड हरणाक्ष हिरण्यकाशिपु जैसे बलि जैसे बांधे पातालमें चले गये ॥ चले गये रावण कुंभकर्ण महायोधा केते नरेश मारे धूरमें रले गये॥रले गये जरासन्ध कंस शिशुपाल जैसे दुर्योधनादि बीच गर्वके गले गये ॥ गले गये केते यते असुर महानदुष्ट आयके जमीन पर हो हो कर चले गये ॥ ५१६ ॥

श्वासके भरोसे गढ मासमें निवास लियो आशा मन माहिं राखी मान न शरीराकी ॥ बडे बडे शूरवीर देख छोड गये मूरख रहीना निशानी शाहां अरु वजीरा की ॥ भजरे निरंजन दुखभंजन कुल आलमके नित्त रोज खबर लेत पाहन में कीराकी ॥ कहे कवि थारा मल सुमरनका यही पल एक एक घडी जात लाख लाख हीराकी॥

## सवैया ।

परिपूरण पापके कारण ते भगवंत कथा न रुचै जिनको ॥
तिन एक कुनारि बुलाय लई नचवावतहैं दिनको रिन को ॥
मिरदंग कहै धिग है धिग है मंजीर कहैं किनको किनको ॥
तब हाथ उठायके नारि कहै इनको इनको इनको इनको ॥ ५१८ ॥

## कवित्त ।

संतन की गहो रीत त्यागो जगकी प्रतीत औसर हे यही मीत विलमको चुकाइये ॥ निशिदिन कर संत संग जगत प्रीति करो भंग गमजू सों लाय रंग आन नहिं जाइये ॥ आनगियां सुख नाहिं समझ

देख हृदय माहिं भला दाँव बन्यो आय बादना गँवाइये ॥ प्रभुध्यान हिये धार सकल आशको बिसार संतन मिलगहो सार वेग मुक्ति पाइये।

## सवैया ।

यह मन भूल रह्योहे कहा विषयारस में निशि दिवस बहे ॥
है जगझूठ धुवांको सो धाम मृगाजल सोहत प्यास चहे ॥
धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहे ॥
चेत अजों ममता तजके समता सुख आनँद सिंधु लहे ॥ ५२० ॥
मात पिता हित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे ॥
तू हित मान रह्यो इनसों निशि द्योस भ्रमै जिमि भौंरके बेरे ॥
इनके दुखते दुखपावतहैं सो तो हैं सबये हित स्वारथ केरे ॥
जीवत जारतहैं तोहिं तात मुये पुनि जारन हार हैं तेरे ॥ ५२१ ॥
छोडके आश सभी जग की हिय में सुख शांतिको बास करो ॥
यह जीवनहूं की तजो सरधा जग जीवत ही विन मीच मरो ॥
अबलों जुभई सुभई अबहूं चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥
तुम काके हो कोहो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आपधरो ५२२॥
काल निहारत काल सदा सब लोग विचारत ही पचहारैं ॥
कोऊ बच्यो न कहूं कितहूं जलहूं थल व्योम पताल विचारैं ॥
है छिन एक को पेखनोसो तू तहां कहँ कौनकी आश निहारैं ॥
यामें कहा तोहिं अर्थ मिलै यों विनर्थहिं मानुष जन्म निवारैं ५२३॥
तू ममता मद माहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सँवारै ॥
लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारै ॥
काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारै ॥
नंदके नंदही क्यों नभजै जो सदा अपने जनको प्रतिपारै ॥ ५२४ ॥
संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हैं ॥
तू ममता अजहूं नहिं छोंडत मौत ने आय सँदेश दये हैं ॥
आज कै कालिह चलें उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं ॥
सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं ॥ ५२५ ॥

## राग प्रभाती ।

तु खुश भर नींद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौत का बाजे । ज्यों सावन मेघुला गाजे ॥ जिन्हा सँग नेह सी तेरा । तिन्हां किया खाक में डेरा ॥ न आये फेर कर फेरा । कहां गये मुल्क के वाली । जो चलते हंसकी चाली ॥ गये दर-बार कर खाली ॥ कहँ गये खान मद माते । जो सूरज चंद्र लौं जाते ॥ न देखे वह किसी जाते ॥ कहां गये मीर और काजी । जो चढ़ते तुरकियां ताजी ॥ गये वैरान कर बाजी ॥ जो टूटी अंब की डाली । जो सोता बाग का माली ॥ बड़ेही शौक से पाली । जिन्हां सिर केस थे काले ॥ मलाइयां दूध से पाले । कि आखर अगन में जाले ॥ जिन्हों के लाख थे पल्ले । वो खाली हाथ कर चल्ले ॥ उन्हों ने जंगले मल्ले ॥ जिन्हां शिरसोहँदे चीरे । चबावैं पानके बीरे ॥ तिन्हांको खा गये कीरे ॥ जिन्हां घर रेशमी बसते । तिन्हां पर बैठ कर हँसते ॥ सो देखे खाकमें धसते ॥ जिन्हां घर पालकी घोडे । सोहैं तन मखमली जोडे ॥ सोई मुख मौत ने तोडे ॥ जिन्हांघर झूलते हाथी । हजारों लोग थे साथी ॥ तिन्हां को खागई माटी ॥ जो तन धन गर्व नांहि करना । कि आखर खाक में रलना ॥ वलीकहे फिर नहीं मिलना ॥ ९२६ ॥

## राग जंगला ।

इस दुनिया पर रोज मुसाफिर नित उठ बाग बहार नहीं ॥ काची कंध बालु का गारा तिस पर महक उसार नहीं ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा भीर परी कोइ यार नहीं ॥ बारू भीत बनाई रच पच सो रहती दिन चार नहीं ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो आवन दूजी बारनहीं ॥

## राग भैरवी ।

याद करेगा इस जीवन नू भला मुसाफर बंदे ॥ आयासी कछु लाहे कारण रुँझगिया केहडे धंधे ॥ भवसागर तैनूं तरना पौसी पाप पुण्य धर कंधे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्मके अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतर गये हरि हर नाम जपंदे ॥ ९२८ ॥

## राग परज।

बात चलन दी करहो जग रहना नाहीं ॥ खाय खुराकां पहिन पुशाकां जमदा बकरा पल हो ॥ गंगा जावे गोदावरी न्हावे अजे न समझे खलहो ॥ उमर तेरी ऐवें पई जांदी घडी घडी पल पल हो ॥ कहे हुसैन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो ॥ ५२९ ॥

## राग प्रभाती।

अबतो जाग मुसाफर प्यारे रैनि घटी लटके सब तारे ॥ आवागौन सराईं डेरे साथ तयार मुसाफर तेरे अजे न सुनदा कूच नगारे ॥ करले आज करनदी वेला बहुरि नहोसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥ आपो आपने लाहे दौडी क्या सरधन क्या निरधन बौरी लाहा नाम तूं लेहु सँभारे ॥ बुल्ला शोहदी पैरीं परिये गफलत छोड हीला कछु करिये मिर्ग जतन विन खेत उजारे॥५३०॥

किहीं राहीं जानगे मुसाफर कल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न वन्हदे पल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदी की अशनाई अज आये कलहचल्ले ॥ ५३१ ॥

बैठरे मन सबरके हुजरे। जैसी जैसी आवे तैसी तैसी गुजरे ॥ शांत बहारी हत्थ गह लीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तब अंधेरे को सब कछु सुझरे ॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्राणी कभूं न सुमिरचो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवें पैया उजरे ॥ शिर पर मन्न लई सब रजाईं हर दम आखीं साईं साईं सबही मुशक्कतां पावेगा मुजरे ॥ जे मन जांदा मोड ल्यावें तांरजादाशाहकहावें अपना मरमतू आपही बुझरे ॥

## राग बडहंस।

अरी अरी एरी माई डरदी तेरयांनकी बांदेकोलों रब्बा ओल्हे छिपके मैं खलोनीहां ॥ मैली टोपी साबुन थोडा मल मल धोंदियां पीया तेरा जोडा दागां दा कोई ओडक नाहीं नालो धोंदीयां नाले मैं रोनीहां दुःखांसूलां ने कीता एका नाकोई साहुरा नाकोई पेका दर तेरे ते पई तडफदी सुनले हाल न मानीदा ॥ शाहहुसैन

खडा तिन गाजे काल नगारा तेरे शिरपर बाजे चार दिहाडे गोरीं वासा आखर कूच व परींदा ॥ ५३३ ॥

## राग प्रभाती ।

रहुवे बीबा रहुवे अडया बोलनदी नहीं जावे अडया ॥ जे शिर कट्ट लवे धड नालों पाछे कदम नदेवीं हालों तदभी कुछ न कहु वे अडया ॥ जे तें हक दा राह पछाता दमना मारीं रहीं चुपाता गरदन कट्ट ना बहु वे अडया ॥ गोर न मानी दियां छमकां केहीयां हू हवा विच रह गेयां सैयां कहिंदा शाहहुसेन वे अडया ॥ ५३४ ॥

## राग जंगला ।

हँसके गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं तेहँढावीं खावीं कित कारण संचना ॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम लाखां ते हजारां वालेनंगी पैरीं चल्लना ॥ सीधे मारग पाउँराख चुभे नहीं कंडाकाख विंगेमारगपाउँ न धरिये होवेअंग भंगना ॥ शाहबाद शाहझूरे किसेदे न कम पूरे वुल्हैदी बलाय झूरे आखिर मर बंजना ॥

लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर ॥ रातीं रातीं वदीयां करें दादिन नूंसदावें पीर ॥ अपना भारा चाय न सकदा लोकां बंधावें धीर ॥ कुडम कुटंब दी फाही फस्या गल विच पालईया लीर ॥ दर.गह लेखा मंगीये हुसैना रोवेंगा नीरोनीर ॥ ५३६ ॥

## राग धनाश्री ।

मेरी आंख दिया हो लाज मूलन आइया यार ॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकंदर दारा ॥ बाजीगर दी बाजी वांगूं रच्या कूड पसारा ॥ मेरी मेरी कैरो कर गये दुर्योधनके भाई ॥ सोलां योजन छत्र झुलत सी देही गिर्झन खाई ॥ मेरे पुत्र मेरी यां धीयां मेरा कुटुंब मेरे भाई ॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावें तिन्हां ठौर न काई ॥ यह दुनिया है चार दिहाडे नाकर मन दा भाणा ॥ कहे हुसैन फकीर साईं दा नंगी पैरीं जाणा ॥ ५३७ ॥

## राग भैरवी ।

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा

असवार ॥ माटी माटी नूं मारन लागी माटी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी माटी नूं देखन आई माटी दी बहार ॥ हंस खेल फिरमाटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुझ्झी लाह सिरों भों मार ॥ ६३८ ॥

## ग़ज़ल।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन इश्क में शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हूआ पंथ में साबित न कीया आपको । आलिम और फाजिल बना दाना हुआ तोक्याहुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका । सारी किताबां याद कर हाफ़िज़ हुआ तोक्याहुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नहीं । राग तार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्याहुआ ॥ जोगी उजंगम वेषकर कपडे रँगाकर पहिनते । वाकिफ नहीं उस हालके कपड़ेरँगे तो क्या हुआ ॥ दिल में दरद नहिं पिया को बैठा मुशाइख होय के ॥ दिल का हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरां नसीहत तूं करें आप अमल करता नहीं । दिलका कुफर टूटा नहीं हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्क के दरियाय में गर्काब तू होता नहीं । गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत है यही पीपी जो करते जी दिया । मतलूब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥

## राग जंगला।

क्यों बे बाबा मान भरया रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है । करता है मेरी मेरी रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दुनिया आवागौन है ॥ भाई बंधु बिरादरी फर जंद यार मन । सब सुखके हैं समीपी रे तू समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान । इक पल में मार डारे तेरा क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तू समझ यार मन । इक राम नाम सांचा है और झूठा सभ जतन ॥ ६४० ॥

राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोलेतो अंतर खोले सेजडियां सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके । साँचे मन ते साहब नेडे झूठ मन ते भागा । हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ५४१ ॥

## राग काफी ।

नाजानूं मेरा राम कैसा है । मुल्लां होके बांग जो देवे क्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेवर बाजे सोभी साहिब सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लंबीयां जटां बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफुर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है । कौडी कौडी माया जोडी जोड जमीं पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है । हीरा होवे परख दिखावां कौडी परखन कैसा है । कहत कबीर सुनो भइ साधो हरि जैसे को तैसाहै ॥५४२ ॥

## राग सोरठ ।

उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अंत की बार नहीं कछु तेरा ॥ अनेक जतन कर कायां पाली । मरतीबेर अगन सँग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा । सो तनु जले काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनोरे गुनिया । विनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ ५४३ ॥

## राग होरी ।

तन मन रंग बनाय पिया संग खेलिये होरी । तार बनाऊं जिया की तन का करूंजी तंबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सों सब कारज पूरा । शीशी भरी गुलाबकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूं अपने श्याम पै सब देखन हारी ॥ चोआ चंदन मेल के हत्थ लीयोजी अबीरा । सब संतन मिल खेल्यो संग दास कबीरा ॥५४४॥

## राग धनाश्री।

प्रीतम जान लेहु मन माहीं। अपने सुख से सब जग बाँध्यो को काहू को नाहीं॥ सुख में आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरे। विपति परी सबही सँग छाँडत कोउ न आवत नेरे॥ घर की नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी। जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी॥ याविधि को व्यौहार बन्योहै जासों नेह लगायो। अंतकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न आयो॥ ८४५॥

## राग सोरठ।

मनरे प्रभुकी शरण विचारो। जिहिं सुमिरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया॥ दुख हरता या विधि को स्वामी तैं काहे बिसराया॥ जबहीं शरण गही किरपानिधि गज ग्राह ते छूटा॥ महिमा नाम कहां लग वरणों राम कहत बंधन तिहिं टूटा॥ अजामील पापी जग जाने निमिष माँहि निस्तारा॥ नानक कहत चेत चिंतामणि तैंभी उतरसपारा॥ ८४६॥

या जग मीत न देख्योकोई॥ सकल जगत अपने सुखलाग्यो दुखमें संग न होई॥ दारा मीत पूत संबंधी सगरे धन सों लागे॥ जबहीं निरधन देख्यो नर को संग छाँड सभ भागे॥ कहा कहूं या मन बौरे को इनसों नेह लगाया॥ दीनानाथ सकल भय भंजन यश ताको बिसराया॥ श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधा बहुत जतन मैं कीनो॥ नानक लाज विरद की राखो नाम तिहारो लीनो॥८४७॥

## राग बरवा।

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो जात॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात॥ गयो श्वास न बहुडियो तेरो पलक लखियो न जात॥ जुए जुवारी धन हर्यो मन खेलने दे चाउ॥ खेड कर पछतायगारे तू हार घर क्यों जात॥ बनजारेने बैल जैसे टांडा

लादियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गँवाय ॥ आछे दिन पाछे गये तैं हरि सों कियो न हेत ॥ अब पछतावा क्या करे जब चिडियाँ चुग गईं खेत ॥ काची काया काँच की रे समझ देखो लोय॥सगुरे को समझ परतहै निगुरा जावे खोय ॥ जबलग तेल दीवे में बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी ॥ पछतायगी पनिहार जिउँ कर रीते घर क्यों जात ॥ फटी सुरनाही फूक निकसी जायसुनी अवधोहि ॥ कहे नानक दास प्रभु का तेरी अंत हो जाऊ खेहि ॥ ८४८ ॥

## राग परज ।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म बचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ हम हम कर धन धाम सँवारे अंतचले उठ रीते ॥ सुत वनितादि जान स्वारथरत न कर नेह इनहीं ते ॥ अंतौ तोहि तजैंगे पामर तू न तजै अबहीं ते ॥ अब नाथहिं अनुराग जाग जड त्याग दुराशाजीते।बुझै न काम अगिनि तुलसी जिमि विषय भोग बहुघीते॥

## राग भैरवी ।

बार बार समझाय रहो मैं मान लेरे मन मेरी कहीको ॥ दुख सुख सों बीती सो बीती याद न कर बरबाद बहीको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपट की गाँठ गही को ॥ जानकीदास सुमिरु श्री रघुवर गई सो गई अबराख रही को ॥ ८५० ॥

## राग कालिंगड़ा ।

क्यादेख दिवाना हूआरे ॥ माया बनी सार की सूली नारि नरक का कूआ रे ॥ हाड चाम नाडी को पिंजर तामें मनुआं सूआरे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा तिनमें पच पच मूआरे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो हार चल्यो जग जूआरे ॥ ८५१ ॥

## राग जंगला ।

पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रस कारे ॥ पाप पुण्य

दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धनयौवन स्वपना निशि कारे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारि वश कारे ॥ वृद्ध भयो कफ वाईने घेरचो खाट पडा नहिंजाय मसका रे ॥ नाभि कमल में है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशु का रे ॥ बिन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे बनका रे ॥ लाख चुरासी उबरचो चाहे छोड कामिनीका चसका रे ॥ प्रेम मगन चरणदास कहत है नख शिख रूप भरचो विसकारे ॥ ५५२ ॥

## राग कान्हरा ।

सुमिरन कर श्री रामनाम दिन नीके बीते जाते हैं ॥ तज विषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो पातेहैं ॥ कौन तुम्हरा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसकेबल हरिनाम बिसारा सब जीते जीके नाते हैं ॥ लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिर पीछे पछताते हैं ॥ जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौज की फाँसा क्या देखे श्वासनकी आसा गये फेर नहीं आतेहैं ॥५५३॥

## राग तिलंग ।

यह जग दर्शन मेला है ॥ जे तूं आया है ईहां पै कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हंस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सब को इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ॥ ईहां तेरी जिनस जमाहै और कोई नहीं पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहिं कोइ दम की है और ज्यादा नहीं झमेला है ॥ इस मंदर बीच निरख तूं क्या रंग बरंगी मूरत है ॥ हिरदेसे तनक परख तू इस मूरत में क्या सूरत है ॥ धनि उस कारीगर को कहिये जिन अपने हाथ बनाई है॥गुनज्ञानजोबन छबिरूप रंगमें एकहीएक नवेलाहै ॥ यह जो तू देखें आपस में ईहां एक से एक का है नाता॥ कोई बाप

बना कोई बेटा कोई चचा भतीजा कहलाता ॥ कोई मीयां आपको जाने है कोई दास आपको मानेहैं ॥ कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अबलो तब ईहां है सबको सैरे हैं बाग वहारें हैं ॥ मन आनंद और चैनें हैं करतेहैं लहरे मारे हैं ॥ पर सुख के समें यह हैं सगरे रे यह देखन हारे हैं ॥ आजही के कल आप आप को चल जायेगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है ईहां से रस्ता गह जावेंगे ॥ यहदोस्ती निस्बत नाते सब ईहां के ईहां रह जावेंगे॥यहबूंदें जिस दरिया की हैं सब मौजहीसे मिल जावेंगी॥ फिर कछु टंटा है न बखेडा है झगडा है ना झमेला है ॥ ५५४ ॥

## राग झिंझोटी ।

आरती सदाही होत संतन घट माहीं ॥ ब्रह्म जोत प्रगट भई विकसत दर्साई ॥ वेद के बजंत्र बाजें ज्ञान धूप धुखन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई ॥ प्रेम की जो बाती लागी सकल ब्रह्म जोत जागी अनुभवसों दुमत भाग इक संग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंख पूर भेद भर्म कियेचूर इत उत सब चिद स्वरूप आत्म दर्शाई ॥ कहहै कवि लोक दास आश्चर्य गुरु कियो प्रकाश अति हुलास होत जहाँ जन्ममर्ण नाहीं ॥ ५५५ ॥

## राग सोरठ ।

रेमंन समझ ऐसी बात ॥ नदीके परवाह ज्यों सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय सँघात ॥ वसे संग सराय के परभात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज रात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठा घात ॥ भजन कर गोविंद का सद्गुरु बताई बात ॥ नँदलाल प्रभुजी सुमिररे मन उतर भौ जलजात ॥ ५५६ ॥

## रागविहाग ।

काहेको बिसारी रे जपाकर माला ॥ रामभजन को तुलसी की माला ओढन को मृगछाला ॥ खान पान को बासी जो टुकरा

रहने को कुंज तमाला ॥ धन जोबन मद में मत भूले जम करि है बेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनहिं छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्णप्रिया विन हितू न जग में सब झूठा जंजाला ॥ ८८७ ॥

## राग धनाश्री ।

केते दिन हरि सुमिरन विन खोये ॥ परनिंदा रसना के रस से अपने करम बिगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये ॥ तिलक लगाय चले बन स्वामी विषयनके सँग जोये ॥ काल बली ते सब जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये ॥ सूर अधम की कौन गती है उदर भरे भर सोये ॥ ८८८ ॥

सब दिन गये विषय के हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूंधो श्वास मुख बैन न आवत चंद्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ तजि गंगोदक पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविंद बिसारचो बूड्यो कुटुँब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥ ८८९ ॥

## राग सारंग ।

तजो मन हरि विमुखन को संग ॥ जिनके संग कुबुद्धि ऊपजे परत भजन में भंग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में निशि दिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विष नहि तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खर को कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित वान नहिं भेदत रीतो करत निषंग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढत न दूजो रंग ॥ ८९० ॥

## राग देश ।

राधे कृष्णा क्यों नहिं बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटुंबकी खातर पच पच के कमा ओगे ॥ माया तेरे संग न चाले भरम गमाओगे ॥ आवेंगे वे जमके दूत पकर ले जावेंगे ॥ मजबूत तुमसे मांगेंगे हिसाब प्यारे क्या बतला-

ओगे । सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटाओगे ॥ श्रीठाकुर जी को ध्यान धरले पार लग जाओगे ॥ ५६१ ॥

## राग बिभास ।

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडली में जाय के ॥ धायो न धमक वृंदाविपिन की कुंजन में रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश राय के ॥ नाथ जू न देख छक्यो छिन हूं छबीली छबि सिंह पौंरि पर्यो नाहिं शीशहूं नवाय के । कहे हरिदास तोहिं लाजहू न आवे नेक जनम गँवायो ना कमायो कछु आयके ॥ ५६२ ॥

## राग जैजैवंती ।

रच के सँवारे नाहिं अंग अंग श्याम। श्याम एरी धिक्कार और नाना कर्म कीवें पै ॥ पाँयन को धोय निज करते न पान कियो आली अँगार परे शीतलपय पीवे पै ॥ विचरे ना वृंदावन कुंजन लतान तरे गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीवे पै ॥ ललित किशोरी बीते बरष अनेक हग देखे नाहिं प्राण प्यारे छार ऐसे जीवे पै ॥ ५६३ ॥

## राग सिंधु काफी ।

रटत रटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकाई ॥ लिखत लिखत लीला रस द्वंद्वज अँगुरिन पोर जो ना घिसजाई ॥ ललित किशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथाई ॥ युगल विहारी को मग जोवत जो न भई नयनन में झाई ॥ ५६४ ॥

## राग देश ।

ऐसी चतुरता पर छार ॥ करत बाद विवाद जित तित हित न नंदकुमार ॥ रूप कुलगुण कूप मंडित बढ्यो गर्व अपार ॥ और हम-सम नाहिं कोऊ दूसरो संसार ॥ मात पित सुत भ्रात मरगये औ सकल परिवार ॥ जानत हैं हम हूं मरेंगे तउ न तजत विकार ॥ लेतनाहिं प्रसाद सादर करत लोकाचार ॥ नारि मुख पैजाय पीवत अधर लिपटीलार ॥ संतजन सो द्रोह मानत सुहृद साहूसार ॥

काम क्रोध और लोभ व्याप्यो मोह मद हंकार ॥ सूर विमुखन परिहरहु सतसंग वारंवार ॥ ५६५ ॥

## राग कालिंगडा ।

मूरख छाँड वृथा अभिमान ॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिन को महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवी पर रूप तजे बलवान॥ कौन बच्यो या काल व्याल ते मिट गये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्र समान ॥ अंत समय सबही को तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयन में जाविधि मर्कट श्वान ॥ छिन भर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जिन भटके मेरो कह्यो अब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवर सों वेगहिं कर पहिचान ॥ ५६६ ॥

## राग कालिंगड़ा ।

सबदिन होत न एक समान ॥ इक दिन राजा हरीचंद गृह संपति मेरु समान ॥ इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इक दिन दूलह बलत बराती चहुँ दिशि गडत निशान ॥ इक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ इक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान ॥ इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ विरचत पुष्प विमान ॥ इक दिन राजा राज युधिष्टिर अनुचर श्री भगवान ॥ इक दिन द्रौपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत है पूरव की करनी तज मन शोच अजान ॥ सूरदास गुण कहँ लग वरणों विधि के अंक प्रमान ॥ ५६७ ॥

भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल लोचन परम विशाल ॥ शुक नाशा भौं दूज चंद सम अति सुंदर हैं भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसत हैं घुँघरारे बर बाल ॥ रतन जड़ित कुंडल कर कंकन गल मोतियन की माल ॥ पग नूपर मणि खचत बजत जब चलत हंस गति चाल ॥ गौर श्याम तनु बसन अमोलक कर मेहँदी सों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन

अधिक रसाल ॥ कुंज भवन में बैठ दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छबि को निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ ५६८ ॥

जैजै युगल किशोर बिहारी ॥ जै निकुंज में अविचल जोरी जै मन मोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छबि सिंधूरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसिक शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तनवश रहत निरंतर नाना चरित करत सुखकारी ॥ भक्तराम निशि दिन यह जाचत चरण कमल राखों उरधारी॥

यह रस रीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसेरी ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्रात सबनको तैसेरी ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूंद जल जैसे री । भगवत कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसैरी ५७० ॥

दोहा—संतन को यह परम धन, सब ग्रंथन को सार ॥ भक्तन को सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥ सादर जो जन याहि को, पढ़ैं नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥ हरि चरणन दृढ प्रेम जिहिं, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहिं वर, सकल होय परसन्य ॥ पढत सुनत याके भयो, जो मन अधिक हुलास ॥ मेरीहूं सुध लीजियो जान, आपनो दास ॥ जै वृंदावनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास ॥ निज चरणनमें राखिये, एकतुम्हारी आस ५७१

इति रागरत्नाकर दूसराभाग समाप्त.

श्रीः।

# अथ हियहुलासप्रारंभः

## दोहा।

प्रथमहिं ताको सुमिरिये, जिनदीन्हींगुणज्ञान ॥ ज्ञानीगुणगावैंसदा, ध्यानीधरैंजुध्यान ॥ १ ॥ अंबरथाप्योथंभविन, धरणीअधरधराय ॥ मनुषरूपह्वै अवतरयो, देखतकलिको भाय ॥ २ ॥ वाबिनतीनोंलोकमें, दूजानाहींकोय ॥ मनमोंनिज करिदेखिये, हानीहोयसुहोय ॥३॥ पुनिकछुवरणौंरीतिरस, रसहै जगको जीव ॥ रसनारसकोजसकहै, सुनिसुखउपजैहीव ॥ ४ ॥ हियहुलासयाग्रंथको, राख्योनामविचार ॥ यामेंसगरेरागके, सबैरूपशृंगार ॥ ५ ॥ आदिनादअनहदभयो, तातें उपज्योवेद ॥पुनिपायोवावेदतें, सकलसृष्टिकोभेद ॥ ६ ॥ प्राणखरे षट्रागसुनि, तब उपज्योवैराग । वारितरुनैवृद्धको, तातेभावतराग ॥ ७ ॥ जगकोधीरजरागहै, रागसंगकीखान ॥ मनमंजनइहरागहै राग प्रेमकेप्रान ॥ ८ ॥ रागअभूषणरूपको, रूपरागकोभोग ॥ याहीते सबकहतहैं, रागरंगसंयोग ॥ ९ ॥ रागहरैसबरोगको, राग चहै रसभोग ॥ विरहीबूझैरागको, उपजैविरह वियोग ॥ १० ॥

## अथषट्रागवर्णनम् ।

दोहा–रागप्रथमभैरोकह्यो, मालकोस पुनिजानि ॥ हिंडोलरागतीजोकहत, दीपकरागबखानि ॥ ११ ॥ श्रीरागकविकहतहैं, मेघराग पुनिसार ॥ षट्रागनके नामये, कहैंभेदविस्तार ॥ १२ ॥

## अथरागनकीरागिनी वर्णनम् ॥

दोहा–भैरोंकीधुनिभैरवी, बंगालीवैरारि ॥ मधुमाधवअरुसिंधवी, पाँचौंविरहिनिनारि ॥ १३ ॥ टोडीगौरीगुनकली, खंभायतपहँचानि ॥ औरकुकविकोकहतहैं, मालकोसकीजानि ॥ १४ ॥ रामकलीपटमंजरी. और कहै देवसाखि ॥ एनारीहिंडोलकी, ललितविलावलराखि ॥ १५ ॥ देशीनटअरुकान्हरो, केदारोकामोद ॥ दीपककीप्यारीसबै, महाप्रेमपरमोद ॥ १६ ॥ धनाशरीआसावरी,

मारूबहुरिवसंत ॥ श्रीरागकीरागिनी, मालसिरी है अंत॥१७॥भोपाली अरुगूजरी, देशकारमल्लार॥बंकवियोगनिकामिनी, मेघरागकीनार१८

## अथषट्रागनकेगुणवर्णनम् ।

भैरोंसुरसुरतागहै, कोल्हूचलैंजुधाय। मालकोसजबजानिये,पाहन पिघलिबहाय ॥ १९ ॥चलैंहिंडोलेआपते, सुनतरागहिंडोल ॥ बरसै जलघनधारअति, मेघरागकेबोल ॥ २० ॥ श्रीरागकेसुरसुने, सूखो वृक्षहराय ॥ दीपकदीयोबरिउठै जोकोउजानैगाय ॥ २१ ॥

## अथरागका समयवर्णनम् ।

दोहा—पिछलेपहरेनिशिसमै, भैरोंरागबखान ॥ मालकोसतबगाइ- ये, जब सब निकसैभान ॥ २२ ॥ एक पहरजबदिनचढै, करैरागहिं- डोल ॥ ठीकदुपहरीकेसमै, दीपककेसुरबोल २३ ॥ श्रीरागचौथेपहर जोलौंदिन अथवाय ॥ मेघरागजबहीभला, तबमेहबरसाय ॥ २४ ॥ फागुनमेंएरागसब, जागतआठौयाम ॥ बसंतऋतुमेंनिशिसमै, एक यामविश्राम ॥ २५ ॥ भैरोंशरदकुसकाशिशिर, अरुहिंडोलबसंत ॥ दीपकग्रीषमहेमश्री, मेघसुपावसअंत ॥ २६ ॥

## अथबाजनकेभेदवर्णनम् ।

जगमेंसबसुरताकेहैं बाजेसाढतीन ॥ खालतारअरुफूंकपुनि अरध- तालसुरहीन ॥ २७ खालनगारेढोलडफ, औरपखावजजानि । तारतैं- बूरावीनहै,बहुरिरबाबबखानि २८ फूंकनफीरीबाँसुरी,सुरनाई करनाय॥ तालमँजीराझाँझसब, बाजेदियेबताय ॥ २९ ॥ आधोबाजोकहतहैं, कठतारीसुरहीन ॥ भेदकहेबाजेनके, गुणिजनजेपरवीन ॥ ३० ॥

## अथआलापकरनकीयुक्ति ।

दोहा—बैठेआसनऊंटके, तोशुधहोयअलाप ॥
चलतेटेढेसुरभरे, जानोमहाकलाप ॥ ३१॥

## अथस्वरनिमित्तसरस्वतीचूरण ।

दोहा—शाखाहूलीमुलहटी, ब्राह्मीवासाआनि । हरडकूठवचबावची सघोंजीराजानि ॥ ३२ ॥ भंगरेहअजमोदपुनि, बहुरिशतावरिलेहु ॥

समकारि पीसे छानिकरि,प्रातसुमुखमेंदेहु ॥ ३३ ॥एकहथेलीभरिसदा, साधैदिनचालीश ॥ सुरसुंदरहो बुद्धिवहु विधिविद्याजगदीश ॥३४॥

इति हियहुलास सम्पूर्णम् ।

---

# अथ रागमालाप्रारम्भः

## भैरोंरागकोस्वरूपवर्णनम् ।

दोहा—भैरोंशिवछविशिरजटा, श्वेतवसनत्रयनैन ॥ मुंडन कीमालागरे, सिंहरूपसुखदैन ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ शिवमूरतिभैरों को भावबन्यो त्रयनैन सुमुंडकि मालगरे ॥ पटश्वेतसबैतनुमें पहरे हिरदै भगवानको ध्यानधरे ॥ तिरशूलबिराजतहै करमें सब भामिनिकी मतिलेत हरे ॥ मुख छारलगी द्युतिदूनी भई चित चाहनमें छवि जातछरे ॥ ३६ ॥

## अथभैरों × की रागनीभैरवीकोस्वरूप ।

दोहा—शिवपूजत कैलाशपरि दोउकरनमेंताल ॥
श्वेत चीर अँगिया अरुण, रूपभैरवी बाल ॥ ३७ ॥

## अथबंगाली * रागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—भस्मपिटारी कर, गहे हाथलिये तिरशूल ॥
बंगालीव्याकुल भई, गईसबैसुधिभूल ॥ ३८ ॥

## अथवैरारी ? रागिनी [illegible]स्वरूप ।

दोहा—कदम + पुष्प काननधरे, [illegible]वसनवैरार ॥
शीशकेश सोहतछुटे, [illegible]कंचन शृंगार ॥ ३९ ॥

## अथ=मधुम[illegible]धवीस्वरूप ।

दोहा—कंचनतनुलोचनकम[illegible]ल, नागरिमहाअनूप ॥
पियपैबैठीहँसतहै, [illegible]मधुमाधवीस्वरूप ॥ ४० ॥

× सुर ॥ ७ ॥ * सुर ॥ ७ [illegible] ॥ + सुर ॥ ७ ॥ = सुर ७

## अथ ÷ सिंधवीरागिनीस्वरूप ।

दोहा–कानफूलदुपहारिया, पहरेबस्तरलाल ॥
क्रोधवंत तिरशूलकर, रूपसिंधवीबाल ॥

## अथ मालकौंसराग * कोस्वरूप ।

दोहा–मालकोसनीलेवसन, श्वेतछरीलियेहाथ ॥
मुतियनकीमालागरे, सकलसखीहैंसाथ ॥ ४२ ॥

## अथ सवैया ।

कौसकको अपमानभलो तनु गौर विराजतहै पटनीले ॥
माल गरे कर श्वेत छरी रसप्रेम छक्यो छविछैलछबीले ॥
कामिनिके मनमोहतहै सबके मनभावत रूप रसीले ॥
भोर भये उठि बैठ्यो ही भावत नागर नायक रंग रँगीले ॥ ४३ ॥

## अथमालकौंसकीरागिनीटोडीकोस्वरूप ।

दोहा–टोडी करवेणी गहे, गावत पियके हेत ॥
चंचल छवि मृगमोहनी, पहरे बस्तर श्वेत ॥ ४४ ॥

## गौरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा–गौरीछवि अति साँवरी, अंध कूप धरिकान ॥
तृषावंतनितकामकी, गावतमीठीतान ॥ ४५ ॥

## अथगुनकलीरागिनीकोस्वरूप ।

...र गुनकली, बैठी पियके पास ॥
दोहा–छुटेकेशा...ही, अतिहीचित्त उदास ॥ ४६ ॥
नीचीग्रीवाको...रागिनीको स्वरूप ।
खंभायतरा...वतकोकिलवैन ॥
दोहा–खंभायत गोरेवदन, ग... कामवती दिनरैन ॥ ४७ ॥
अतिआतुर चातुर खरी, ...नीस्वरूप ।
अथककुविराग... ...ी पियके संग ॥
दोहा–ककुविनायकानिशिसमै, जा... अंगभेरंग ॥ ४८ ॥
रति मानै के चहन अति... ॥

## अथहिंडोलरागस्वरूप।

दोहा–पीतवसनहिंडोलके, है जु हिंडोलमाहिं।
सखीझुलावैंचावसों, गाय गायमुसकाहिं॥ ४९॥

## सवैया।

कीन्हेबनावमहाछवि सुंदर भावंत बैठ्यो हिंडोलहि डोलै॥
झूलझुलावत औरनिहूं सब गावतहै सखियाँ मुखखोलै॥
गोरे जो गात दिपात भरीद्युति दामिनिसी मानो पीत पटोलै॥
केलिकरै अबला अलबेली अलोलसबैरस काम किलोलै॥ ५०॥

## अथहिंडोलरागकीरागिनीरामकलीकोस्वरूप।

दोहा–रामकली नीले वसन, कंचनसी सबदेह॥
प्रियवाणी गावत उठी, पियके परम सनेह॥ ५१॥

## अथपटमंजरीरागिनीस्वरूप।

दोहा–विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनुछीन॥
सखी सीख अति देतहै, भई प्रेम आधीन॥ ५२॥

## देवसाखिरागिनीस्वरूप।

दोहा–पियके करपर कर धरे, अति व्याकुलमनकाम॥
तनुदुर्बलदेवसाखिहै, महाविरहनीनाम॥ ५३॥

## ललितरागिनीस्वरूप।

दोहा–ललित गरे माला पुहुप, सुंदर तरुणी जानि॥
गोरीछवि वस्तर अरुण, वदनमदनकी खानि॥ ५४॥

## बिलावलरागिनीकोस्वरूप।

दोहा–कामदेवको ध्यान धरि, पटते पटसंगीत॥
करत शृँगारविलावली, नीले वस्तरप्रीत॥ ५५॥

## अथदीपकरागकास्वरूप।

दोहा–दीपक गजकी पीठपर, बैठ्योबागेलाल॥
मुक्तमालपहरेगरे, चहुँओर रसवाल॥ ५६॥

## सवैया ।

दीपकको परतापबड़ो चढ़ि बैठ्यो गयंदकी पीठि विराजै ॥
अंबरराता शरीर सबै मुकतानकी माल गरे छविछाजै ॥
संगसखी सब सोहतहैं तिनमाहिं जो आय गयंदसो गाजै ॥
साँवरोरूप्र अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतरभाजै ॥ ५७ ॥

## अथदीपकरागकीरागिनीदेशीकोस्वरूप ।

दोहा—देशीकिवस्तरहरे, कामसताईनार ॥
पतिकोटेर जगावती, मिसकरिवारंवार ॥ ५८ ॥

## नटरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—अरुन वरन सगरे वसन, नटवासीनरनारि ॥
ग्रीवापकरे करनसों, पियतनुरहीनिहारि ॥ ५९ ॥

## अथरागिनीकान्हरोस्वरूप ।

दोहा—शीशपत्र गजदंतको, करनाँगीतरवारि ॥
मोरकंठकेवरनहै, रूपकान्हरोनारि ॥ ६० ॥

## रागिनीकेदारोस्वरूप ।

दोहा—शीशजटासबतनु लटा, गरेजनेऊनाग ॥
केदारोइहरूपहै, धरैध्यानवैराग ॥ ६१ ॥

## अथकामोदरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—कामवंतकामोदनी, पीतवसन वनदास ॥
चहूँओर पियकोतकत, अतिही चित्त उदास ॥ ६२ ॥

## अथ श्रीरागकोस्वरूप ।

दोहा—श्रीयरागकेकरकमल, पुहुपरूपपटलाल ॥
वरस अठारहकोतरुण, गावत कंठरसाल ॥ ६३ ॥

## श्रीरागकी—सवैया ।

वर्ष अठारहको तरुनौ मुख देखतही सबके मन भावै ॥
वामसबै वशकी अपने गुण गायकै भावते भेद बतावै ॥

रातो जो बागो विराजतहै करवारिज फूललिये मुसकावै ॥
पुष्पकेरूप स्वरूपबन्यो सबहींमें भलोश्रीराग कहावै ॥ ॥ ६४ ॥

## अथश्रीरागकीरागिनीधनाश्रीकोस्वरूप।

दोहा—धनासरीरोवतखरी, हिरदैविरह अपार ॥
सबतनु पीरोह्वैरह्यो, निपट विरहनी नार ॥ ६५ ॥

## आसावरीरागिनीस्वरूप ।

दोहा—चंदनटीको भाल पर, गरेनागकोहार ॥
छविअतिसुंदरसाँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ६६ ॥

## अथमारूरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—मारूकेमालागरे, पियेप्रेममधुमात ॥
तरुणीसुंदरसाँवरी, बैठीअतिअरसात ॥ ६७ ॥

## वसंतरागिनीकोस्वरूप।

दोहा—मोरपंखशिरपरधरे, वसन जु पीतवसंत ॥
काननमोरजुअंबके, चहुँदिशिभौंरभ्रमंत ॥ ६८ ॥

## मालसरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—मालसरीदुर्बलवदन, सखीहाथपरहाथ ॥
अंबतरेबैठीरहत, बिछुरेपियकोसाथ ॥ ६९ ॥

## अथमेघरागकोस्वरूप ।

दोहा—श्यामवसनहैमेघको, गहैहाथकरवारि ॥
अतिआतुरचातुरखरो, गावतसुरतिविचारि ॥ ७० ॥

## मेघरागस्वरूप सवैया ।

मेघमलारमहाद्युतिसुंदर इंद्रहीकीछविआपबनो ॥
पहरेपटश्यामगहै तरवारि जुग्रंथनमें इहभाँतिभनो ॥
जैसोजहाँचहियेसोइअंगसुतैसियभाँतितेठीकठनो ॥
कामकोआतुरहै अतिहीं तियकेरतिकोचितचावघनो ॥ ७१ ॥

## अथमेघरागकीरागिनीभोपालीकोस्वरूप।

दोहा—भोपालीविरहनिबडी, केशरिगेरेचीर ॥

भयोविरहकीज्वालते, पियरोसबेशरीर ॥ ७२ ॥

## अथगूजरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—विरहसताईगूजरी, रोवतछूटेकेश ॥
कामदेवकाननलग्यो, इहैदियोउपदेश ॥ ७३ ॥

## देशकाररागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—देशकारकंचनवरण, खेलतपियकेसंग ॥
हियहुलासजोकामकी, चढ्योचौगुनोरंग ॥ ७४ ॥

## अथमलाररागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—वीनगहेगावतबहुत, रोवतहैजलधार ॥
तनुदुर्बल विरहादही विरहिनिनारिमलार ॥ ७५ ॥

## टंकरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—सेजबिछाईकमलदल, लेटिरहीमनमारि ।
लेतउसासजुसीयसे, टंकवियोगिनिनारि ॥ ७६ ॥

इतिषट्राग तीसरागिनीनकेस्वरूपवर्णनम् ।

## अथ आमेजी राग वर्णन ।

दोहा—रागरागिनीसबकहे, जैसीजाकीरीति ॥
अबआमेजीरागको, सुनौसकलकरिप्रीति ॥ ७७ ॥

## छप्पय ।

देशकारकोपुत्रपासदरशातराजघन ॥ मंडितमुखतंबोलतेजबल गहरगौरतन ॥ श्वेतसरसमिलिवसनकंठमणिमालमनोहर ॥ कंज-अक्षशिरछत्रविजनदहुँविदितविजैवर ॥ बैठ्योकल्याणसिंहासनहिं, रतनरागसंचारियो॥पंडितप्रवीनपरिजनसहित, दिवसअंतउच्चारियो॥

## दोहा ।

तिलकगौडकामोदये, मिलेमिश्रतामान ॥ इनकेकियेअलापको, जानौसुधकल्यान ॥ ७९ ॥ तिलकपर्जकामोदयुत, आलापिनमें होत ॥ कामोदकपहलेकह्यो, बहुरिगौडकोसेत ॥ ८० ॥ इतनेमि-लिआलापसों, श्लेषसकलसरसाय ॥ सुरउचार यों समुझियो, प्रगट

रूपदरशाय ॥ ८१ ॥ शंकरभरनस्वरूपहै, गौररक्ततनुवास ॥ कमलमालशृंगारहै, सखी रूपहैतास ॥ ८२ ॥ प्रथमरागकेदारमें मिलैबिलावलआनि ॥ इनकेमिले अलापसो, शंकरभरनिसुजानि ८३ केदाराईमनमिलै, मिलैशुद्धकल्यान ॥ इनकेमिलेअलापसों, राग हमीरद्दजान ॥ ८४ ॥ केदारोकल्याणसम, तनकबिलावलभास ॥ इनकेकियेअलापसों, ईमनहोतउजास ॥ ८५ ॥ सारँगमारूकेमिले, केदारोसमआनि ॥ मिश्रितकरिआलापिये, इहेविहंगमजानि ॥ ८६ ॥ तीनिरागतोयेमिलैं, फेरिमलारमिलाय ॥ इनकीसमतासोंनहीं, सो सावंतकहाय ॥ ८७ जैतसिरीशंकरभरन, नटनारायणतुल्य ॥ इन केमिलेविभागसों, रागसरस्वतीतुल्य ॥ ८८ ॥ बहुलाआसावरिमिलै अरुमलारसमभाग ॥ कछुकमेलिगंधारको, षड्जजानियोराग ॥ ८९ प्रथमपूरवीनाटसुध, धनाशरीसमभाय ॥ समलैभागअलापिये, भी-वपलासीआय ॥ ९० ॥ रामकलीपुनिगूजरी, गुनकलीजुगंधार ॥ पूरविरागनिमिश्रिता, शक्तिवल्लभासार ॥ ९१ ॥ भैरवसुधिआसावरी अरुगौडीकोमानि ॥ देवागिरीसंभावले; योंगंधारहिजानि ॥ ९२ ॥ बिलावलीवागेश्वरी, नूनबिलावलशुद्ध ॥ वागेश्वरसुरपूरहै रागसुहा सुदबुद्ध ॥ ९३ ॥ मिलिधनासिरीकान्हरो, संभागेनिआलाप ॥ सुर उचारसोंजानियो, बागेसुरीजुछाप ॥ ९४ ॥ मूलसदेवगिरीगिनौ, नटम-लारहैनून ॥ करिसमानआलापिये, सारँगरागसितून ॥९५॥ समजुसारँगकीसुनौ, दिनग्रीषमऋतुपाय । द्वितिययामतेपहरलग, गुनीरूपदर शाय ॥ ९६ ॥ आसावरीअहीरिमिलि, समभागिनिउच्चार । तोलकरो आलापको, सिंधुरामगुनकार ९७ भैरव पंचम गूजरी, बंगाली गंधार । संभागिनिउच्चारसों, सोरठसबसोंसार ॥ ९८ ॥ एकअहीरीरागिनी, करनाटीसमजोर । रामअडानोजानिये, तानसुमिलिताघोर ॥ ९९ ॥ श्रीतीनिकरनाटकी, मंगलअष्टप्रमान॥करिसमान आलापिये, जानिपूरि यातान ॥१००॥ देशकारिअरुगूजरी, स्वल्परूपआरंभ॥ तानमिलवैयु क्तिसोंरागअहीरीयंभ ॥ १ ॥ फिरिदसूकरनाटयो; समताकैरसमस्त ॥

छायासावतअंडहै, भूपालीपरसस्त ॥ २ ॥ जैतशिरीअरुद्रावडी समलेकरोउचार । श्रुतिभंगननहिंसोभिये, धौलसिरीविस्तार ॥ ३ ॥ जैतश्रीकरनाटकी, केदारोकल्यान । समकरितानामिलाइये, मंगलअष्टप्रमान ॥ ४ ॥ प्रथमशुद्धकल्यानमें, मिलैजैतश्रीआनि । उभयरूपगायालखै, जैत कल्यानहिजानि ॥ ५ ॥ मारूटोडीरागिनी आसामिलैसमान । इनहीकीसंभावना, षेमपरजपहिचान ॥ ६ ॥ प्रथमपूरवीसारँगहि, जैताशिरीकोजानि । एसमभाग अलापिये, देवगिरीपहिचानि ॥ ७ ॥ कामोदकषड्जागयो, समकरिकरै अलाप ॥ तिलकरागकोजानिये, मिटतसकलसंताप ॥ ८ ॥ सिंधूअरुवडहंसको, नूनअधिकसंभाव॥इनकेदुहूँप्रतापते, शिवरीरागहिगाव ॥९॥धनासिरी शिवरीनिरा, समअलापकोकीन । कहतकुमारीरागिनी, तानतरलपरवीन॥११०॥चतुरविहारीसममिलै, धनाशरीसमजानि॥चैतीमारूचारिये, वडहंसहिपहिचानि ॥११॥ चतुरविहारीरागिनी केदारहिसमभाग॥ इनकेहोतमिलापसों, लंकधैनइहराग ॥ १२ ॥ नटनारायणशुद्धनट, औरमलारमिलाय । इनकेमिलेअलापसों, रागमाधवीगाय ॥ १३ ॥ मधुमाधवलकधैनलै शुद्धविलावलआनि ॥ चौथेसंकरभरनसों, नटनारायणजानि ॥ १४ ॥ ककुभविलावलपूरवी, केदारो समभाग ॥ इनकजुरे मिलापसों, इहेदत्तनटराग ॥१५॥ धौलसिरीदेसाख मिलि, फेरिविलावलिमेलि ॥ करिउचारसमभागसों, जैतशरीकीकेलि॥१६॥ केदारोकल्यानहै, औरविलावलवाम । इनकेसमआलापते, तीछन रागसुनाम ॥ १७ ॥ रामकलीअरुगूजरी, देशकरीबंगाल, । पंचमसमभागनिमिलै, बहुलीराग विशाल ॥ १८ ॥ सोरठ और धनासिरी विलावलीसमकीन ॥ इनकेमिश्रितगानते, जैजैवंतिप्रवीन ॥ १९ ॥ धनाशरीटोडीमिलै, समकरितानविलाव । रागअनूपमनामहै, तानसुरनतेगाव ॥ १२० ॥ नटसंभागकल्यानकरि, मिश्रितउभैबताय । न्यूनअधिकसमजानिकै, इहैशुद्धनटगाय ॥२१॥ नटजोमिलैहमीर सों उहहैनाटहमीर। नटकेदारोसमकरै, नटकदारहमीर ॥ २२ ॥ सारँगमें टोडीमिलै, मिश्रितउभप्रमान । समअलापसोंगाइये, सारँगगौडनि-

धान ॥ २३ ॥ प्रथमधनाश्रीपूरवी, दाऊसुरसंयोग ॥ इहधनाशरी पूरवी, गुणिजनगावोलोग ॥ २४ ॥ गौरीसारँगसमकरो, स्वल्पलालितकीभास ॥ सोचैती गौरीकही, समझोबुद्धिप्रकास ॥ २५ ॥ सारँगकेसुरसोंमिले, करोगौडकोज्ञान ॥ तामेंपूरोपूरवी, रागपूरिया जान ॥ २६ ॥ आमेजी ये रागहैं, कहैंगरातिजनगाय । भेदरागअरुरागिनी, एसबदियेबताय ॥ १२७ ॥

राग ६ रागिनी ३० रागरागिनी ३६ ये मिलिकै आमेजी

रागरागिनी ९९९ मियां तानसेन गाई संवत

१८५५ चैत्रवदि २ शुक्रवार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे द्वितीयभाग समाप्त ।



इति

# रागरत्नाकर द्वितीयभाग

समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः ।

# अथ रागरत्नाकर ।

## तीसराभाग प्रारंभः ।

श्लोक–नाहं वसामि वैकुंठे योगीनां हृदयेनच ।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥
दोहा–हरिपद प्रीति न होय, बिन हरि गुण गाये सुने ।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥
अपनी ओर निहारि कै, क्षमा करो अपराध ।
जिहि तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध ॥
संतनको यह परम धन, सब ग्रंथनको सार ।
भक्तनको सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥
सादर जो जन याहिको, पढैं नित्त कर नेम ।
निश्चय ते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥
हरि चरणन दृढ प्रेम जिहिं, धन्य धन्य ते धन्य ।
भक्तराम पर द्रवहिं सब, हृदय होय परसन्य ॥
पढ़त सुनत याके कछू, जो मन होय हुलास ।
मेरी हू सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥
जय वृंदावनचंद्र की, जय जय जय सुखरास ॥
निज चरणन में राखिये, एक तुम्हारी आस ॥

### कवित्त ।

गिरिको उठाय व्रज गोपको बचाय लियो अनल ते उबारचो पुनि बालक मँजारी को ॥ गजकी अरज सुन ग्राह ते छुटाय लीनो राख्यो व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राख्यो गज घंट तरे बालक विहंगनको राख्यो पण भारत में भीष्म ब्रह्मचारीको ॥

त्रिविध ताप हारी निज संतन सुखकारी एक मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १ ॥

कमला निवास निजदासनकी पूरेआस ताके विसवास विषभख्यो मीरा बाई है ॥ केशव कमलनयन संतन करन चेन सेन हित भये भूप मंजन को नाई है ॥ इंद्र जू को हरचो मान सुदामाको दियो दान भक्त जान छान नामदेव जीकी छाई है ॥ नंदके कन्हाई निज संतन सुखदाई बलदेव जूके भाई सो हमारो सहाई है ॥ २ ॥

काहूके अधार सेवा वणिज व्योपार हूको काहूके अधार थित वित्त खेत गामको ॥ काहूके अधार तन सार भ्रात बंधुनको काहूके अधार प्रिय सार निज नामको ॥ काहूके अधार विद्या बुद्धि बल को है काहूके अधार हाथी घोड़ा धन धामको ॥ मैंतो निराधार मेरी हरिहि करेंगे सार मेरे तो अधार एक केवल हरि नामको ॥ ३ ॥

केऊ कर्म वादी केऊ अन्न भों प्रसादी भये केतनकी मति भई न्याय सांख्य मतकी ॥ केते जग दानी यम नेमको प्रमाणकरैं केते परतीत गहैं तीरथ हूं व्रतकी ॥ केऊ ब्रह्मचारी केऊ योगी जटाधारी भये वानप्रस्थ केतनको दया साँच सतकी ॥ मैं तोहूं पतित मेरी कोन दिवस ह्वैहै गति कमलापति राखो पति मोसेहू पतितकी ॥ ४ ॥

केऊ प्रेम लक्षण भगति में बिचक्षण ह्वै नीके भांति सेवा कर जाने निधि ज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्वबोध सेती आतमको शोध करें साधैं नित्त योग गति जानै रोध पानकी ॥ केऊ तनु सासना सवासना जतन सहैं केउक उपासना गणेश शिव भानकी ॥ हौंतो हूं अजान ताको काहूसे पछान नाहिं कोऊ कछु जानै हौं तो जानूं नाथ जानकी ॥ ५ ॥

जैसे खग बालकको राख लियो घंटा तरे लाक्षा गृह बीच राख्यो पांडव सब साथ को ॥ राख लियो परीक्षितको माताके उदर माहिं राख्यो ब्रज ग्वाल बाल गिरि धारचो निज हाथको ॥ पारथके स्वारथको सारथी भये हो तुम सखा निज जानके जितायो है

भार्तको ॥ पावक प्रजारी तहां राख्योहै मजारीको वैसी भाँति राखो नाथ मोसम अनाथ को ॥ ६ ॥

केऊ ध्यान धारना समाधि विषे लीन भये मिलावैं परमात्माको आत्मा विचारी को ॥ केते निष्काम मन अजपाको जाप जपैं केते भजैं शंकर धतूर के अहारीको ॥ केते ह्वै सकाम मंत्र यंत्र आठों याम जपैं केते लोभ दामते गणेश सुखकारी को ॥ तेरो ध्यान ज्ञान तेरो आसरो तिहारो मोहिं कोई कछु ध्यावो मैंतो ध्यावौंगिरिधारी को

लीला अगाध ब्रजवासिनके हेत सेती धना जूके खेत विन बोये उपजाई है ॥ भीषमको प्रण और द्रौपदीकी लाज राखी अशरण शरण कीरति वेद मध्य गाई है ॥ बूड़त बचायो ब्रज कर पर गिरि धार्यो साह बन नरसी की हुंडी सकराई है ॥ करिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी मोपर ब्रजराज गजराज की सी आई है॥

दीनबंधु दयासिंधु मेटत दुख द्वंद्वन के ऐसे तो अनेक विविध ग्रंथन में कही है ॥ गोप मेह ते उबारे राजा बंदि ते निवारे भारत में पारथ हित एते शर सही है ॥ नामा कबीर गीध गणिका अरु कीर तारे चीर बाढ़े द्रौपदीको जगत यश लही है। वेर हेर मांझधार मेरो दुख वार देके एहो नाथ करुणानिधि मेरो हाथ गही है ॥ ९ ॥

तबतो भगतन सहाय काज ब्रजराज कंसको बिदार मति धरी न चित्त मामा की ॥ बालद भरल्याये जुलाहाके दयाल होय गऊ हूं जिवाई अरु छानि छाई नामा की ॥ संतनको प्रण ग्वाल गण राख्यो व्याल सेती विपति हरी संपति अमित दे सुदामा की ॥ अहो बलवीर तुम द्रौपदीको बाढ्यो चीर हरत क्यों न पीर अब मोसे निष्कामा की ॥ १० ॥

कबको पुकारत हों सुनत नहीं एको बात एहो नँदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो ॥ कहतहैं दयाल सोतो दयाहूं न देखियत मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो ॥ धर्यो हो नृसिंह रूप तबहीं प्रहलाद काज अबतो न लाज कछु गोधन में ग्वाल हो ॥ डार्यो

तेल कानन में कि बस्यो जाय काननमें शेष सैन लेट कीधौं पौढे वर पताल हो ॥ ११ ॥

बेर बेर टेर टेर जीभहूं शिथिल भई हरत न मेरी पीर कैसे अभिमानी हो ॥ कृपण भये हो कीधौं मौनको गहेहो कान्ह दयाहूं न आवै अब कैसे उनमानी हो ॥ कैसेकै उदार तुम होत हो मुरारि प्रभु गोपिनके प्यारे छांछ दूधहूके दानीहो ॥ बक बक थकी बानी कछुहू न चित्त आनी जानी हम जानिबूझ करत आनाकानी हो१२॥

वेद औ पुराणन में करतहैं बखान ऐसे सतयुग के बीच ध्रुव प्रहलाद को तूठे हो ॥ त्रेताके बीच नीच कुलकी न करी कानि भीलनीके हाथ प्रभु भखे बेर जूठे हो ॥ द्वापरके अंत तुम द्रौपदी की लाज राखी पांडवके काज दल कौरवके रूठे हो ॥ अब कलि काल में जो करो न सहाय मेरी तो सब लोग हँसके कहैंगे हरि झूठे हो१३

गौतमकी नारी ताकी कथा बहुत विस्तारी यद्यपि उधारी तिन छिद्र उघराय के ॥ दुःशासन द्रौपदीके सभा बीच केश खैंचे तब लाज राख लई लाजकूं गमायके ॥ भयो बल हीन तनु अतिही अधीर छिन्न तब गज काज हरि आये तुम धायके ॥ दीन के दयालु प्रभु यामें तो संदेह नाहीं करत हो सहाय आप नीके तनु तायके१४

## सवैया ।

दास सुदामाको संपति दै चुटकी भर चावल पाहिलेहि लीने ॥
सागके पात पचोलीके खाय तब ऋषि भोजन दीने नवीने ॥
कंस की दासी पै चंदन ले पटरानी करी कहों मान करीने ॥
जो कारज जग में यदुराय अकोर लिये विन कौनके कीने ॥ १५ ॥

## कवित्त ।

ब्रह्मा महेश शेष नारद गणेश कहैं भक्तनके काज हरि आप देह धारी है ॥ मंगल करण दुख द्वंद्वके हरण पुनि पोषण भरण ऐसे रटैं नर नारी है ॥ विरद भक्तवत्सल सो वेद हू पुराण कहैं जानत हों जाके अब खोवे की विचारी है ॥ द्वारकाके बासी भये जायके मवासी अब मेरी होत हासी यामें हासी तो तिहारीहै ॥ १६ ॥

करत अपराध भोर सांझ तरकौर नित अतिही कठोर मति बौर को निकामहौं ।। आतुर अधीर ताते धीरताधरत नाहीं ऊंच नीच बोल गति बकों आठो याम हों ।। अरचा न जानूं कछु चरचा न बूझत हों कछु हेत प्रात से न लेत हरि नाम हों ।। सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो कहै माधो दास प्रभु तिहारो गुलाम हों१७।।

## छंद ।

जन्मे श्री कृष्ण मुरार भगत हित कारने ।। मथुरा लियो अवतार गोकुल झूलें पालने ।। तिथि आठें बुधवार भाद्रपदकी करी ।। रोहणी नक्षत्र आधीरातको जन्मे हरी ।। धन्य धन्य वसुदेव देवकी जहां प्रभु हैं अवतरे ।। धन्य धन्य गोपी ग्वालकि जिन प्रभु बसकरे धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करें ।। दुंदुभी बजत आकाश सुमन वर्षा करें ।। ब्रजवासी गोरस भर भर कर लावहीं ।। दधिकांदो बाबा नंद सुकीच मचावहीं ।। बाजत ताल मृदंग वीण अरु बांसुरी ।। निरखैं गोपी ग्वाल चलौ चित चावरी ।। यशुमति चीर पहराय नौरँग भई ग्वालनी ।। सुंदर वदन निहार चकित भइ भामिनी ।। श्री बलभद्रजूके बीर असुर दल खंडना ।। भगत बछल महाराज सुयदुकुल मंडना ।। शंकर धरत हैं ध्यान सुगोद खिलावहीं ।। सो मुख चूमत माय सुपलन झुलावहीं ।। श्रीनंददास नेह चरण चित लावहीं ।। हरि गुण मंगल गाय जन्म फल पावहीं ।। १८ ।।

## राग जंगला ।

जै जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा ।। दोउ कर जोड़ विनवों प्रभु मोरी सुनो बाता ।। तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ।। तुमही सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ।। जय० ।। चौरासी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ।। निशि दिन प्रभु मोहिं राखो अपने सँग साथा ।। जय० ।। राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग चारों भैया ।। जग मग ज्योति विराजे शोभा अति लहिया ।। जय० ।। हनुमत नाद बजावत नेवर ठिमकाता ।। सुवर्ण थाल आरती करत कौश-

ल्या माता ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै शोभा अति भारी ॥ मनीराम दरशनको पल पल बलिहारी ॥ जय० ॥ १९ ॥

## कवित्त ।

जलकी न घट भरें मगकी न पग धरें घरकी न कछु करें बैठी भरें सांसुरी ॥ एकै सुन लोट गई एकै लोट पोट भई एकनके दृगन निकस आये आंसुरी ॥ कहै रसनायक सो ब्रज बनितन बीध बधिक कहाये हाय हुई कुल हांसुरी ॥ करिये उपाय बांस डारिये कटाय नाहिं उपजैगो बांस नाहिं बाजे फेरि बांसुरी ॥ २० ॥

भिक्षुक तिहारो कहां बलि मखशाला जहां सर्पन को संगी कहुं ह्वै है क्षीरसागर में ॥ एरी बहुरंगी बैलवालो कहां नाचत है कीन्हे तिरभंगी कहीं ह्वैहै ग्वाल गन में ॥ चाउर का चबैया कहूं होय है सुदामा पास विषको अहारी कहां पूतनाके घर में ॥ सिंधुसुता आन मिली तर्क सों तर्ककरी गिरिजा मुसक्यात जात झारी लिये कर में ॥२१॥

## सवैया ।

शेश महेश गणेश दिनेश सुरेशहु जाहि निरंतर गावैं ॥
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं ॥
नारद लै शुक व्यास रटैं पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भर छाछको नाच नचावैं ॥२२॥
गुंज गरे शिर मोरपखा अरु चाल गयंदकी मोमन भावैं ॥
सांवरो नंदकुमार सबै ब्रज मंडली में ब्रजराज कहावैं ॥
साजैं समाज सबै शिरताजकी लाजकी बात कही नहिं आवैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियांभर छाछपै नाच नचावैं ॥ २३ ॥
आज गई हुती भोरहिं हों रसखान रई कह नंदके भौनाहिं ॥
वाको जियो युग लाखकरोर यशोमतिको सुख जात कह्योनहिं ॥
तेल लगाय लगाय के अंजन भौंह बनाय बनाय डिठौनाहिं ॥
डार हयेल निहारति आनन वारति ज्यों चुचकारति छोनाहिं ॥२४॥
धूर भरे अति शोभित श्याम जू तैसी बनी शिर सुंदर चोटी ॥

खेलत खात फिरैं अँगना पग पैंजनियाँ कटि पीरी कछोटी ॥
वा छबिको रसखानि विलोकत वारत कामकला निधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरि हाथ ते ले गयो माखन रोटी २५॥
एक ते एक अनेरे रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हें कन्हाई ॥
आवतहीं हों कहां लौं कहों कोऊ कैसे सहे अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटकी पटकी नाहिं छोडत चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखान तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूं कर छूटनपाई ॥२६॥
लोक कि लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रज चंद्र सलोनो ॥
खंजन मीन सरोजनकी छबि गंजन नयन लला दिन होनो ॥
रसखान निहार सके जु सम्हार कै को तिय है वह रूप सुटोनो ॥
भौंह कमान सु जोहन को शर बेधत प्राणन नंदको छौनो ॥ २७॥
सोहत हैं चँदवा शिर मोरके तैसिये सुंदर पाग कसी है ॥
तैसिये गोरज भाल विराजत तैसी हिये बनमाल लसी है ॥
रसखान विलोकत बौरी भई दृग मूंदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूंघट खोलों कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है ॥ २८ ॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रँग्यो रँग रातो ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो मुसकातो ॥
रसखान लखे मन खोय गयो मग भूल गई तनुकी सुधि सातो ॥
फूटि गयो दधिको शिर भाजन टूटि गो नैनन लाजको नातो॥२९॥
जा दिन ते निरख्यो नँदनंदन कान तजी घर बंधन छूट्यो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मार ने लूट्यो ॥
सागरको सरिता जिमि धावत रोक रह्यो कुलको पुल टूट्यो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूट्यो ॥ ३० ॥
बांकी बिलोकन रंग भरी रसखान खरी मुसकान सुहाई ॥
बोलत बैन अमीरस दैन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजन में पुर बीथिन में पिय गोहन लागि फिरौं यें री माई ॥
बांसुरी टेर सुनाय अरी अपनाय लई ब्रजराज कन्हाई ॥ ३१ ॥
देखनको सखि नैन भये सुखने तनु आवत गाइन पाछें ॥

कान भये इन बातनके सुनबेको अमीनिधि बोलत आछैं ॥
पै सजनी न सम्हार परै वह बांकी बिलोकन कोर कटाछैं ॥
भूमि भयो न हियो यह आली जहां पिय खेलत काछनि काछैं॥३२॥
खंजन नैन फँदे छबि पिंजरा नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई ॥
छूट गई कुल कानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्र लिखी सी भई सब देह न बैन कढ़ैं मुख दीन्हे दुहाई ॥
कैसी करौं जित जावँ तितै सब बोल उठैं यह बावरी आई ॥ ३३ ॥
बंक बिलोकन है दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत वारुनी पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपै झलकैं छबि कुंडल नागरि नैन विलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरे ब्रज बालनिके मन ईषद हांसीकि फांसी परे हैं ॥३४॥
अति लोक कि लाज समूहमें घेरके राख थकी सब संकटसों ॥
पल में कुल कानकी मेड नखी नहिं रोकी रुकीं पलकैं पटसों ॥
रसखानि सों केती उचाटि रही उचटीं नसकोच की औचटसों ॥
अली कोटि करी हटकी न रहीं अटकी अँखियां लटकी लटसों३५॥
आज सखी नँदनंदन री ताकि ठाढ़ोहै कुंजनकी परछाहीं ॥
नैन विशालकी जोहनको शर वेध गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूम खुमार गिरी रसखान सम्हार रह्यो तनु नाहीं ॥
तापर वा मुसकान की डौंड़ी बजी ब्रजमें अबला कित जाहीं ॥३६॥
जा दिन ते मुसकान चुभी उर ता दिन ते जु भयो ब्रज वारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो सुखकारी ॥
हौं सखी आवत ही बगरैं पग पैंड़ तजी रिझई बनवारी ॥
रसखान परी मुसकान के पानिन कौन गनै कुलकानि विचारी ३७॥
कौन को लाल सलोनो सखी वह जाकी बड़ी अँखियां अनियारी ॥
जोहनि बंक बिशाल के बानन वेधत है हिय तीछन भारी ॥
रसखान सम्हार परे नहिं चोट सुकोटि उपाय करो सुखकारी ॥
भाल लिख्यो विधि नेह को बंधन खोल सकै ऐसो को हितकारी ३८

मैन मनोहर बेनु बजे सु सजे तनु सोहत पीत पटा है ॥
यों दमकै चमकै झमकै द्युति दामिनि की मनु श्याम घटा है ॥
रसखान महा मधुरी मुखकी मुसकान करै कुल कान कटा है ॥
ये सजनी ब्रजराज कुमार अटा चढ़ि फेरत लाल बटा है ॥ ३९ ॥
नैन लख्यो जब कुंजनते बनिकै निकस्यो मटक्यो मटक्यो री ॥
सोहत कैसो हरा टटको शिर तैसो किरीट लसै लटक्योरी ॥
को रसखान रहै अटक्यो हटक्यो ब्रज लोग फिरै भटक्यो री ॥
रूप अनूपम वा नटको हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री ॥४०॥
एक दिना मुरली धुनि में रसखान लियो उन नाम हमारो ॥
ता दिन ते यह बैरी बिसासिनि झांकन देति नहीं है दुआरो ॥
होत चवाव बचाषनो क्यों कर क्यों अलि देखिये प्राण पियारो ॥
दीठ परे ही लग्यो चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४१ ॥
कानन दै अँगुर रहिहौं जबहीं मुरली धुनि मंद बजै हैं ॥
मोहनी तानन सों रसखान अटा चढ़ गोधन गैहैं तौ गैहैं ॥
टेर कहौं सिगरे ब्रज लोगन कालिह कोऊ कितनो समुझैहैं ॥
माई री वा मुखकी मुसकान सम्हार न जैहैं न जैहैं न जैहैं ॥ ४२ ॥

## कवित्त ।

गोरज बिराजे भाल लहलही बनमाल आगे गैयां पाछे ग्वाल गावैं मृदु तान री ॥ तैसी धुनि बांसुरी की मधुर मधुर तैसी बंक चित वनि मंद मंद मुसकान री ॥ कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ देख पीत पट फहरान री । रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन प्राणन रिझावै वह आवै रसखान री ॥ ४३ ॥

अबहीं गई खरिक गाय के दुहाइबे को बावरी ह्वै आई डार दोहनी यो पान की । कोऊ कहै छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ कहै मरी मरी गति हरी अँखियान की ॥ सास व्रत ठानै नंद बोलत सयाने धाय दौर दौर जानै मानै खोर देवतान की । सखी सब हँसै मुरझान पहिचान कहूं देखी मुसकान वा अहीर रसखान की ४४ ॥

ब्याही अनब्याही ब्रजमाहीं सभ चाहीं तासों दूनी सकुचाहीं दीठ परै जू जुन्हैया की । नेक मुसकान रसखानकी बिलोकतही चेरी होत एक बार कुंजन फिरैया की ॥ मेरो कह्यो मान अंत याको गुण मानहै री हौं तो हौं सकात खात जात सौंह भैया की ॥ माय की अटक तौलौं सासुकी हटक जौलौं देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैया की ॥ ४५ ॥

## सवैया ।

नैनन बंक बिशालके बाणन झेल सकै वह कौन नवेली ॥
वेधत है हिय तीषन कोर सों मार गिरी तिय केतिक हेली ॥
छोडैं नहीं छिनहूं रसखान सुलागी फिरैं द्रुमसों जनु बेली ॥
रोर परी छवि की ब्रज मंडल कुंडल गंडन कुंतलकेली ॥ ४६ ॥
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन जोहन मैं चित चोरत है ॥
बांके बिलोचन की अवलोकन नोकन कै दृग जोरत है ॥
रसखान मनोहर रूप सलोनेको मारग तें मन मोरत है ॥
काज समाज सबै कुल लाज लला ब्रजराज को तोरत है ॥ ४७ ॥
मकराकृत कुंडल गुंज कि माल सु लाल लसैं पग पांवरियां ॥
बछरान चरावन के मिस भावतो दैगयो भावती भाँवरियाँ ॥
रसखान विलोकत ही सिगरी भई बावरियाँ ब्रजडावरियाँ ॥
सजनी सब गोकुल में विष सो बगरायो है नंदके सांवरियां ॥ ४८ ॥
कानन कुंडल मोर पखा शिर कंठ में माल विराजत है ॥
मुरली कर में अधरा मुसकान तरंग महा छबि छाजत है ॥
रसखान लखे तनु पीत पटा शत दामिनीकी दुति लाजत है ॥
वह बाँसुरीकी धुनि कान परे कुल कान हियो तज भाजत है ॥४९॥

## कवित्त ।

दूधदुह्यो सीरोपरयो तातो न जमायो बीर जामनदयो सोधरयो धरयोई खटायगो ॥ आन हाथ आन पायँ सबहीके तबहीं ते जबहीं ते रसखान तानन सुनायगो ॥ ज्योंहीं नर त्योंहीं नारी तैसेई

तरुनिवारी कहियेकहारी सब ब्रज बिललायगो ॥ जानिये न आली यह छोहरा यशोमतिको बाँसुरी बजायगो कि विष बगरायगो ॥ ९० ॥

## सवैया ।

बजी है बजी रसखान बजी सुनिकै अब गोप कुमारि न जीहै ॥
न जीहै कदाचित कामिनी कोऊ जु कान परी वह तान अजी है ॥
अजी है बचावके कौन उपाव तियान पै मैन ने सैन सजी है ॥
सजी है तो मेरी कहा बश है जब बैरिन बांसुरी फेर बजी है ॥९१॥
आज अली इक गोप लली भई बावरी नेक न अंग सम्हारै ॥
मात अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों रसखान घिरचो सिगरो ब्रज आनको आन उपाव विचारै ॥
कोऊ न कान्हरके कर ते वह बैरिन बांसुरिया गहि डारै ॥ ९२ ॥
कौन ठगोरी करी हरि आज बजायके बांसुरिया रस भीनी ॥
कान परी जिनके जिनके तिनही तिन लाज बिदा कर दीनी ॥
घूमैं खरी खरी नंदके द्वार नवीनी कहा कहौं बाल प्रबीनी ॥
या ब्रजमंडल में रसखान सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी ॥ ९३ ॥
ए सजनी वह नंदको सांवरो या बन धेनु चराय गयो है ॥
मोहनी तानन गोधन गाय कै बेनु बजाय रिझाय गयो है ॥
ताही घरी कछु टोनो सों कै रसखान हिये में समाय गयो है ॥
कोऊ न काहुकी कान करै सिगरो ब्रज बीर बिकाय गयो ॥ ९४ ॥
मोहनकी मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आन अटा चढ़ झांकी ॥
गोप बडेनकी दीठ बचाय कै दीठ सों दीठ जुरी दुहुघांकी ॥
देखत मोल भयो अँखियान में को करै लाज औ कान कहां की ॥
कैसे छुटाई छुटै अटकी रसखान दुहूं की विलोकन बांकी ॥ ९५ ॥
वेनु बजावत गोधन गावत ग्वालनके सँग मैं इत आयो ॥
बांसुरी के मधि मेरोइ नामलै साथिनके मिस टेर सुनायो ॥
ए सजनी सुन सास के त्रास ननंद के पास उसासन आयो ॥
कैसी करों रसखान तहीं हित चैन नहीं चित चोर चुरायो ॥ ९६ ॥

मेरो सुभाव चितैबे को माई री लाल निहार के बंसी बजाई ॥
वा दिनते मोहिं लाग ठगोरि सी लोग कहैं लख बावरी आई ॥
यों रसखान घिरचो सगरो ब्रज जानत हैं जियकी जियराई ॥
जो कोउ चाहै भलो अपनो तो सनेह न काहूसों कीजियो माई ५७॥
जब कान्ह भये बश बांसुरीके अब कौन सखी हमको चहि है ॥
यह रात दिना सँग लागी रहै यह सौत कि सांसत को सहिहै ॥
जिन मोह लियो मनमोहनको रसखान सु क्यों न हमैं दहिहै ॥
मिल आओ सबै कहि भाग चलैं अबतो ब्रज मैं बँसुरी रहिहै ॥ ५८ ॥
सुनरी पिय मोहनकी बतियां अति ढीठ भयो नहिं कान करै ॥
निशि बासर औसर देत नहीं छिनही छिन द्वारेहि आन अरै ॥
निकसो मत नागरी डौंडी बजी ब्रज मंडल में यह कौन भरै ॥
अब रूपकी रौर परी रसखान रहै तिय कोऊ न मांझ घरै ॥ ५९ ॥
आयो हुतो नियरे रसखान कहा कहों तू न गई वहि ठैयां ॥
या ब्रजकी वनिता जिहि देखकै वारहिं प्राणन लेहिं बलैयां ॥
कोउ न काहु की कान करै कछु चेटक सों है करचो यदुरैयां ॥
गायगोतान जमायगो नेह रिझायगो प्राण चरायगो गैयां ॥ ६० ॥
हेरत बारहिं बार उतै यह बावरी बाल कहा धौं करैगी ॥
जो कहुँ देख परचो रसखान तौ क्यों हूं न वीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहू की कान नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी ॥
याते कहों शिख मान भटू यह हेरन तेरेइ पैंड परैगी ॥ ६१ ॥
रंग भरो मुसकात लला निकस्यो कल कुंजन ते सुखदाई ॥
मैं तबहीं निकरी घर ते तक नैन विशाल की चोट चलाई ॥
रसखान सो घूम गिरी धरनी हरनी जिमि बान लगे गिरै भाई ॥
टूटि गयो घरको सब बंधन छूटिगो आरज लाज बडाई ॥ ६२ ॥
आज सखी इक गोप कुमार ने रास रच्यो इक गोपके द्वार ॥
सुंदर बानिक सो रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ये विधिना जो हमैं हँसतीं अब नेक कहूं उत को पग धारे ॥

ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनहीं तन औं मन जोवन वारे ॥ ६३ ॥
वह गोधन गावत गोधन में जब ते यह मारग ह्वै निकस्यो ॥
तबते कुल कान कितीयो करों नंहिं मानत पापी हियो हुलस्यो ॥
अबतो जु भई सुभई कह होतहै लोग अजान हँस्यो सुहँस्यो ॥
कोउ पीर न जानत जानत सो जिसके हिये में रसखान बस्यो॥६४॥
आजरी नंदलला निकसो तुलसीवनते बनकें मुसकातो ॥
देखे बनै न बनै कहते कछु सो सुख जो मुख में न समातो ॥
हौं रसखान विलोकबेको कुलकानको काज कियो हिय हातो ॥
आय गई अलबेली अचानक ए भटू लाजको काज कहातो॥६५॥
समझी न कछू अजहूँ हरि सों ब्रज नैन नचाय नचाय हँसै ॥
नित सासकी सीरी उसासन सों दिनही दिन मायकी कांति नसै ॥
चहुँ ओर बबा किसौं शोर सुनै मन मेरेउ आवत रीस कसै ॥
पै कहा कहौं वा रसखान विलोक हियो हुलसै हुलसै हुलसै ॥ ६६ ॥
बाँकी कटाच्छ जितैबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हित कै हितकारी ॥
तू अपने ढिगकी रसखान सिखावन दै दिन हौं पचिहारी ॥
कौन सी सीख सिखी सजनी अजहूं तजिदै बलि जावँ तिहारी ॥
नंदन नंदके फंद कहूं परि जैहै अनोखी निहारनहारी ॥ ६७ ॥
पूरव पुण्यन ते चितई जिन ये अँखिया मुसकान भरीरी ॥
कोऊरही पुतरीसी खरी कोउ घाट डरी कोउ बाट परी री ॥
जे अपने घरही रसखान कहैं अरु हौंसन आज मरी री ॥
लाजहिं बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी री ॥६८॥
वैरिन तैं बरजी न रहै अबहीं घर बाहर वैर बढैगो ॥
टोना सों नंद ढुटोना पढै सजनी तिहिं देख विशेष बढैगो ॥
सुनिहै सब गोकुल गांव अरी रसखान जबै सब लोक रढैगो ॥
बैस चढै घर ही रह बैठ अटान चढ़ै बदनाम चढैगो ॥ ६९ ॥
तेरी गलीन में जा दिन ते निकसे नँदनंदन गोधन गावत ॥
ये ब्रज लोग सो कौनसी बात चलायके जो नहिं नैन चलावत ॥
वे रसखान जो रीझहैं नेक तो रीझके क्यों न बनाय रिझावत ॥

बावरी जोपै कलंक लग्यो तो निशंक ह्वै काहे न अंक लगावत॥७०॥
औचक दीठ परे कहूं कान्हजू तामें कहै ननदी अनुरागी॥
सो सुन सास रही मुख फेर जिठानी फिरै जिय में रिस पागी॥
नीके निहार के देखे न आंखन हौं कबहू सँग रैन न जागी॥
हैपछितैबो यही सजनी कि कलंकलग्यो पर अंक न लागी॥ ७१॥
कालिह परचो मुरली धुनि में रसखान जू कानन नाम हमारो॥
ता छिनते नहिं धीर रह्यो जग जान महा मन कीनो पवाँरो॥
गाँवन गाँवन में अबतो बदनाम भई सबसों कै किनारो॥
तो सजनी फिर फेर कहौं पिय मेरो यही जग ठोक नगारो॥ ७२॥
मो मनमोहन सों मिलिके मधुरी मुसकान दिखाई दई॥
मोहनी मूरत मैन मई सबहीं चितई हमहूं चितई॥
उनतो अपने अपने घरकी रसखान भली विधि गैल लई॥
मोहिं को पाप परचो पल में पग पावक पौरि पहार भई॥ ७३॥
प्रेम पगे जु रँगे रँग साँवरे मानैं मनाये न लालची नैना॥
धावत हैं उतही जित मोहन रोके रुकैं नहिं घूँघट ऐना॥
कानन लौं कल नाहिं परे सखि प्रीति में भीजे सुने मृदु बैना॥
रसखानभई मधुकी माखियां अब नेहको बंधन क्योंहूँ छुटैना॥७४॥
नव रंग अनंग भरी छबि सों वह मूरति आँखि गडी ही रहै॥
बतियां मनकी मन हीं में रहैं घतियां उर बीच अडी ही रहै॥
तबहू रसखान सुजान अली नलिनी जल बूंद पडी ही रहै॥
जियकी नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै॥७५॥
आवत हैं बन ते मनमोहन गोहन संग लसैं ब्रज ग्वाला॥
बेणु बजावत गावत गीत अमीत इतै करिगो कछु ख्याला॥
हेरत टेर थकी चहुँ ओर ते झांकि झरोखन ते ब्रजबाला॥
देख सु आननके रसखान तज्यो सब ब्रास को ताप कसाला॥७६॥
बंसी बजावत आन कढ्यो री गली में छली कछु जादू सी डारे॥
नेक चितै तिरछी कर भौंहैं चलो गयो मोहन मूठ सी मारे॥
वाही घरी ते परी वह सेज पै बोलै न डोलै है प्राण से वारे॥

जागि है जीहै तौ जीहैं सबै नहिं पीहैं सबै विष नंदके द्वारे ॥ ७७ ॥
अंग ही अंग जराव जरी अरु शीश बनी पगिया जरतारी ॥
मोतिन माल हिये लटकैं लटुआ लटकैं सब घूंघरवारी ॥
पूरण पुण्य हूं ते रसखान य मोहनि मूरत आन निहारी ॥
चारों दिशाके महा अघ हांकि जो झांके झरोखे में बांके विहारी ७८

## कवित्त।

मीन मृग खंजन खसान भरे नयन बान अधिक गलान भरे कंज कल तालके ॥ राधे छबीलीके छैल छबि छाके छाक भरे छैलताके छोरे भरे छबि जाल के । ग्वाल कबि आनभरे सान भरे स्यान भरे कछु अलसानभरे भरे मान मालके ॥ लाड भरे लाज भरे लागभरे लोभ भरे लाली भरे लोचनललौहैं नँदलालके ॥ ७९ ॥

फूल फूल फूलनके फूल फूल लिये तोड रंग रंग रंगीन की रंगत निहारी है ॥ सूत सूत सूत डोर रेशम रसान भरे गहक गहक गूंध गुधना निहारी है ॥ ग्वाल कबि सौरभ समुद्र ते निकाली मानो ललित ललाई कोमलाई बेकरारी है ॥ बानक विशाल वारों मोतिन की माल जाप ऐसी वनमाल नंदलाल हिये धारी है ॥ ८० ॥

पीरे वन बाग अनुराग भरे भाग भरे अंग अंग रंगकी उमंग मन पैठे हैं ॥ पीरे पीरे हिये पर पीरे ही वसन सने पीरे ही रतन तन अतन अमैठे हैं ॥ ग्वाल कबि पीरे गोले गेंदुवा पलंग पीरे पीरे पान चाबें पीरे हार हार ऐंठे हैं ॥ है नई वसंत ह्वै वसंत रही राधिकाके दोऊ पां वसंत में वसंत बन बैठे हैं ॥ ८१ ॥

सुंदर पलास और सुंदर अँध्यारे वन फूली २ बेल जाकी छवि लागै खासी ॥ कोकिला की कूक तेरी बानी में पिछानी जात भौंरन की भांग आछी श्यामता प्रकासी ॥ वन उपवन में मयंक सी शोभा देत चांदनी प्रत्यक्ष मानो नीकी छवि रासी ॥ रीस तेरी करबे को आई है वसंतऋतु तू तो है वसंत ये वसंत तेरी दासी ॥ ८२ ॥

बसी रहै शशि छवि ज्यों मन चकोरनके अलि मति मालती

सुमन में बसी रहे ॥ बसी रहे गज मन रेवाकी चिर रेणुरुमोरन की रुचि घनाघन में बसी रहे ॥ बसी रहै श्रीपति सदन कमलाजू जैसे लोभी मन रुचि चित्तधन में बसी रहे ॥ बसी रहे त्योंहीं तेरे छवि की लगन कृष्ण मूरति तिहारी मेरे मन में बसी रहै ॥ ८३ ॥

## सवैया ।

सोई हे रास में नेसुक नाचिके नाच नचाये किते सबको जिन ॥
सोई है री रसखान इहै मनुहारहू सूधे चितौत नहीं छिन ॥
तो में धों कौन मनोहर भाव विलोकि भयो वश हाहा करी तिन ॥
औसर एसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोड़ो कनौड़ो करै किन॥८४॥
बारहीं गोरस बेंचरी आज तू मायके मूड चढै कित मोडी ॥
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू यमुना भतरौंड़ लौं ओंडी ॥
एतेमें भेटत ह्वी रसखान ह्वैहैं आँखियां विन काज कनौडी ॥
एरी बलाय ल्यों जायगी बाज अबै ब्रजराज सनेहकी डौंडी ॥८५॥
मोरकी चांद्रिका मोर लसैं दिन दूलह है अलि नंदको नंदन ॥
श्री वृषभानु सुता दुलही लही जोरी बनी विधिना सुखकंदन ॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो कछु दोऊ फँदे छवि प्रेमके फंदन ॥
जाहि विलोके सभी सुख पावत ये ब्रज जीवन दुःख निकंदन ॥ ८६ ॥
आज अचानक राधिका रूप निधान सों भेंट भई वनमाहीं ॥
देखत दीठ जुरी रसखान मिले भर अंक दिये गलबाहीं ॥
प्रेम पगी बतियां दुहुँघांकी दुहूँको लगी अतिही चित चाहीं ॥
मोहनी मंत्र वसीकर तंत्र हहा पियकी तियकी नहिं नाहीं ॥ ८७ ॥
लाडिली लाल लसैं लखिये अलि पुंजन कुंजन में छवि गाढी ॥
ऊजरी ज्यों बिजुरी सी जुरी चहुँ गूजरी केलिकला सम काढ़ी ॥
त्यों रसखान न जान परे सुखमा तिहुँ लोकन की अति बाढ़ी ॥
लालन बाललिये विहरैं छहरैं शिर मोर पखी ठग ठाढी ॥ ८८ ॥
हग दूने खिचे रहें कानन लों लट आनन पै लहराय रही ॥
छक छैल छबीली छटा छहरायकै कौतुक कोटि देखाय रही ॥
झुक झूम झमाकन चूम अमी चहि चांदनी चंद दूराय रही ॥

मन भाय रही रसखान महा लखि मोहनकी तरसाय रही ॥ ८९ ॥
जात हुती यमुना जलको मनमोहन घेर लियो मग आयके ॥
मोद भरे लपटाय गयो पट घूंघट टार दियो चित्त चाय के ॥
और कहा रसखान कहों मुख चूमत घातन बात बनायके ॥
कौन निभै कुल कान लिये हिये सांवरी मूरतिकी छवि छाय के९०
मोहनके मनभाय गयो इक भाव सों ग्वालिन गोधन लायो ॥
ताते लग्यो चट चौहन सों हरवाय दै गात सों गात छुवायो ॥
रसखान लही यह चातुरता चुप चाप रही जबलौं घर आयो ॥
नैन नचाय चितै मुसकाय सु ओट ह्वै जाय अँगूठा दिखायो ॥९१॥

## कवित्त।

एरी आज कालि्ह सब लोक लाज त्यागि दोऊ सीखेंहैं सबै विधि सनेह सरसायबो ॥ यह रसखान दिन द्वै में बात फैल जैहै कहांलौ सयानी। चंद हाथन छिपायबो ॥ आज हौं निहारचो बीर निपट कलिंदी तीर दोउन को दोउन सों मुख मुसकायबो। दोऊ परैं पैयां दोऊ लेत हैं बलैयां उन्हें भूल गईं गैयां उन्हें गागर उठायबो९२

## सवैया।

एक समै यमुना जल में सब मज्जन हेत धसीं ब्रज गोरी ॥
त्यों रसखान गयो मनमोहन लैकर चीर कदंब की छोरी ॥
न्हाय जबै निकसीं वनिता चहुँ ओर चितै चित रोष करचो री ॥
हार हियो भर भावन सों पट दीने लला वचनामृत बोरी ॥ ९३ ॥
नागर छैल है गोकुल में मगरोकत संग सखा लिये तै है ॥
जाहि न ताहि दिखावत आँख सु कौन गई अब तोसों करैहै ॥
हाँसी में हार हरचो रसखान सुजोकहुँ नेकतगा टुटिजैहै ॥
एकहि मोतीके मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहै ॥ ९४ ॥
क्षीर जु चाहत चीर गहे अजू लेहु न केतक क्षीर अँचैहो ॥
चाखन के हित माखन मांगत खाहु न माखन केतिक खैहो ॥
जानत हौं जियकी रसखान सु काहेको एतिक बात बढ़ैहो ॥
गोरसके मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेक न पैहो ॥ ९५ ॥

दानी भये नये मांगत दान सुनै जु पै कंस तौ बांधे न जैहौ ॥ रोकत हौ मग में रसखान पसारत हाथ कछू नहिं पैहौ ॥ टूटै छरा बछरा अरु गोधन जोधन है सुसबै धर दैहौ ॥ जैहै अभूषन काहू सखीको तौ मोल छला के ललान बिकैहौ ॥९६॥

## भजन–राग विहाग ।

कर मन नंदनँदन को ध्यान। यह अवसर तोहिं फिरि न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ॥ घूंघरवारी अलकैं मुख पर कुंडल झलकत कान । नारायण अलसाने नयना झूमत रूप निधान ९७॥

## राग जंगला ।

आज महरि घर देउरी बधाई । शुभ लक्षण सुंदर सुत जायो बड़ भागिन है यशुमति माई ॥ बृद्ध बधू सब जुर मिल आईं यथा योग कुल रीति कराई । दान मान विप्रनको दीनो मणि मुक्ता पट भूषण ताई ॥ मृगनयनी कल कोकिल बयनी कर शृंगार बैठीं अँगनाई ॥ लैलै नाम नंद यशुमतिको गावत गारी परम सुहाई । ध्वज पताक तोरन मणि जाला द्वारन बंदनवार बधाई । नारायण ब्रज आनँद छायो प्रगट भये बर कुँवर कन्हाई ॥ ९८ ॥

## राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल दृग मींडत जगे लाल रूपके विशाल सिंधु गुणनके जहाज । कुण्डल सों उरझी माल मुख पर अलकन को जाल भई मैं निहाल निरख शोभाको समाज । आलस वश झुकत ग्रीव कबहूं अँगड़ाई लेत उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज ॥ नारायण यशुमति ढिग हौं तो गई बात कहन याही में भयेरी एक पंथ दोऊ काज ॥ ९९ ॥

## राग देश ।

कैसे जाउँ री बीर घट भरबे नीर। ठाढो यमुना तीर साँवरो अहीर मारै दृगों के तीर हरे सुध शरीर ॥ नित यही चित में चिंता समाज ब्रजराज सों कैसे बचैगी लाज जिया कांपै आज नहीं धरत

धीर । वाको रूप है के कोऊ जादू यंत्र कैधों नारायण वशीकरण मंत्र कैधों तंत्र के पल ही में करै फकार ॥ १०० ॥

## राग झंझोटी ।

जिन मग रोको नंदकिशोर । तोहिं उरझनकी बानपरीहै सांझ तकत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहिं सास रिसावै तुम्हैं छैल नित रार सुहावै इन कुचाल कछु हाथ न आवै गागरिया दई फोर । तुम अति चंचल छैल विहारी कैसे कूख रखे महतारी यह अचरज मोको है भारी घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो भई सो भई न बातबढ़ावो ताही को तुम आँख दिखावो जो होय तेरी बँदोर ॥ १०१ ॥

## राग बरवा ।

आप भले गुणवान बनो तुम औरन को अति खोट बतावो ॥ माखनचोर कहावत हो नित तौऊ नहीं मन माहिं लजावो ॥ रत्न जडे आभूपण पहरे छाँछ लिये करको फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसैंगे प्रथम उतार इन्हें धर आवो ॥ १०२ ॥

## राग मलार ।

क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी । करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकर लै जाउं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नटखट की ॥ बदलो लेउँगी न डरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसों अब अटकी ॥ १०३ ॥

## राग खमाच ।

प्रीतम तुम मोहिं प्राण ते प्यारो । जो तोहिं देख हिये सुख पावत सो बड़ भागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरबस तुमहीं तुमहीं दृगनके तारो । जो तुमको पल भर न निहारूं दीखत जग अँधियारो॥ मोद बढ़ावनके कारण हम माननी रूपको धारो । नारायण हम दोऊ एक हैं फूल सुगंधि न न्यारो ॥ १०४ ॥

## राग देश ।

सखि जबसों नँदलाल निहारे । तबही सों बौरी भई डोलूं इत उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुँघरारे । खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख समारे ॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे । मानो रूपसिंधु में खेलत मकरन के द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छवि शशि मनोज लख हारे । दशन पांति ज्यों मुतियनकी लर अधर सोहैं अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल बर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे । नारायण नख शिख शृंगार कर ठाढ़े भवनके द्वारे ॥ १०५ ॥

## राग सोरठ ।

जाहि लगन लगै घनश्याम की । धरत कहूं पग परत हैं कितहूं भूल जाय सुध धाम की ॥ छवि निहार नहिं रहत सार कछु घरी पल निशि दिन याम की । जित मुँह उठै तितैही धावै सुरति न छाया घाम की ॥ कोई करो निंदा कोई स्तुति मेड़ तजी कुल ग्राम की । नारायण बौरी भई डोलै रहै न काहू काम की ॥ १०६ ॥

## राग काफी ।

यह नैना रिझवार नयेरी । एक बेर लख रूप श्यामको तज घरबार फकीर भये री ॥ अब देखे बिन डारत आंसू युग समान पल बीत गयेरी । नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बयेरी ॥

## राग भैरवी ।

अब मैं कैस करूंरी बीर । हौं तो घनो चाहूं न करूं सुध मन तो धरत न धीर ॥ जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर । नारायण करगयो बावरी सुंदर श्याम शरीर ॥ १०८ ॥

## राग परज ।

अब नंद भवन में चलोरी बीर । सांवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत है धीर ॥ दृग अति अकुलावैं नहिं पलक लगावैं पुनि उतही को धावैं परी इनपै भीर । तनु सुरत बिसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारीको जानतपीर ॥१०९॥

## राग खट ।

एक सखी उठ बड़े भोरही नंदरायके भवन गई । ताही समय जगे मनमोहन आलस बश मुख क्रांति नई ॥ नैंन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई । नारायण यह छबि लख ग्वालिन मानो भीतको चित्र भई ॥ ११० ॥

देख सखी नव छैल छबीलो प्रात समै इतसों को आवै । कमल समान बड़े दृग जाके श्याम सलोना मृदु मुसक्यावै ॥ जाकी सुंदरता जग वरणत मुख शोभा लख चंद्र लजावै । नारायण यह किधों वही है जो यशुमतिको कुँवर कहावै ॥ १११ ॥

## राग विभास ।

यही मोहन जिन मोही ब्रजबाला । गजगति चलत बजत पग नूपुर उर सोहै बनमाला ॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत बोलत बचन रसाला । श्याम बरन लख लजत नील मणि पंकज मेघ तमाला ॥ नैन सैन कर हरत मैन मन मुख दुति चंद बिशाला । नारायण प्रगट्यो जादूगर नंदरायको लाला ॥ ११२ ॥

## राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल मेरे गृह आये लाल भई मैं निहाल वाके रूपको निहाररी । पूरण शशि सम कपोल तिनपै कुंडल किलोल मधुर मधुर सुनके बोल रही ना सँभार री ॥ नाक मैं बुलाक सोहै चितवन चितहीको मोहै अद्भुत शृंगार चरण नूपुर झनकार री । नारायण हौं तो उठी मिलन इतसों आई लाज मनकी मनहीं में रही कर न सकी प्यार री ॥ ११३ ॥

## राग आसावरी ।

सखी मेरे मनकी को जाने । कासों कहूं सुनै जो चितदै हितकी बात बखाने ॥ ऐसो को है अंतर्यामी तुरत पीर पहिचाने । नारायण जो बीत रही है कब कोई सच माने ॥ ११४ ॥

## राग सोरठ ।

मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होतहै और और । न

सुहात भवन तन अशन बसन बन हीको धावत दौर दौर ॥ नहीं धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर । कबहूं अँसुवन भर नारायण मग झाँकत डोलत पौर पौर ॥ ११५ ॥

## राग झंझोटी ।

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी । तेरे काज घर बार त्याग के गलियन फिरत दिवानी ॥ लोक लाज कुल रीत प्रीत जग इनहूं को दियेपानी । नारायण अबतो हँस चितवो ऐरे रूप गुमानी ॥ ११६ ॥

## राग काफी ।

लाल तेरे जादूभरे दोउ नैन । चितवन में चित वश कर लेवें मोहनी मंत्र है सैन ॥ अति बांके सुंदर मतवारे अनियारे छवि ऐन॥ नारायण इनके बिन देखे पल छिन परत न चैन ॥ ११७ ॥

## राग कालिंगड़ा ।

सखी तबसों चैन नहिं आवै । जबसों मैं निरख्यो नँदलाल गल मुतियन माल सुहावै ॥ घुँघरारी अलकें मुख राजें कोटि मदन दृग छबि लखि लाजें कुंडल हलन चलन श्रवणन में बंशी मधुर बजावै । सुध बुध हरण वचन हँस बोलै चाल मराल इतै उत डोलै बजत चरन छम छननन नूपुर ताहू पर मुसक्यावै ॥ कर कंकन पहुँची मणि झलकें देख स्वरूप लगत नहिं पलकें नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावै ॥ ११८ ॥

सखि यह दृग वा रूप लुभाने । मचल रहे शशि मुख निरखन को जा विधि बाल अयाने॥लोक लाज कुल धर्म खिलोना दिये तऊ नहिं माने । नारायण सोऊ हन फेरे ऐसे निडर सयाने ॥ ११९ ॥

## राग झंझोटी ।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री । ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको मो घायल पै नोन पुरी री ॥ नाजानूं अब सुध बुध मेरी कौन विपिन में जायदुरीरी । नारायण नहिं छूटत सजनी जाकी जासों प्रीति जुरीरी ॥

## राग ईमनदादरा।

लगन नहीं छूटे एरी बीर। तीन देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदवीर॥ छिन में करत चतुरको बौरा नृपको करत फकीर। नारायण अब कठिन है बचबो बिंधे हिये दृग तीर॥ १२१॥

मोपै कैसी यह मोहनी डारी। चितचोर छैल गिरिधारी॥ गृह कारज में जी न लगतहै खान पान लगै खारी। निपट उदास रहत हूं जबसों सूरत देखी तिहारी॥ सँगकी सखी देत मोहिं धीरज वचन कहत हितकारी। एक न लगत कही काहूकी कहत कहत सब हारी॥ रही न लाज सकुच गुरुजन की तन मन सुरति बिसारी। नारायण मोहिं समझ बावरी हँसत सकल नर नारी॥ १२२॥

## राग सोरठ।

सखीरी यह मेरो चित चोर। भ्रुकुटी कुटिल बंक अवलोकन सुंदर नवल किशोर॥ गैल चलत में सहजहिं निरखी या छलिया की ओर। नारायण जाने कहा कीयो इन लख नैनन कोर॥ १२३॥

मोहन बसगये मेरे मनमें॥ लोक लाज कुलकान छूट गई इनकी लगन लगन में। जित देखूं तितही यहि दीखे घर बाहर आँगन में। अंगअंग प्रति रोम रोम में छाय रहे सभ तन में॥ कुंडल झलक कपोलन सोहै बाजूबंद भुजनमें। कंकन कलित ललित मणि माला नूपुर धुनि चरणन में॥ चपल नयन भ्रुकुटी बर बांकी ठाढे सघन लतन में। नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में

## राग झँझोटी।

ये दोऊ झूलेंरी मनकी मोहन हार। सजनी री इक साँवरे रंग की सँग वृषभानु कुमार॥ सावन मास सुहावन भावन फूल रही फुलवार। रेशम डोर जड़ाऊ पटली सघन कदमकीडार॥ गरजत घन चमकतहै चपला बूंदन परतफुहार। ठौर ठौर मिल मोर नचत हैं या सुखको नहिं पार॥ भाँति भाँति के पक्षी बोलें शीतल चलत बयार। फूले कमल सरोवर माहीं भ्रमर करत गुंजार॥ चहूं ओर

छाई हरियाली अद्भुत विपिन बहार । लिपट रहीं बर बेलि द्रुमन सों हरषत युगल निहार ॥ बरन बरनके लाल सोसनी सखियन किये शृँगार । बिविध प्रकार बजावत बाजे गावत राग मलार ॥ चतुर सखी इक जान गई तब उर सों चीर उघार । हँस हँस परत लखावत औरन यह लंगर छलवार ॥ ललिता कहै इनैं नाहिं थ्यापै तनक लाज संसार । पल पल माहिं स्वांग धर आवत कभू पुरुष कभू नार ॥ नारायण बोली प्रीतम सों कीरति प्राणअधार । वनिता वेष उतार आपनो रूप लियो निज धार ॥ १२५ ॥

## राग मलार ।

सखी री यह सावन मनभावन । चातक मोर चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ।। गरजत घन घननन घननन कर लगे मेह बर-सावन । नारायण भीजत मेरे गृह श्याम सुंदरको आवन ॥ १२६ ॥

## राग जंगला ।

आवोरी यह शोभा निहारें । नंदलाल वृषभानु नंदनी झूल रहे गरबैयां डारें ।। परत फुहार विपिन हरियाली वन पक्षी मृदु वचन उचारें । अति निर्मल जल भरे सरोवर फूले कमल भ्रमर गुंजारें ॥ पवन झकोर उडत प्रिय को पट झट प्रीतम निज हाथ सँभारें।।नारायण इनकी या छवि पै आज सखी हम सरबस वारें॥ १२७

## राग कान्हरो ।

आज बंशीबट बरसत रंग । यमुना तीर समीर सुहावत बोलत विविध बिहंग ।। कीरति कुँवरि लाल नँदजी को झूल रहे इक संग । रूपसिंधु के अंग अंग ते छबिकी उठत तरंग ।बजत बीन ताऊस सरंगी बंशी झांझ मृदंग। नारायण गावत मिल सजनी हिय में बढ़त उमंग ॥ १२८ ॥

## राग मलार ।

सघन बन झूलें दोउ सुकुमार । हिय हरपत छबि निरख परस्पर छिन छिन बाढ़त प्यार ॥ कबहुँ मुदित मन तान लेत मिल होत सखी बलिहार । नारायण द्रुम बेलि सुहावन हरौ कियो शृंगार १२९॥

## राग काफी ।

गोरी कुंजन में आज होरी मची तू कहा बैठी मांग सँवारै । मेरी कही जो सांच न मानै सुनलै डफ धुधकारै ॥ उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहिं पुकारै । नारायण तब बात है तेरी तू जीतै पिय हारै ॥ १३० ॥

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर । हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अबीर ॥ चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीज रहे तनु चीर । जनु घन दामिनि रूप धरे हैं गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे होय रही अति भीर । नारायण या सुख निरखे बिन कौन धरै मन धीर १३१ ॥

देख सखी वृषभानु किशोरी । निज प्रीतमको रूप निहारत जाविध चंद चकोरी ॥ भलो फाग खेलन को निकसी बीच भई चित चोरी । नारायण अटके दृगछबि में भूल गई सुधि होरी ॥ १३२ ॥

## राग झंझोटी ।

आज श्याम मग धूम मचाई । धूम मचाई करत ढिठाई ॥ बिन रँग डारे देत नहिं निकसन मैं तेरी सों देखके आई । तू कहूं भूलके मत उत जैयो जाने कहा वह करै लँगराई ॥ नारायण होरीके दिनन में अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ १३३ ॥

## राग काफी ।

मति मारो पिचकारी श्याम अब देऊँगी मैं गारी । भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदर बिगरैगी न्यारी ॥ देखेगी सास रिसायगी मोपै संग की ऐसी हैं दारी ॥ हँसेंगी दै दै तारी । घाट बाट सबसों अटकत हो लैलै रारि उधारी ॥ कहांलों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी ॥ जानत करतूत तिहारी ॥ मूठ अबीर न डारो दृगन में दूखेगी आंख हमारी । नारायण न बहुत इतरावो छांडो डगर गिरिधारी ॥ नये भये तुमहीं खिलारी ॥ १३४ ॥

## राग होरी काफी ।

होरी हो ब्रजराज दुलारे । अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग रे हे बापन वारे ॥ कै तो निकसके होरी खेलो कै मुख सों कहो हारे ॥ जोर कर आगे हमारे ॥ बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फागहिं फाग पुकारे । आज देखियो सैल फागकी पिचकारिन के फुहारे ॥ चलें जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोंकत गैल गिरारे । नारायण सब खबर परैगी नेक तो आयके द्वारे । सुरति अपनी तू दिखारे ॥ १३५ ॥

## राग कान्हरा ।

नंदनंदन के ऐसे नैन । अति छबिभरे नागके छौना तुरत डसें कर सैन ॥ इन सम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नाहिं कोई एक दृष्टि में मन हर लेवें कर देवें बेचेन ॥ चितवन में घायल कर डारें इनपै कोटि बाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकें श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावन हारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे सुखदेन ॥ १३६ ॥

## राग मलार ।

मनमोहन सम सुंदर कोहै । मैं अपने अनुमान कहूं अब उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चंद हूं जोहै । नारायण जो एक दृष्टि में सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १३७ ॥

## राग जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं तो अपने बड़भाग मनाऊं । सांवरी सूरत नैन बिशाला चंद वदन गल मुतियन माला रूप मनोहर चाल मराला सुंदरता पर बलि बलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै मो बिरहन को दरश दिखावै बैठ निकट मृदु वचन सुनावै मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी कब लैंगे सुधआय हमारी जबमोसों वो कहैंगे प्यारी तब मैं फूली अँग न समाऊं॥

## राग नाइकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास बिहारी । जैसोइ बृंदा बिपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहुँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढ़ावन शीतल मंद सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित ब्रज बाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । बजत अनेक भांति मृदु बाजे परम प्रवीन बजावन वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाई लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत हैं शीश तें मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलग ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभ ते सुर निरखत बर्षत फूल सहित निज नारी १३९ ॥

## राग भैरव ।

बंशीबट जमुना तट निरतत बनवारी । अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चंद वदन श्याम रसिक मुकुट चंद शीश लसत चंद्र मुखी प्रिया शरद चांदकी उजारी । बाजे बाजत बिशाल गति मति सुर अधिक ताल राग रंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिका को वेष ठान निरख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

## राग जोगिया ।

आज सखी सुपन्ने में देख्यो रैन । जबहीं सों जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोबन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुंदर बांके नैन॥ मैं उनसों कछु कहन न पाई सुने न उनके बैन । नारायण तब आंख उघर गई ना कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

## सवैया ।

मान की औधिहै आधी घरी अरु जो रसखानि डरै डर के डर ॥
तोरिये नेह न छोडिये पां परों ऐसे कटाच्छ महा हियरा हर ॥
लाल गुपाल कोहाल बिलोक री नेक छुवै किन दै कर सों कर ॥

ना कहबे पर वारत प्राण कहा लख बारिहे हां कहिबे पर ॥ १४२ ॥
वह सांवरो नंद को छैल अली अबतो अति ही इतरान लगो ॥
नित घाटन बाटन कुंजन में मोहिं देखतही नियरान लगो ॥
रसखान बखान कहा कहिये तक सैनन सों मुसकान लगो ॥
तिरछी बरछी सम मारत है दृग बान कमान सु कान लगो १४३ ॥
आई सबै ब्रज गोप लली ठिठकी ह्वै गली यमुना जल न्हानें ॥
औचक आय मिले रसखान बजावत वेणु सुनावत तानें ॥
हाहा करी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसानें ॥
घूमैं दिमाने अमाने चकोर से ओर से दोऊ चलैं दृग बानें ॥ १४४ ॥
मोर पँखा शिर ऊपर राखि के गुंज की माल हिये पहरौंगी ॥
ओढ़ पितांबर लै लकुटी बन गावत गोधन संग फिरौंगी ॥
भावतो मोहिं वही रसखान सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ॥
ये मुरली मुरलीधरकी अधरान धरी अधरान धरौंगी ॥ १४५ ॥
को रिझवारिन सों रसखान कहे मुक्तान सों मांग भरौंगी ॥
कोऊ कहै गहनो अंग अंग दुकूल सुगंध सन्यो पहरौंगी ॥
तू नकहे यों कहे तौ कहौं हूं कहूं न कहूं तेरे पाँय परौंगी ॥
देखहु याहि सुफूलकी माल यशोमति लाल निहाल करौंगी ॥१४६॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखान खरो बहु भाव भरो जू ॥
मार से गोपकुमार कुमार वे देखत ध्यान टरो न टरो जू ॥
पूरब पुण्यन दांव परयो अब राज करो उठ काज करो जू ॥
अंक भरो निरशंक उन्हैं यहि पाख पतिव्रत ताख धरो जू ॥ १४७ ॥

## कवित्त ।

गोकुलको ग्वाल एक चौमुँह की ग्वालिन सों चाचरि रचाइ अति धूमहिं मचायगो । हियो हुलसाय रसखान तान गाय वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल लोचन नचाय उर पुर में समायगो ॥ सासहि तचाय गोरी नंदहि नचाय गोरी बैरिन सँचाय गोरी मोहिं सकुचायगो१४८॥

## सवैया ।

एक समै इक सुंदरीको ब्रज जीवन खेलत दीठ पर्यो है ॥
बाल प्रबीन प्रबीनता कै सरकाय कै कांध लै चीर धर्यो है ॥
यों रस ही रस ही रसखान सखी अपनो मन भायो कर्यो है ॥
नंदके लाडिले ढांक दे शीश हहा मेरो गोरस हाथ भर्यो है॥१४९॥
दूर ते आय दुरे ही दिखाय अटा चढ़ जाय गह्यो तहँ बारो ॥
चित्त कहूं चितवै कितहूं हित और सों चाहि करे चखचारो ॥
रसखान कहै इहि बीच अचानक जाय सिढी चढ सास पुकारो ॥
सूख गई सुकुमार हियो हनि सैनन सों कह्यो कान्ह सिधारो॥१५०॥

## कवित्त ।

आपनो सो ढोटा हम सबहीको जानत हैं दोऊ प्राणी सबही के काज नित धावहीं ॥ ते तो रसखान सब दूर ते तमासो देखैं तरनि तनूजाके निकट हू न आवहीं ॥ आन दिन बात अनहितुन की कहौं कहा हितू जेजे आये तेऊ लोचन दुरावहीं ॥ कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय मेरेबनमालीको न काली तेछुडावहीं ॥

## सवैया ।

लोग कहैं ब्रजके रसखान अनंदित नंद यशोमति जू पर ॥
छोहरा आज नयो जनम्यो तुम सों कोऊ भाग भर्यो नहीं भू पर ॥
बारक दाम सँवार करो घनी पानी पियो सु उतार ललू पर ॥
नाचत रावरो लाल गुपाल हो काल से व्याल कपालके ऊपर १५२
कंसके कोपकी फैल गई जबहीं ब्रज मंडल बीच पुकार है ॥
आय गयो तबहीं कछनी कासैकै नट नागर नंदकुमार है ॥
द्वैरदको रद खैंच लियो रसखान तबै मन आयो विचार है ॥
लागी कुठौर लई लख ऐंच कलंक तमाल ते कीरति डार है ॥ १५३॥
लाजके लेप चढायके अंग पचीं सब सीखको मंत्र सुनाय कै ॥
गारुड़ ह्वै ब्रज लोग थक्यो कर ओषध बासुक सौंह दिवाय कै ॥
ऊधो सों को रसखान कहै जिन चित्त धरो तुम एते उपाय कै ॥

कारे बिसारे को चाहै उतारयो अरी बिश बावरो राख लगायके १५४॥
सारकी सारी सो भारी लगै धरि हैं कहा शीश बघंबर दैया ॥
दासी जु सीख दई सुदई पै लई गह क्यों रसखान कन्हैया ॥
योग गयो कुबजाकी कलान में री कब ऐहै यशोमति छैया ॥
हाहा न ऊधो कुढ़ाय हमैं अबहीं कह दे ब्रज बाजे बधैया ॥ १५५ ॥
जानत हों न कछू हम ह्यां उन ह्वां पढ़ि मंत्र कहा धौं दयो है ॥
सांची कहैं जिय में निज जान कै जानती हौ जस जैसो लयो है ॥
रसखान यहै सुनकै गुनकै हियरा सत टूक ह्वै फाट गयो है ॥
लोग लुगाई सबै ब्रज माहिं कहैं हरि चेरीको चेरो भयो है ॥ १५६ ॥
जानैं कहा हम मूढ़ सबै समझी न तबै जबहीं बन आई ॥
सोच रहीं मनही मन में अब कीजे कहा बतियां कछु भाई ॥
नीचो भयो ब्रज लोकको शीश भली न भई रसखान दुहाई ॥
चेरीको चेटक देखहु री हरि चेरो कियो धौं कहा पढ़ आई॥ १५७॥
काहूको माई कहा कहिये सहिये सु जोई रसखान सहावैं ॥
नेम कहा जब प्रेम कियो अब नाचिये सोई जु नाचनचावैं ॥
चाहत हैं हम और कहा सखि क्यों हूं कहूं पिय देखन पावैं ॥
चेरिहि सों जु गुपाल रच्यो तौ चलोरी सबै मिल चेरी कहावैं॥ १५८॥

## कवित्त ।

ग्वालनके संग जैबो ऐबो औ चरैबो गाय हेरी तान गैबो सोचि नैन फरकत हैं ॥ ह्यांके गज मोती माल वारों गुंजमालन पै कुंज सुध आये हाय प्राण धरकत हैं ॥ गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नहिं भावैं ये महल जे जड़ित मरकतहैं ॥ मंदर ते ऊंचे कहा मंदिर हैं द्वारकाके ब्रजके खरक मेरे हिये खरकत हैं ॥ १५९ ॥

## सवैया ।

मोहन जूके बियोग की ताप मलीन यहा दुति देह तियाकी ॥
पंकज सो मुख गो मुरझाय लगैं लपटैं विरहागि हियाकी ॥
ऐसे में आवत कान्ह सुने तुलसी सुतनी तरकी अँगियाकी ॥

यों जग ज्योति उठी तनुकी उसकाय दई मनौ बाती दिया की॥ १६०॥
इक ओर किरीट लसै दुसरी दिशि नागनके गण गाजत री ॥
मुरली मधुरी धुनि ओंठन पै तुरही कलनाद सों बाजत री ॥
रसखान पितंबर एक कँधा पर एक बघंबर छाजत री ॥
अरी देखहु संगम लै बुड़की निकसे वर वेष विराजत री ॥ १६१ ॥
यह देख धतूरेके पात चबात सुगात में धूरि लगावत है ॥
चहुँ ओर जटा अटकी लटकें शुभ शीश फनी फहरावत है ॥
रसखान जोई चितवै चित दै तिहिके दुख द्वंद्व भजावत है ॥
गज खाल कपालकी माल धरे हरि गाल बजावत आवत है १६२ ॥
वेद की ओषधि खात कछू न करै कछु संयम री सुन मोसे ॥
तेरोइ पानी पियें रसखानि सजीवन जानि लहै सुख तोसे ॥
एरी सुधामयी भागीरथी सब पथ्य कुपथ्य बनें तोहिं पोसे ॥
आक धतूर चबातफिरै विष खात फिरै शिव तेरे भरोसे ॥ १६३ ॥
सुनिये सबकी कहिये न कछू रहिये इमि या भव बागर में ॥
करिये व्रत नेम सचाई लिये जिनते तरिये भवसागर में ॥
मिलिये सबसों दुरभाव बिना रहिये सतसंग उजागर में ॥
रसखान गुविंदहि यों भजिये जिमि नागरिको चित गागर में १६४॥
प्राण वही जु रहैं रिझ वा पर रूप वही जिहिं वाहि रिझायो ॥
शीश वही जिहिं वे परसे पद देह वही जिन वा परसायो ॥
दूध वही जु दुहायो री वाही ने सोई दही जु वही ढरकायो ॥
और कहांलों कहूं रसखान सुभाव वही जु वही मन भायो॥ १६५॥
कंचन मंदिर ऊंचे बनायके माणिक लाय सदा झमकावै ॥
प्रातहि ते सगरी नगरी गजमोतिन हीकी तुलानि तुलावै ॥
पालै प्रजानि प्रजापति सों वन संपति सों मघवाहि लजावै ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान जु साँवरे ग्वार सों नेह न लावै ॥१६६॥
संपति सों सकुचावै कुबेरहि रूप सों देत चुनौति अनंगहि ॥
भोग लखे ललचाय पुरंदर योग में गंग लई धरि मंगहि ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखात रसै रसना जिहिं मुक्ति तरंगहि ॥

जो चित वाके न रंग रँग्यो जु रह्यो रँगि राधिका रानीके रंगहि १६७
द्रौपदी औ गणिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो ॥
गौतम गेहनी कैसी तरी प्रहलाद को कैसो हरचो दुख भारो ॥
काहेको सोच करै रसखान कहा करिहै यमराज विचारो ॥
कौनकी शंकपरी है जु माखन चाखन हारो है राखनहारो ॥ १६८ ॥
देश विदेशके देखे नरेश न रीझको कोऊ न बूझ करैगो ॥
ताते तिन्हैं तज जाउँ गिरौं गुण को गुण औगुण गांठ परैगो ॥
बांसुरी बारो बड़ो रिझवार है जो कहुँ नेसुक ढार ढरैगो ॥
सुंदर साँवरो छैल अहीरको पीर हमारे हिये की हरैगो ॥१६९॥
शेष सुरेश दिनेश गणेश प्रजेश धनेश महेश मनाओ ॥
कोऊ भवानी भजो मनकी सब आश सबै विधि जाय पुराओ ॥
कोऊ रमा भजि लेहु महाधन कोऊ कहूं मन वांछित पाओ ॥
है रसखान मेरे वही साधन और त्रिलोक रहौ कि नशाओ ॥ १७० ॥
वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पुरको तजि डारौं ॥
आठ हूं सिद्धि नवो निधिको सुख नंदकि गाय चराय बिसारौं ॥
रसखान कबै इन नैनन सों ब्रजके वन बाग तड़ाग निहारौं ॥
कोटिन हूं कलधौतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारौं ॥ १७१ ॥
जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ॥
मो करनी कर नीकी करैं जुपै कुंज कुटीरन देहु बुहारन ॥
सिद्धि समृद्धि सबै रसखान लहौं ब्रजरेणुका अंग सवाँरन ॥
स्वान निवास मिलै तो सही वहि कालिंदी कूल कदंबकी डारन ॥१७२॥

## कवित्त ।

कहा रसखान सुख संपति सुमार महा कहा महा योगी है लगाये अंग छारको ॥ कहा साधे पंचानल कहा सोये बीच जल कहा जीत लीने राज सिंधु वार पारको ॥ जप बार बार तप संयम अपार व्रत तीरथ हजार अरे बूझत लवार को ॥ सोई है गँवार जिहि कीनो नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार यार नंदके कुमार को ॥ १७३ ॥

कंचनके मंदिरन दीठ ठहरात नाहिं सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सों ॥ और प्रभुताई सब कहांलौं बखानौं प्रतिहारिनकी भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥ गंगाजू में न्हाय मुकताहल लुटाय वेद बीस बार गाय ध्यान कीजत सकारे सों ॥ ऐसेही भये तौ कहा कीन्हो रसखान जुपै चित्त दै न कीन्ही प्रीति पीतपटवारे सों ॥ १७४ ॥

## श्रीरामचन्द्रजीके कवित्त

### सवैया ।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदकै भूपति लै निकसे ॥
अवलोकि हौं सोच विमोचन को ठगि सी रही जो न ठगे धिक से ॥
तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातकसे ॥
सजनी शशि में सम शील उभै नवनील सरोरुह से विकसे ॥१७५॥
पग नूपुर औ पहुँची कर कंजन मंजु बनी मणिमाल हिये ॥
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ॥
अरविंद सों आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये ॥
मनमों न बस्यो ऐसो बालक जो तुलसी जगमें फल कौनजिये॥१७६॥
तनु की दुति श्याम सरोरुह लोचन कंज कि मंजुलताईहरैं ॥
अति सुंदर सोहत धूर भरे छबि भूरि अनंगकि दूर धरैं ॥
दमकैं दतियां दुति दामिनि ज्यों किलकैं कल बाल विनोद करैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमन मंदिर में विहरैं ॥ १७७ ॥
कबहूं शशि मांगत आरि करैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं ॥
कबहूं करताल बजाय कै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिस आइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जिहिं लागि अरैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में विहरैं ॥ १७८ ॥
पद कंजन मंजु बनी पनहीं धनुहीं शर पंकज पाणि लिये ॥
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयू तट चौहट हाट हिये ॥
तुलसी ऐसे बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥
नर वे खर शूकर श्वान समान कहो जग में फल कौन जिये ॥ १७९ ॥

सरयू वर तीरहीं तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीर सबै ॥
धनुहीं कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फबै ॥
तुलसी तेहि औसर लावणिता दश चार नौ तीन एकीस सबै ॥
मति भारति पंगु भई जो निहार विचार फिरी उपमा न फबै ॥ १८० ॥

## कवित्त ।

लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सखिन सों प्रेमपथ पालि री ॥ बालक नृपाल जूके ख्याल ही पिनाक तोरचो मंडलीक मंडली प्रताप दाप दालरी ॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको सबको भावतो ह्वैहै मैं जो कह्यो काल री ॥ कौशला की कोखि परतोषि तनु बारिये री राय दशरत्थकी बलाय लीजे आलि री ॥ १८१ ॥

दूब दधि रोचना कनक थार भर भर आरती सँवार वर नार चलीं गावतीं ॥ लीने जयमाल कर कंज सोहैं जानकी के पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन झांकतीं झरोखे लागी शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरीचारु बैठीं निज निज नीड़ चंद की किरन पीवैं पलको न लावतीं॥१८२॥

भले भूप कहत भले भदेश भूपन सों लोक लख बोलिये पुनीत रीतमारखी॥जगदंबा जानकी जगतापितु रामचंद्र जानजियजोहोजोन लागे मुखकारखी॥ देखेहैं अनेकव्याह सुनेहैं पुराण वेद बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारखी ॥ ऐसे सम समधी समाज न विराजमान राम से न वर दुलही न सीय सारखी ॥ १८३ ॥

## सवैया ।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं ॥
गावत गीत सबै मिल सुंदरि वेद युवा जुरि विप्र पढाहीं ॥
रामको रूप निहारत जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥
याते सबै सुधि भूल गई कर टेक रही पल टारत नाहीं ॥ १८४ ॥
गर्भ के अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥

सोइ हौं बूझत राजसभा धनुके दल हौं दल हौं बल ताको ॥
लघु आनन उत्तर देत बड़े लरि है मरि है करि है कछु साको ॥
गोरो गरूर गुमान भरचो कहो कौशिक छोटा सो ढोटा है काको ॥

## कवित्त ।

मख राखवेके काज राज मेरे संगदये दले यातुधान जे जितैया विबुधेश के ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड बाहु दंड बल चंडीशको दंड खंडचो व्याही जानकी नरेश जीते देश देश के ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महाबीर दोऊ नाम राम लषण कुमार कोशलेश के ॥ १८६ ॥

## सवैया ।

काल कराल नृपालनके धनु भंम सुने फरशा लिये धाये ॥
लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखि दिखाये ॥
धीर शिरोमणि वीर बड़े विनयी वियजी रघुनाथ सुहाये ॥
लायक हो भृगुनायक सों धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाये १८७॥
कीरके कागर ज्यों नृप चीर विभूषण उप्पम अंगनि पाई ॥
औध तजी मग वासके रूख ज्यों पंथ के साथ में लोग लुगाई ॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्म क्रिया धर देह सुहाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊ की नाईं १८८
कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तज नीर ज्यों काई ॥
मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमान सुभाय सनेह सगाई ॥
संग सुभामिनि भाय भलो दिन है जनु अवधहु ते पहुनाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाईं॥१८९॥

## कवित्त ।

सिथिल सनेह कहैं कौशला सुमित्राजू सों मैं न लखी सौति सखी भागिनी ज्यों सेई है। कहैं मोहिं मैया मैं न मैया भरत की बलैयां लैहों भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी काय मन बानी हूं न जानके मतेई है । वास विधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम ताकोछल छुरी कोहकुलिश लेटेई है॥

कीजे कहा जीजे जु सुमित्रा परि पांय कहै तुलसी सहावै विधि सोई सहियत है । रावरो सुभाव राम जन्मतहीते जानियत भरत की मात को कीबो सो चहियत है ॥ जाई राज घर व्याह आई राज घर महाराज पूत याहू पै न सुख लहियत है । देह सुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो ताहु पर चाहु बिन राहु गहियत है १९१

## सवैया ।

नाम अजामिलसे खल कोटि अपार नदी भव बूड़त काढे ॥
जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होत अजा खुर वारिधि बाढे ॥
तुलसी जेहिके पद पंकज ते प्रगटी तटनी जो हरे अघ गाढे ॥
ते प्रभु या सरिता तरबे कहँ मांगत नाव कनारे ह्वै ठाढे ॥१९२॥
यहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटि लों जल थाह देखाइहौं जू ॥
परसे पग धूरि तरै तरनी घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौं जू ॥
बरु मारिये मोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू १९३
रावरे दोष न पाँयनको पग धूरिको भूरि प्रभाउ महा है ॥
पाहन ते बलवान न काठको कोमल है जल खाइ रहा है ॥
तुलसी सुन केवट के वर बैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है ॥
पावन पाँय पखारिकै नाउ चढाय हौं आयसु होत कहा है॥१९४॥

## कवित्त ।

पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवटकी जाति कछु वेद न पढाय हौं । सब परिवार मेरो याही लगि राजा जी हौं दीन वित्त हीन कैसे दूसरी गढ़ायहौं ॥ गौतमकी घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभुसों निषाद ह्वैके वाद ना बढायहौं । तुलसीके ईश राम रावरे सों सांची कहौं बिना पग धोये नाथ नाव न चढायहौं१९५

जिनको पुनीत वारि सिरसि बहै पुरारि त्रिपथ गामिनी यश वेद कहैं गाय कै । जिनको योगींद्र मुनि बृंद देव देह दम करत विविध योग जप मन लायकै ॥ तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या

तरी गौतम सिधारे गृह गौनो सो लिवायकै । तेई पायँ पायके चढ़ाय नाव धोये बिनु ख्वैहौं न पठावनीकै ह्वैहौं न हँसायकै १९६ ॥

प्रभु रुख पायकै बोलाय बाल घरनीको वंदि कै चरण चहुँ दिशि बैठे घेर घेर ॥ छोटो सो कठौता भर आन पानी गंगाजूको धोय पाँय पियत पुनीत वारि फेर फेर ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर बरषैं सुमन जय जय कहैं टेर टेर ॥ विबुध सनेह सानी बानी असयानीसुन हँसे राघो जानकी लषण तन हेर हेर १९७

## सवैया ।

जलको गये लक्ष्मणहैं लरिका परखौ पिय छाँहि घरीक ह्वै ढाढ़े ॥
पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पांय पखारिहौं भूभुर डाढ़े ॥
तुलसीरघुबीर प्रिया श्रम जानिकै बैठि बिलंब सों कंटक काढ़े ॥
जानकी नाहको नेह लख्यो पुलकी तनु बारि विलोचन बाढ़े १९८॥
ठाढ़े हैं नौ द्रुम डार गहे धनु कांधे धरे करसायक लै ॥
विकटी भ्रुकुटी बड़री अँखियां अनमोल कपोलनकी छबि है ॥
तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड़ डार धौं प्राण निछावरि कै ॥
श्रम सीकर साँवरि देह लसै मनो रारि महा तम तारक मैं ॥१९९॥

## कवित्त ।

जलज नयन जलजानन जटा हैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदार हैं ॥ साँवरे गोरेके बीच भामिनी सुदामिनी सी मुनि पट धरे उर फूलन के हार हैं ॥ करन शरासन शिलीमुख निषंग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं ॥ तुलसी विलोकके तिलोक के तिलक तीन रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्रसार हैं ॥ २०० ॥

आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे आछे मुनि वेष धरे लाजत अनंग है । बान विशिखासन बसन बनहीं के कटि कसेहैं बनाय नीके राजत निषंग है ॥ साथ निशि नाथमुखी पाथ नाथ नंदनी सी तुलसी विलोके चित लाई लेत संग है ॥ आनँद उमंग मन यौवन उमंग तनु रूपकी उमंग उमगत अंग अंग है ॥ २०१ ॥

सुंदर बदन सरसीरुह सोहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनके ॥ अंशन शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनि पट लूटक पटनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटके विधि विरचैं बरूथ विद्युत छटनके । गोरेको वरन देखे सोनो न सलोनो लागे सांवरो बिलोके गर्व घटत घटन के ॥ २०२ ॥

वल्कल वसन धनु तान पाणि तूण कटि रूपके निधान घन दामिनी वरन हैं ॥ तुलसी सुतीय संग सहज सोहाये अंग नवल कमलहू ते कोमल चरन हैं ॥ और सो बसंत और रति और रतिपति मूरति विलोके तन मनके हरन हैं ॥ तापस वेषै बनाये पथिक पंथै सोहाये चले लोक लोचनन सुफल करन हैं ॥ २०३ ॥

## सवैया ।

वनिता बनि श्यामल गोरेके बीच विलोकहुरी सखि मोहिं सीहै ॥
मग योग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पद पंकज छ्वै॥
तुलसी सुन ग्रामवधू बिथकीं पुलकीं तनु औ चले लोचन च्वै ॥
सब भांति मनोहर मोहन रूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥ २०४ ॥
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियो है ॥
बान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियो है ॥
संग लिये विधु वैनी वधू रतिको जेहिं रंचक रूप दियो है ॥
पाँयन तो पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियो है ॥२०५॥
रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहन हू ते कठोर हियो है ॥
राजहुँ काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जिहिं कान कियोहै ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥
आँखिन में सखि राखबे योग इन्हें किमिकै वनवास दियो है॥२०६॥
शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौहैं ॥
तूण शरासन बाण धरे तुलसी वन मारग में सुठि सोहैं ॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं ॥
पूछत ग्राम वधू सिय सों कहो सांवरो सो सखि रावरोको हैं २०७॥
सुन सुंदर वैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली ॥

तिरछे कर नैन दै सैन तिन्हैं समुझाय कछू मुसकाय चली ॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥
अनुराग तड़ाग में भानु उदै विकसी मानौं मंजुल कंज कली२०८॥
धर धीर कहैं चल देखिय जाय जहां सजनी रजनी रहि हैं ॥
कहि हैं जग पोच न सोच कछू फल लोचन आपन तौ लहिहैं ॥
सुख पाइ हैं कान सुने बतियां कल आपुस में कछु पै कहिहैं ॥
तुलसी अति प्रेम लखी पलकैं पुलकी लखि राम हिये महि हैं२०९ ॥
पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटिमनोज लजाये ॥
वर बाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ॥
यहि मारग आज किशोरवधू विधु बैनी समेत सुभाव सिधाये२१०॥
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु मनोज शरासन सी बनी भौंहैं ॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥
तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछौहैं ॥
केहि भाँति कहौं सजनी तोहि सों मृदु मूरति द्वैनिवसी मन मोहैं२११
शर चारिक चारु बनाय कसे कटि पाणि शरासन सायक लै ॥
वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छवि सो वरणै किमिकै ॥
अवलोक अलौकिक रूप मृगी मृग चौंक चकै चितवै चित दै ॥
न डगैं न भगैं जिय जानि सिलीमुख पंच धरे रतिनाहक है २१२ ॥
पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठहैं राम सुभाय सुहाये ॥
सोहैं प्रिया प्रिय बंधु लसै तुलसी सब अंग घने छवि छाये ॥
देख मृगा मृगनैनी कहैं प्रिय बैन ते प्रीतमके मन भाये ॥
हेम कुरंग के संग शरासन सायक लै रघुनायक धाये ॥ २१३ ॥

## कवित्त ।

देख ज्वाला जाल हाहाकार दशकंध सुन कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं ॥ तुलसी समिध सौज लंक यज्ञ कुंड लखि यातुधान पुंगीफल यव तिल धान हैं ॥ श्रुवा सो लंगूर

बल मूल प्रतिकूल हवि स्वाहा महा हांक हांक हनै हनुमान हैं२१४। बडो विकराल वेख देख सुन सिंहनाद उठ्यो मेघनाद सविषाद कहै रावनो ॥ वेग जितो मारुत प्रताप मार्तण्ड कोटि कालऊ करालता बड़ाई जितो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सोतो प्रभु अबै आवनो ॥ काहेकी कुशल रोषे राम वामदेव हूं की विषम बली सो वादि वैरको बढ़ावनो ॥ २१५ ॥

हाट बाट कोट ओट अटन अगार पौर खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोक चले भागि हैं । बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरैं बूंदिया सी लंक पघिलाई पागि पागि हैं । तुलसी विलोक अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहू के कपि सों निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आये हनुमान प्राण हेतु अंकमालदेत लेत पग धूरि एक चूंबत लँगूर हैं । एक बूझें बार बार सीय समाचार कहो पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है । एक भूखे जान आगे आन कंद मूलफल एक पूजे बाहु बल मूल तोर फूल है ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपानाथ नाथ सीता नाथ सानुकूल है ॥ २१७ ॥

## सवैया ।

विश्व जयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी ॥
बातुल मातुलकी न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूं तौ भलो रघुनाथ मिलें फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी ॥
कीर्ति बड़ो करतूति बड़ो जन बात बड़ो सो बड़ोई बजारी ॥२१८॥

## कबित्त ।

दूषण विराध खर त्रिशिरा कबंध वधे तालहू विशाल बेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिष वश भयो वीर बांकुरो सो ताहू है विदित बल महा बली बालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शंक मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को ॥ वीर

करि केसरी कुठार पाणि मानी हार तेरी कहा चली बूड़े तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

## सवैया।

तोसों कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिये बौरे ॥
बालिबली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई तोहिं कौन तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे ॥
रामके रोष न राखि सकैं तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ २२० ॥
तू रजनीचर नाथ महा रघुनाथके सेवकको जन हौं ॥
बलवान है श्वान गली अपनी तोहिं लाजन गाल बजावत सो हौं ॥
बीस भुजा दशशीश हरों न डरौं प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेत में केहरी ज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तो हौं॥२२१॥
कौशल राजके काज हौं आज त्रिकूट उपारि लै बारिधबोरौं ॥
त्यों भुजदंड द्वै अंड कटाह चपेटके चोट चटाक दै फोरौं ॥
आयसु भंगते जो न डरों सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥
बालिको बालक तौ तुलसी दशहूं मुखके रण में रद तोरौं॥२२२॥
अति कोप सों रोप्यो है पाउँ सभा सब लंक सशंकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से वीर प्रचारके हार निशाचर सैन पचा ॥
न टरै पग मेरुहुते गरुभो सो मनो महि संग विरंचि रचा ॥
तुलसी सब शूर सराहत हैं जगमें बल शालि है बालि बचा ॥ २२३॥

## झूलना।

कनक गिरि शृंग चढ़ देख मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहसभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जाहि देख बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कौशलधनी ख्याल ही बालि बल शालि जीता ॥ रे कंत तृण दंत गहि शरन श्रीराम कहि अजहुँ यहि भाँति लै सौंप सीता ॥ २२४ ॥

रे नीच मारीच बिचलाय हति ताड़का भंजि शिवचाप सुख सबहिं दीनो ॥ सहसदशचार खल सहित खर दूषणहिं पठै यम धाम तें तउ न चीनो ॥ मैं जो कहों कंत सुन मंत भगवंत सों

विमुख ह्वै बालि फल कौन लीनो ॥ बीस भुज शीश दश खीस गे तबहिं जब ईशके ईश सों वैर कीनो ॥ २२६ ॥

बालि दल कालि जल यान पाषान किये कंत भगवंत तैं तब न चीने॥ विपुल विकराल भट भालु कपि कालसेसंग तरु तुंग गिरि शृंग लीनें आयगो कौशलाधीश तुलशीश जिहँ छत्र मिस मौलि दश दूर कीने॥ ईश चकसीस जनि खीस करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीने॥

## कवित्त ।

कह्यो मत मातुल विभीषणहुँ बार बार अंचल पार पिय पाँय लैलै हौं परी ॥ विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानी कीनी जैसी आइ गौं परी ॥ वायस विराध खर दूषण कवंध बाली वैर रघुबीरके न पूरी काहू की परी ॥ कंत बीस लोचन विलोकिये कुमंत फल ख्याल लंका लाय कपि रांड कीसी झोपरी ॥ २२७ ॥

रोषो रण रावण बोलाये वीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपर हने निसान सैना सरहान योग रातिचरराज की ॥ तुलसी विलोक कपि भालु किलकत ललकत लख ज्यों कँगाल पातरी सुनाज की ॥ राम रुख निरख हरप्यो हिय हनुमान मानो खेलवार खोलो शीश ताज वाज की२२८

हाथिन सों हाथी मारे घोरे घोरे सों सँहारे रथन सों रथ बिदरनि बलवान की॥चंचल चपेट चोट चरण चकोर चाहै दाबि हहरानी फौजें भहरानी यातुधान की ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम तुलसी सराहै रीति साहब सुजान की ॥ लांबी लूम लसत लपेट पटकत भट देखो देखो लषण लरनि हनुमान की ॥ २२९ ॥

## सवैया ।

कानन बास दशानन सों रिपु आनन श्री शशि जीत लियो है ॥
बालि महा बल शालि दल्यो कपि पाल विभीषण भूप कियो है ॥
तीय हरी अरु बंधु परचो पै भरचो शरणागत सोच हियो है ॥
बांहपगार उदार कृपाल कहां रघुबीर सों बीर बियो है ॥ २३० ॥

शोक समुद्र निमज्जन काढि कपीश कियो जग जानत जैसो ।

नीच निशाचर वैरीको बंधु विभीषण कीनो पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाय लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥
आरत आरति भजन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ २३१ ॥
मीत पुनीत किये कपि भालुको पाल्यो न काहू ज्यों बाल तनूजो ॥
सज्जन सींव विभीषण भो अजहूं बिलसै वर बंधु बधू जो ॥
कोशलपाल बिना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥
क्रूर कुजाति कुपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ २३२ ॥
अपराध अगाध भये जन ते अपने उर आनत नाहिंनजू ॥
गणिका गज गीध अजामिलके गनि पातक पुंजसराहि न जू ॥
लिये बारक नाम सुधाम दियो जिहि धाम महा मुनि जाहि न जू ॥
तुलसी भजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू ॥ २३३॥
प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महा ॥
झखराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल बिलंब किये न तहां ॥
सुर साखी दै राखी है पांडुबधू पट लूटत कोटिक भूप जहां ॥
तुलसी भज शोच विमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां २३४
नर नारि उघारि सभा महँ होत दिये पट सोच हर्‌यो मनको ॥
प्रहलाद विषाद निवारन बारन तारन मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भार सदा अपने पनको ॥
तुलसी तज आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको ॥ २३५ ॥
ऋषि नारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥
निज लोक दियो शबरी खगको कपि थाप्यो सो मालुम है सबही ॥
दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही ॥
करुणानिधिको भजुरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही ॥२३६॥
कौशिक विप्र बधू मिथिलाधिपके सब सोच दले पलमाहे ॥
बालि दशानन बंधु कथा सुन शत्रु सुसाहिब शील सराहे ॥
ऐसी अनूप कहै तुलसी रघुनायककी अगुनी गुनगाहे ॥
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करै निज हाथन छाहे ॥ २३७ ॥

## कवित्त ।

यातुधानभालु कपि केवट विहंग जो जो पालोनाथ सद्य सो सो

भयो काम काज को ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमान सों सुभाउ महाराज को ॥ नाम तुलसी पै भोड़े भाग सों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को ॥ साहेब समर्थ दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसों तुही आपनेकी लाज को २३८

महा बलि बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखा किये महाराज हों नकाहूकामको ॥ भ्रात घात पातकी निशाचर शरन आये किये अंगीकार नाथ एते बड़े ग्राम को ॥ राय दशरत्थ के समर्थ तेरे नाम लिये तुलसी से कूर को कहत जग रामको ॥ अपने निवाजे की तो लाज महाराज को सुभाउ समुझत मन मुदित गुलामको ॥ २३९ ॥

रूप शील सिंधु गुण सिंधु बंधु दीनको दया निधान जान मणि बीर बाहु बोल को ॥ श्राद्ध कियो गीध को सराहे फल शबरीके शिला शाप सबन निवाह्यो नेह कोल को ॥ तुलसी उचाउ होत राम को सुभाउ सुनि को न बलि जाय न बिकाय बिन मोल को ॥ ऐसेहु सुसाहिब सों जाको अनुराग न सो बड़ोई अभागो भाग जागो लोभ लोल को ॥ २४० ॥

शूर शिरताज महाराजनके महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥ साहिब कहां जहान जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपालु के मराल होत खूसरो ॥ केवट पषाण यातुधान कपिभालु तारे अपनायो तुलसी सो धींग धम धूसरो ॥ बोले को अटल बाँह को पगार दीनबंधु दूबरेको दानी को दयानिधान दूसरो ॥ २४१ ॥

कीबे को विशोक लोक लोक पालहू ते सब कहूं कोऊ भोन चरवाहो कपि भालु को । पविको पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम वापुरो विभीषण घरोंधा हुतो बाल को ॥ नाम ओट लेत ही निखोट होत खोटे खल चोट बिन मोट पाय भयो न निहाल को । तुलसी की बार बलि ढील होत शीलसिंधु बिगरी सुधारबे को दूसरो दयाल को ॥ २४२ ॥

नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश आरति निवारी प्रभु पाहि कहे पील की । छलिनकी छोड़ी सी निगोड़ी छोटी जाति पांति

कीन्हीं लीन आपमें भामिनी भोंड़े भीलकी ॥ तुलसी औतारबो बिसारबो न अंत मोहुं नीके है प्रतीत रावरे सुभाव शीलकी । देवतोदया निकेत देत दाद दीननकी मेरीबार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी २४३

आगे परे पाहन कृपा किरात कोलन कपीश निशिचर अपनाये नाये माथ जू । सांची सेवकाई हनुमानकी सुजानराय रिनियां कहाये हौ विकाने ताके हाथ जू ॥ तुलसी से खोटे खरे होत ओट नाम ही की महँगी माटी मगहू की मृममद साथ जू । बात चले बात कौन मानवो विलग बलि काकी सेवा रीझ को निवाजो रघुनाथ जू ॥ २४४ ॥

शिलाशाप पाप गुह गीध को मिलाप शबरी के पास आप चलि गये हो सो सुनी मैं । सेवक सराह कपि नायक बिभीषण को भरत सभा सादर सनेह सुर धुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल साहिब समत्थ कर नीके मन गुनी मैं । दोष दुख दारिद दलैया दीन बंधु राम तुलसी न दूसरो दया निधान दुनीमें २४५

भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल कारन कृपाल मैं सबै के जी की थाह ली । कादर को आदर काहूके नाहिं देखियत सबन सोहात है सेवा सुजानटाहली ॥ तुलसी सुभाय कहे नहींकछु पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खासमाहली । रामही के द्वारपै बोलाय सनमानियत मोसे दीन दूबरे कपूत कूरकाहली२४६

## सवैया ।

जाके विलोकत लोकपहोत विशोक लहैं सुरलोक सुठौरहिं ॥
सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिर मौरहिं ॥
ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहिन मांगत कूकर कौरहिं ॥
जानकी जीवनको जनह्वै जर जाउ सो जीह जो याचत औरहिं२४७

सुन कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहि के गुन गाथहिरे ॥
सुख मंदर सुंदर रूप सदा उर आन धरे धनु भाथहिरे ॥
रसना निशिवासर सादर सों तुलसी जप जानकी नाथहिरे ॥
कर संग सुसंतन सों नितहीं तज कूर कुपंथ कुसाथहिरे ॥ २४८ ॥

सुत दार अगार सखा परिवार विलोक महा कुसमाजहिंरे ॥
सबकी ममता तजिकै समता सज संत सभान बिराजहिंरे ॥
नर देह कहा कर देख विचार बिगार गवाँर न काजहिंरे ॥
जनि डोलहि लोलुप कूपर ज्यों तुलसी भज कौशल राजहिंरे २४९ ॥
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुख लाग करी नपरै बरनी ॥
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हियेधर चातक की धरनी ॥
कर हंस को वेष बड़ो सबसे तजदे बक वायसकी करनी ॥ २५० ॥
भल भारत भूमि भले कुल जन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥
ममता करखा तजि कै बरखा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
भजिहै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥
बत और सबै विष बीज बुये हर हाटक कामधुका नहिकै ॥२५१ ॥
सो सुकृती शुचि मंत सुसंत सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत हैं तातन छ्वै ॥
गुन गेह सनेह को भाजन सों सबहीं सों उठाय कहौं भुज द्वै ॥
सत भाव सदा चल छाँडि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर को ह्वै॥२५२॥
सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो ॥
सोई सगा सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सा तुलसी प्रिय प्रान समान कहांलों बनायं कहों बहुतेरो ॥
जो तज देह को गेह को नेह सनेह सों राम को होय सबेरो ॥ २५३ ॥
राम है मातु पिता सुत बंधु औ संगी सखा गुरु स्वामि सनेही ॥
राम की सौंह भरोसो है राम को राम रँगी रुचि राचो न केही ॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहि की गति जेही ॥
सोई जिये जग में तुलसी नतु डोलत और मुये धर देही ॥ २५४ ॥
सिय राम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनन को जल है ॥
श्रुति राम कथा मुख राम को नाम हिये पुनि रामहि को थल है ॥
मति रामहि सों गति रामहि सों रति राम सों रामहि को बल है ॥
सबकी न कहै तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फल है ॥ २५५ ॥

झूठो है झूठो है झूठोसदा जग संत कहंत न अंत लहा है ॥
ताको सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ॥
जान पने को गुमानबडो तुलसी के विचार गवाँर महा है ॥ २५६ ॥
जानकी जीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जानकहाहै ॥

तिनते खर शूकर श्वान भले जड़ता वश ते न कहैं कछुवै ॥
तुलसी जिहि राम सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विषाण न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दस मास भई किन बांझ गई किन च्वै ॥
जरि जाउ सो जीवन जानकी नाथ जिये जगमें तुमरो बिनह्वै ॥२५७॥
गज वाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकै सब व्है ॥
धरनी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहू चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोटुक सोटुक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिनह्वै ॥२५८॥
सुरराज सो राजसमाज समृद्ध वरिंचि धनाधिप सो धन भो ॥
पव मान सो पावन सो यम सोम सो पूषन सो भवभूषन भो ॥
कर योग समाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो वशहू मन भो ॥
सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकी जीवन को जन भो २५९

व्याल कराल महा विष पावक मत्त गयंदन के रद तोरे ॥
सासत संग चली डरपैहुते किंकर ते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नहीं प्रहलादहिं कारन के हरि के बल होरे ॥
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखि है राम तौ मारिहै कोरे॥२६०॥
कृपा जेहि की कछु काज नहीं न अकाज नहीं जेहिको मुख मोरे ॥
करै तिनकी परवाहि को जाहि विपाण न पूंछ फिरै दिन दोरे ॥
तुलसी जिहि के रघुवीर से नाथ समर्त्थ सो सेवक रीझत थोरे ॥
कहा भव भीर परी तिहिं धौं विचरै धरनी तिनसों तृण तोरे २६१ ॥

कानन भूधर वारि बयारि महा विष व्याधि दवा अरि घेरे ॥
संकट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखि है राम कृपाल तहां हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे ॥
नाकु रसातल भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ २६२ ॥

जबै यमराज रजायसु तें मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया ॥
तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु विशाल विपत्ति बटैया ॥
सासत घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुं ओर डटैया ॥
एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थ को नंदन वंदि कटैया ॥ २६३ ॥
जहां यम जातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दंत टवैया ॥
जहां धार भयंकर वारन पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहां मात पिता न सखा नहिं कोऊ कहूं अवलंब दवैया ॥
तहां विन कारन राम कृपाल विशाल भुजा गहि काढि लेवैया२६४
जहां हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत बंधु न बाप न मैया ॥
कायगिरा मनके जनके अपराध सबै छल छांडि छमैया ॥
तुलसी तेहि काल कृपाल विना दूजो कौन है दारुन दुःखद मैया ॥
जहां सब संकट दुर्घट सोच तहां मेरो साहिब राखै रमैया ॥ २६५ ॥
जप जोग विराग महा मख साधन दान दया दम कोटि करै ॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढ़े तपसानल में जुग पुंज जरै ॥
मन सों पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ विना दुख कौन हरै॥२६६॥
पापहरे परि तापहरे तन पूजिभो हीतल सीतलताई ॥
हंस कियो बक ते बलि जाउँ कहाँ लौं कहौं करुना अधिकाई ॥
काल विलोकि कहै तुलसी मन में प्रभु की परतीति अघाई
जन्म जहां तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई २६७ ॥
लोक कहै अरु हौं हूँ कहौं जन खोटो खरो रघुनायक ही को ॥
रावरी राम बड़ी लघुता यश मेरो भयो सुखदायक हीको ॥
कै यह हानि सहो बलि जाउँ कि मोहूँ करो निज लायक हीको ॥
आन हिये हित मान करो जोहौं ध्यान धरौं धनु शायकहीको२६८॥

## कवित्त।

छार ते सँवार कै पहार हू ते भारी कियो गारो भयो पांच में पुनीत पच्छ पाइ कै ॥ हौं तो जैसो तब तैसो अब अधमाई कै कै भरों पेट राम रावरोई गुन गाय कै आपने निवाजे की पै कीजै

लाज महाराज मेरी ओर हेरि के न बैठिये रिसाय के ॥ पाल के कृपाल व्याल बाल को न मारिये औ काटिये न नाथ विष हूं को रूख लायके ॥ २६९ ॥

वेद न पुरान गान जानों न विज्ञान ज्ञान ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जोग जाग भाग तुलसी के दया दान दूबरो हों पाप ही की पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोष मोसों कौन कलिहू जो सिखि लइ मेरीये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हों रावरेदयाल दीन बंधु मेरी हीनता२७०

रावरो कहावो गुन गावों राम रावरोई रोटी द्वै हौं पावों राम रावरी हि कानि हौं ॥ जानत जहान मन मेरे हूं गुमान बड़ो मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानि हौं ॥ पांच की प्रतीत न भरोसो मोहि आपनोई तुम आपनायहो तबहि पर जानिहौं॥गढ़ गुढ छोल छाल कुंद कैसी भाई बातें जैसी मुख कहों तैसी जीय जब आनिहौं२७१

वचन विकार करतबहु खुआर मन विगत विचार कलि मल को निधानहै ॥ रामको कहाय नाम बेंच बेंच खाय साध संगत न जाय पाछिले को उपखान है ॥ तेहू तुलसी को लोग भलो कहे ताको पुनि दूसरो न हेत एक नीके के निदान है ॥ लोक रीत विदित विलोकियत जहां तहां स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमानहै॥२७२॥

स्वारथ को साज न समाज परमारथ को मोसो दगाबाज दूसरो न जग जाल है ॥ कैन आयो करों न करोंगो करतूति भलि लिखी न विरिंचि हूं भलाई भोरे भाल है ॥ रावरी शपथ राम नाम ही की गति मेरे इहांझूठो झूठो सो तिलोक तिहूं कालहै ॥ तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपाल कीजे न विलंब बलि पानी भरीखालहै२७३

राग को न साज न विराग जोग याग जिय कायर न छांडि देत ठाटिवो कुठाट को ॥ मनोराज करत अकाज भयो आज लग चाहे चारु चीर पै लहे न टूक टाट को ॥ भयो करतार बड़े कूर को कृपाल अति पायो नाम पारस हौं लालची बराट को ॥ तुलसी बनी है राम रावरे बनाये नतो धोबी कैसो कूकर न घर को न घाटको ॥

सब अंग हीन सब साधन विहीन मन वचन मलीन हीन कुल करतूति हौं ॥ बुधि बल हीन भाव भगति विहीन दीन गुन ज्ञान हीन हीन भाग हूं विभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहोर राम नाम जाहि जप जीह राम हूं को बैठो धूति हौं ॥ प्रीत राम नाम सों प्रतीत राम नाम को प्रसाद राम नाम के पसारि पायँ सूति हौं ॥ २७७ ॥

जोग न विराग जप याग तप त्याग व्रत तीरथ न धर्म जानो वेद विधि किमि है ॥ तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है कहूं सोचैं सब याके अघ कैसे प्रभु छमि है ॥ मेरे तो न डर रघुवीर सुनो सांची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जन न गमि है ॥ भले सुकृती के संग मोहिं तुला तोलिये तो नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमि है ॥

जाति के सुजाति के कुजाति के पेटागि वश खाये टूक सबके विदित बात दुनी सो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतभाय राम को कहाय दास दगाबाज पुनी सो ॥ राम नामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसी सो जग मानियत महामुनी सो ॥ अतिही अभागे अनुरागत न राम पद मूढ एतो बडो अचरज देखसुनीसो ॥

वेद हूं पुरान कही लोक हूं विलोकियत राम नाम ही से रीझे सकल भलाईहै ॥ काशी हू मरत उपदेशत महेश सोई साधन अनेक चितई न चित लाई है ॥ छाँछ को ललात जेत राम नाम के प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है ॥ राम राज सुनियत राज-नीति की अवधि नाम राम रावरो तो चाम की चलाई है ॥ २७८ ॥

जपको न तप खप कियो न कमाई जोग याग न विराग त्याग तीरथ न तन को ॥ भाई को भरोस न खरोसो वैर रिपुहू सो बल अपनो न हित जननी जनक को ॥ लोक को न डर परलोक को न सोच देव सेवा न सहाई सर्व धाम को न धन को ॥ राम ही के नाम तेजो होई सोई नीकी लागे ऐसो ही सुभाउ कछु तुलसी के मन को

ईस न गनेस न धनेस न दिनेस न सुरेस सुर गौरी गिरा पति नहिं जपने ॥ तुमरोई नाम को भरोसो भव तरबे को बैठे उठ जागत बागत

सोये सपने ॥ तुलसी है बावरो सो बावरोई रावरो सो रावरे हू जान जिय कीजिये जू अपने ॥ जानकी जीवन मेरे रावरे वदन फेरे ठाउँ न समाउँ कहूं सकल निरपने ॥ २८० ॥

स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो राम रावरो हौं जानत जहान है ॥ नाम के प्रताप बाप आज लौं निबाहि नीकी आगे की गोसाईं स्वामी सबल सुजान है ॥ कलि की कुचाल देख दिन दिन दूनी देव पाहरोई चोर हेर हिय हहरान है ॥ तुलसी की लिपि बार बार ही सम्हार कीबो यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है २८१ ॥

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय दिन दुःख रोइये कलेश कोह काम को ॥ राजा रंक रागी औ विरागी भूरि भागीये अभागी जीव जरत प्रभाव कलि बाम को ॥ तुलसी कबंध कैसो धायबो विचार अंध धुंध देखियत जग सोच परिनामको ॥ सोइबो जो रामके सनेह की समाधि सुख जागिबोजो जीहजपै नीके राम नामको

बरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो त्रासन चकृत सो परावनो परोसो है ॥ करम उपासना कुवासना बिनास्यो ज्ञान वचन विराग वेष जगत हरोसोहै ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग निगम नियोग ते सो कलि ते छरोसो है ॥ काय मन वचन सुभाय तुलसी है जाहि राम नाम को भरोसो ताही को भरोसो है ॥ २८३ ॥

## सवैया।

वेद पुरान बिहाय सुपंथ कुमारग कोटि कुचाल चली है ॥
काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ोही छली है ॥
वर्ण विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ॥
स्वारथ को परमारथ को कलि रामको नाम प्रताप बली है ॥२८४॥
न मिटै भव संकट दुरघट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो ॥
कलि में न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूठ जटो ॥
नट ज्यों जिन पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो ॥
तुलसी जो सदा सुख चाहिये तो रसना निस वासर राम रटो ॥२८५॥

दम दुर्मद दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धन को ॥
तप तीरथ साधन योग विराग सुहोय नहीं दृढ़ता तनको ॥
कलि काल कराल में राम कृपाल इहै अवलंब बड़ो मनको ॥
तुलसी सब संजम हीन सबै एक नाम अधार सबै जनको ॥ २८६ ॥
पाय सुदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछू की ॥
राम कथा बरनी न बनाय सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रूकी ॥
अब जोर जरा जर गात गये मन मान मलान कुबान न मूकी ॥
नीके कै ठीक दई तुलसी अवलंब बड़ी उर आखर दूकी ॥ २८७ ॥
राम विहाय मराजपते बिगरी सुधरी कवि कोकिलहू की ॥
नामहिं ते गज की गनकाहू अजामिलकी चलिगै चल चूकी ॥
रामप्रताप बड़े कुसमाज बचाय रही पति पंडु बधू की ॥
ताको भलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दूकी २८८॥

## कवित्त ।

बबुर बहेर को बनाय बाग राखियत रूंधवे को सोऊ सुरतरु काटियत है। गारी देत नीच हरिचंद हूं दधीच हूं को आपने चना चवाय हाथ चाटियत है॥ आप महापातकी हँसत हरि हर हूं को आप है अभागी भूरि भागी डाटियत है। कलि की कलुष मन मलिन किये महत मशक की पाँसुरी पयोधि पाटियत है२८९॥

## सवैया ।

कवि कहा पढ़वे को कहा फल बूझ न वेद को भेद बिचार्‌यो ॥
स्वारथको परमाथ को कलि कामद राम को नाम बिसार्‌यो ॥
वाद विवाद विषाद बढ़ायके छाती पराई औ आपनी जार्‌यो ॥
चारहुको छहुको नवको दस आठकोपाठकुकाठ ज्यों फार्‌यो२९०॥

## कवित्त ।

नाहीं मेरे जाति पाँति नाहीं मेरे मायबाप नाहीं मेरे कोऊ काम हों न काहू काम को। लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को ॥ अति ही सयानो उपखानो नाहिं

बूझे लोग साहब के गोत गोत होत है गुलाम को ॥ साधु के असाधु कै भलौ कै पोच सोच कहा का काहू के द्वार परयो जो हौं सो हौं राम को ॥ २९१ ॥

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बड़ो कोऊ कहै राम को गुलाम खरो खूब है ॥ साधु जाने महा साधु खल जाने महाखल बानी झूठी सांची कोटि उठत हबूब है ॥ चहत न काहू सों कहत न काहू को कछू सब की सहत उर अंतर न ऊब है ॥ तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के राम की भगति भूमी मेरी मति दूब है २९२

जागे योगी जंगम यती समाधि ध्यान धरैं डरैं उर भारी लोभ मोह कोह काम के ॥ जागे राजा राज काज सेवक समाज साज सोचै सुन समाचार बड़े वैरी बाम के ॥ जागे बुध विद्या हित पंडित चकित चित जागे लोभी लालच धरनि धन धाम के ॥ जागे भोगी भोग ही वियोगी रोगी रोग बस सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के ॥ २९३ ॥

## छंद षटपद ।

राम मात पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम हित । साहब सखा सहाय नेह नातो पुनीत चित ॥ देश कोश कुल धर्म कर्म धन धाम धरनि गति । जाति पांति सब भांति लागि रामहिं हमारि पति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ राम ते सकल फल । कहै तुलसिदास अब जब कबहुँ एक राम ते मोर भल ॥ २९४ ॥

महाराज बल जाउँ राम सेवक सुखदायक । महाराज बल जाउँ राम सुंदर सब लायक ॥ महाराज बल जाउँ राम सब संकट मोचन ॥ महाराज बल जाउँ राम राजीव विलोचन ॥ बल जाउँ राम करुणायतन प्रणत पाल पातक हरन । बल जाउँ राम कलिमल विकल तुलसिदास राखिय शरन ॥ २९५ ॥

जय ताड़का सुबाहु मथन मारीच मान हर । मुनिमख रक्षण दक्ष शिला तारन करुनाकर ॥ नृप गन बल मद सहित शंभु कोदंड बिहंडन ॥ जय कुठार धर दर्प दलन दिनकर कुल मंडन ॥ जय

जनक नगर आनंद प्रद सुख सागर सुखमा भवन ॥ कहै तुलसिदास सुर मुकुट मनि जय जय जय जानकि रमन ॥ २९६॥

जाय सो सुभट समर्थ पाय रन रारि न मंडे ॥ जाय सो यती कहाय विषै वासना न छंडै ॥ जाय धनिक बिन दान जाय निरधनै बिन धर्महि ॥ जाय सो पंडित पढ़ पुरान जो रत न सुकर्महि ॥ सुत जाय मात पितु भगति विन तिय सो जाय जिहि पति न हित ॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जो न राम पद नेह नित ॥ २९७ ॥

को न क्रोध निरदहेउ काम बस केहि नहिं कीनो ॥ को न लोभ दृढ़ फंद बांध त्रास न कर दीनो ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारि नयन शर ॥ लोचन युत नहि अंध भयो श्री पाय कवन नर ॥ सुर नाग लोक महि मंडलहु को जु मोह कीनो जय न ॥ कहै तुलसिदास सो उबर जेहि राख राम राजिवनयन ॥ २९८ ॥

## सवैया ।

भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि विलोकन बान ते बाचे ॥ कोप कृशानु गुमान अवाँघट ज्यों जिनके मन आवन आछे ॥ लोभ सभै नट के वश ह्वै कपि ज्यों जग में बहु नाच न नाचे ॥ नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुवीर के सेवक सांचे ॥ २९९ ॥

## कवित्त ।

भेष सुबनाय भले वचन कहै चुचाय जाय तो न जरनि धरनि धन धाम की । कोटिक उपाय कर लाल पालियत देह मुख कहियत गति राम ही के नाम की ॥ प्रगट उपासना दुरावै दुर्वासनाहि मानस निवास भूमि लोभ मोह काम की । राम रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसी से भगत भगति चहैं राम की ॥ ३०० ॥

काल ही तरुन तन काल ही धरनि धन काल ही जितौंगो रन कहत कुचालि है । काल ही साधोंगो काज काल ही राजा समाज मोसों कोऊ कहा भारो मही मेरु हालि है ॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घर घालि है ॥

देखत कहत समुझत हूं न सूझे सोई कबहूं कह्यो न कालहूं को काल कालि है ॥ ३०१ ॥

भयो न तिकाल तिहूं लोक तुलसी सो मंद निंदें सभ साधु सुनि मानों न सँकोच हौं । जानको अयो गहिय हानि मानें जान कीश काहेको परखो हौं पापी प्रपंची पोच हौं ॥ पेटभरवेके काज महाराजको कहायो महाराजहूं कह्यो है प्रनत विमोच हौं ॥ निज अघ जाल कलि काल की करालता विलोकि होत व्याकुल करत सोई सोचहौं ॥ ३०२ ॥

## राग देवगंधार ।

यह मन नेक न कह्यो करें । सीख सिखाय रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरे ॥ मद माया के भयो बावरो हरि यश नहिंउचरें । कर परपंच जगत को डहकें अपनो उदर भरें ॥ श्वान पूछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरें । कहु नानक भज राम नाम नित जाते काज सरें ॥ ३०३ ॥

## राग देवगंधार ।

सभ कछु जीवतको व्यवहार । मातपिता भाई सुत बंधव अरु पुनगृहकीनार ॥ तनतेप्राण होतजबन्यारे टेरतप्रेतपुकार । आधघरी कोऊ नहीं राखे घरते देत निकार । मृगतृष्णा ज्यों जग रचना यह देखो हृदयविचार । कहुनानक भजराम नाम नित जातेहोतउधार ॥

## राग देवगंधार ।

जगत में झूठी देखीप्रीत । अपनेही सुखसों सब लागे क्यादारा क्या मीत ॥ मेरोमेरो सभी कहत हैं हित सों बांध्यो चीत । अंतकाल संगी नहिं कोऊयह अचरजहैरीत ॥ मन मूरख अजहूं नहिं समझत शिख दे हारचो नीत । नानक भी जल पार परे जो गावें प्रभुकेगीत ॥

## राग सोरठ ।

मन की मनही माहिरही । ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही । और सकल

मिथ्या यह जानो भजन राम को सही ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारचो मानस देह लही । नानक कहत मिलन की बिरियां सुमिरत कहा नहीं ॥ ३०६ ॥

## राग सोरठ ।

मनरे कौन कुमति तैं लीन्ही । पर दारा निंदा रस राच्यो राम भगति नहिं कीनी ॥ मुक्त पंथ जान्यो तैं नाहिन धन जोरन को धायो । अंत संग काहू नहिं दीनो बिरथा आप बँधायो ॥ ना हरि भजे न गुरु जन सेयो नहिं उपज्यो कछु ज्ञाना । घट ही माहिं निरंजन तेरे तैं खोजत उद्याना ॥ बहुत जन्म भरमत तैं हारचो अस्थिर मति नहिं पायो । मानस देह पाय पद हरि भज नानक बात बतायो ॥ ३०७ ॥

## कवित्त ।

धरम को सेतु जग मंगल को हेतु भूमि भार हरवे को अवतार लियो नर को । नीति औ प्रतीति प्रीति पाल चाल प्रभु मान लोक वेद राखवे को पन रघुवीरको ॥ वानर बिभीषण की ओर को कनावड़ो है सो प्रसंग सुने अंग जरै अनुचर को । राखे रीत आपनी जो होय सोई कीजे वलि तुलसी तिहारो घर जाइड़ो है बरको ॥३०८॥

नाम महाराज के निवाहो नीकी कीजै उर सबहि सोहात मैं न लोगन सोहातहौं । कीजैरामबार एक मेरी ओर चषकोर ताहि लग रंक ज्यों सनेह को ललात हौं॥तुलसी बिलोक कलि काल की करालता कृपाल को सुभाउ समुझत सकुचातहौं । लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथ लोक बस आपनो न सोच स्वामी सोचही सुखातहौं ॥

तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लवार बार बार लालच धरनि धन धाम को । तबलौं वियोग रोग सोग भोग यातना के युग सम लागत जीवन जाम जाम को ॥ तौलौं दुख दारिद दाहत अति नित तन तुलसी है किंकरविमोह कोहकामको । सबदुखअपने निरापने सकल सुख जौलौं जन भयो न बजाय राजा राम को ॥ ३१० ॥

तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहां तहां दुखी जन भाजन कलेस को। तबलौं उबेने पाये फिरत पटी खलाये बाये मुह सहत पराभौ देस देस को ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिद को साथरी को सोइबो ओढ़बो झूनेखेसको। जबलौं न भजै जीह जानकी जीवन राम राजन को राजा सो तो साहिब महेसको ॥ ३११ ॥

ईसन के ईस महाराजन के महाराज देवन के देव देव प्रान हूके प्रान हो। कालहूकेकाल महाभूतन के महाभूत कर्महू के कर्म निदान के निदान हौ । निगम को अगम सुगम तुलसी हू से को एते मान शील सिंधु करुना निधान हौ ॥ महिमा अपार काहू बोल को न वार पार बड़ी साहिबी में नाथ बड़े सावधान हो ॥ ३१२ ॥

## सवैया ।

आरतपाल कृपाल जो राम जहीं सुमिरेतिहको तांहिंठाढ़े ॥
नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥
सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहुं तापन डाढ़े ॥
प्रेम बदौं प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे ॥ ३१३॥
काढकृपान कृपा न कहूं पितु काल कराल विलोकि ग भागे ॥
राम कहां सबठां उहै खंभमें हांसुनि हांक नृकेहरी जागे ॥
वैरी विदार भये बिकराल कहेप्रहलादहिं के अनुरागे ॥
प्रीतप्रतीत बढ़ीतुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे ॥ ३१४ ॥
अंतरजामिहु ते बड़ बाहिर जामि हैं राम जे नाम लिये ते ॥
धावत धेनु पन्हाय लवाय ज्यों बालक बोलन कान कियेते ॥
आपन बूझ कहे तुलसी कहबे की न बावरि बात बियेते ॥
पैज परे प्रहलाद हु कों प्रगटे प्रभु पाहन ते न हियेते ॥ ३१५ ॥
बालक बोल दियो बलि काल को कायर कोटि कुचालचलाई ॥
पापी है बाप बड़ो परिताप तें आपनी ओर ते खोर न लाई ॥
भूरि दई विष मूरि भई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई ॥
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भले को भलोई भलाई ॥ ३१६ ॥
कंस करी व्रज वासिन पै करतूति कुभांति चली न चलाई ॥

पंडु के पूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटो छलाई ॥
कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ॥
ठीक प्रतीत कहै तुलसी जग होय भले को भलोई भलाई ॥३१७॥
अवनीस अनेक भये अवनी जिनके डर ते सुर सोच सुखाहीं ॥
मानव दानव देव सतावन रावन घाट रच्यो जग माहीं ॥
ते मिलये धर धूर सुयोधन जे चलते बहु छत्र की छाहीं ॥
वेद पुरान कहै जग जान गुमान गोविंदहिं भावत नाहीं ॥ ३१८ ॥
जब नैनन प्रीत गई ठग स्याम सों स्यानी सखी हठ हौं बरजी ॥
नहींजानो वियोग सुरोगसो आगे झुकी तब हौं तोहिंसो तरजी ॥
अब देह भई पट नेह के घाले सो ब्योंत करे विरहा दरजी ॥
व्रजराज कुमार विना सुन भृंग अनंग भयो जिय को मरजी ॥३१९॥
योग कथा पठई व्रज को सब सो शठ चेरी को चाल चलाकी ॥
ऊधोजी कौन कहै कुबरी जो बरी नट नागर हेर हलाकी ॥
जाहि लगे पर जाने सोई तुलसी सो सुहागिनि नंद लला की ॥
जानि है जानपनी हरि की अब बांधियेगी कछू पोट कला की३२०॥

## कवित्त ।

पठयो है छपद छबीले कान्ह केहू कहूं खोज के खवास खासो कूबरी सी बाल को । ज्ञान को गढ़ैया विन गिरा को पढ़ैया बार खाल को कढ़ैया सो बढ़ैया उर सालको ॥ प्रीति को बधिक रस रीति को अधिक नीति निपुण विवेक है निदेश देश काल को ॥ तुलसी कहे न बने सहे ही बनेगी सब योग भयो योग को वियोग नंदलाल को ॥ ३२१ ॥

हनुमान ह्वै कृपाल लाडले लखन लाल भावते भरत हैं तवक सहाय जू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनो सो बिगर ते आपही सुधारि लीजेभाय जू । मेरी साहिबनी सदा सीस पर बिलसत देवि क्यों न दास को देखाइयत पाय जू ॥ खीझ हू में रीझबे की बानी राम रीझत है रीझि हैं ई राम की दोहाई रघुराय जू ॥ ३२२॥

## सवैया ।

वेष विराग को राग भरो मन भाव कहौं सत भाव हौं तोसों ॥

तेरेही नाथ को नाम लै बेचहों पातकी पांवर प्रानन पोसों॥
एते बड़े अपराध अघी कहूं तू कहु अंब कि मेरो तु मोसों॥
स्वारथ को परमारथ को परि पूरन भो फिर घाट न हों सों॥३२३॥

## कवित्त।

जहां वालमीक भये व्याधते मुनिंद साधु मरा मरा जपे सिख सुन रिषि सात की। सिय को नेवास लव कुस को जनम थल तुलसी छुवत छांह ताप गरे गातकी॥ विटप महीप सुरसरित समीप सोहै सीतावट पेखत पुनीत होत पातकी। वारि पुर दिग पुर बीच विलसत भूमि अंकित जो जानकी चरन जल जातकी॥३२४॥

मरकत वरन पारन फल मानिक से लसेजटा जूट जनु रूख बेख हर है। सुखमा को ढेर कै धों सुकृत सुमेरु कैधों संपदा सकल मुद मंगल को घर है॥ देत अभिमत जो समेत प्रीत सेइये प्रतीत मान तुलसी विचार का को थर है॥ सुरसरि निकट सोहावनि॥ अवनि सोहै राम रवनी को वट कलि कामतर है॥ ३२५॥

देवधुनि पास मुनि वास श्रीनिवास जहां प्राकृत हू बट बुट बसत पुरारि है। योग जप याग को विराग को पुनीत पीठ रागिन को सीठी डीठी बाहरो निवार है॥ आहस अदेस बाबू भलो भलो भाव सिध तुलसी विचार योगी कहत पुकार है। राम भगतनको तो कामतरु ते अधिक सिय बट सेये करतल फल चार है ३२६॥

जहां वन पावनो सुहावने विहंग मृग देख अति लागत अनंद खेत खूटसो॥ सीताराम लक्ष्मण निवास वास मुनिन को सिद्ध साध साधक सबै विवेक बूट सो॥ झरना झरत झार सीतल पुनीत वारि मंदाकिनि मंजुल महेश जटा जूटसो। तुलसी जो राम सों सनेह सांचो चाहिये तौ सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट सो॥ ३२७॥

## सवैया।

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गम नाहिं गिरा गुन ज्ञान गुनी को॥
जो करता भरता हरता सुर राय सुसाहिब दीन दुनी को॥

सोई भयो द्रवरूप सही जो है नाथ विरंचि महेश मुनी को ॥
मान प्रतीत सदा तुलसी जल काहेन सेवत देवधुनी को ॥ ३२८ ॥
दानि जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूं पुर मे सिर टीको ॥
भोरो भलो भले भाय को भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसी को ॥
ताबिन आस को दास भयो कबहूं न मिटचो लघु लालच जी को ॥
साधो कहा कर साधन ते जो पै राधो नहीं पति पारवती को ३२९॥
जाते जरे सब लोक विलोक त्रिलोचन सो विष लोक लियो है ॥
पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय साईं हियो है ॥
मेरोइ फोरबे योग कपार किधों कछु काहू लखाय दियो है ॥
काहे न कान करो विनती तुलसी कलि काल बिहाल कियो है ३३०॥

## राग बिलावल ।

दीन दयाल दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥
हिम तम करि केहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरितरुजाली ॥
कोक कोकनद लोक प्रकासी । तेज प्रताप रूप रस रासी ॥
सारथि पंगु दिव्य रथ गामी । हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥
वेद पुरान प्रगट यश जागे । तुलसी राम भगति वर मांगे ॥३३१ ॥

को याचिये शंभु तज आन । दीन दयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ काल कूट ज्वर जरत सुरासुर निज पन लाग कियो विष पान । दारुन दनुज जगत दुख दायक मारचो त्रिपुर एक ही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत संत श्रुति सकल पुरान । सोइ गति मरन काल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान ॥ सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवती पति परम सुजान । देहु राम पद नेहु काम रिपु तुलसि दास कहँ कृपा निधान ॥ ३३२ ॥

## राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शंकर से नाहीं । दीन दयाल दिवो ही भावे याचक सदा सुहाहीं ॥ मारि के मार थप्यो जग में जाकी प्रथम रेख भट

माहीं । ता ठाकुरको रीझ निवाजबो कह्यो क्यों परत मो पाहीं ॥ योग कोटि करि जो गति हरि सों मुनि माँगत सकुचाहीं । वेद विदित तेहि पद पुरारि पुर कीट पतंग समाहीं ॥ ईश उदार उमापति परिहर अनत जे याचन जाहीं । तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कबहुँ न पेट अघाहीं ॥ २३३ ॥

बावरो रावरो नाह भवानी । दानी बड़ो दिन देत दिये बिन वेद बड़ाई भानी ॥ निज घरकी बर बात विलोकहु हो तुम परम सयानी । शिवकी दई संपदा देखत श्री शारदा सिहानी ॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुखकी नहीं निसानी । तिन रंकनको नाक सँवारत हौं आयों नकबानी ॥ दुखी दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी । यह अधिकार सौंपिये औरहिं भीख भली मैं जानी ॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग्य युत सुन विधिकी वर वानी । तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगत मातु मुसकानी ॥ २३४ ॥

## भजन राग रामकली ।

माँगिये गिरिजापति कासी । जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे । सकत न देखि दीन कर जोरे ॥ सुख संपति मति सुमति सुहाई । सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये जे शरण आरतिके लीने । निरख निहाल निमिष महँ कीने ॥ तुलसिदास याचक यश गावै । विमल भक्ति रघुपतिकी पावै २३५

कस न दीन पर द्रवहु उमा वर । दारुण विपति हरण करुणाकर ॥ वेद पुराण कहत उदार हर । हमरि बेर का भयो कृपिन तर ॥ कवनि भक्ति कीनी गुणनिधि द्विज । ह्वै प्रसन्न दीन्यो शिव पद निज ॥ जो मति अगम महामुनि गावहिं । तव पुर कीट पतंग हु पावहिं ॥ देहु काम रिपु रामचरण रति । तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ २३६ ॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्ति भुक्ति दायनि भयहरनि कालिका । मंगल मुद सिद्ध सदनि पर्व

शर्वरीश वदनि ताप तिमिर तरुण तरणि किरणि मालिका ॥ वर्म चर्म कर कृपाण शूल शेल धनुष बाण धरणि दलनि दानव दल रण करालिका । पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह वेताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेश भामिनि अनेक रूप नामिनि समस्त लोक स्वामिनि हिम शेल बालिका ॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहै अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥ ३३७ ॥

## राग धनाश्री ।

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी । विष्णु पद कंज मकरंद इव अंबु वर वहसि दुख दहसि अघ वृंद विद्रावनी ॥ मिलत जल पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर धामिनी । जन्हु कन्या धन्य पुण्य कृत सगर सुत भूधर द्रोणि विद्दरणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं सुकृत पुंज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद मदन पाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीर वर मध्य धारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अमित रूप भूपावली मुकुटमणि बंध त्रैलोक्य पथ गामिनी । देहु रघुवीर पद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भव भामिनी ॥ ३३८ ॥

सेइये सहित सनेह देह भर कामधेनु कलिकासी । शमन शोक संताप पाप रुज सकल सुमंगलरासी ॥ मर्यादा चहुँ ओर चरणवर सेवत सुरपुर वासी । तीरथ सभ शुभ अंग रोम शिव लिंगअमित अविनासी॥अंतर अयन अयन भल थल फल बच्छ वेद विश्वासी । मल कंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसत सरिताशी ॥ दण्डपाणि भैरव विशाल मल रुचि खल गण भय दासी । लोल दिनेश त्रिलोचन लोचन कर्ण घंट घंटा सी ॥ मणिकर्णिका वदन शशि सुंदर सुर सरिस सुखमासी । स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचकोश

महिमा सी ॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजा सी। सिद्धि शची शारद पूजहिं मन जोगवत रहत रमासी॥ पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंच नदासी। ब्रह्म जीव सम राम नाम दोउ आखर विश्वविकासी॥ चारितचरित कुकर्म कर्मकर मरतजीव गण घासी। लहत परमपद पय पावन जिहिं चहत प्रपंच उदासी॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कला सी। तुलसी वस हर पुरी राम जप जो भयो चहै सुधासी॥ ३३९॥

## राग वसंत।

सबशोच विमोचनचित्रकूट। कलिहरन करनकल्यान बूट॥ शुचिअवनि सुहावनि आलवाल। काननविचित्र वारीविशाल॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सींच। वर वारि विषम नर नारि नीच॥ शाखा सुश्रृंग भूरुह सुपात। निरझर मधु वर मृदु मलय वात॥ शुक पिक मधुकर मुनि वर विहार। साधन प्रसून फल चारु चार॥ भव घोर घाम हर सुखद छाँह। थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह॥ साधक सुपाथिक बड़े भाग पाई। पावत अनेक अभिमत अघाइ॥ रस एक रहत गुण कर्म काल। सिय राम लषण पालक कृपाल॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम। सेइय गिरि कर निरुपाधि नेम॥ ३४०॥

अब चित चेत चित्रकूटहिंचल। कोपित कलि लोपित मंगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोकि रघुवर विहार थल। शैल श्रृंग भव भंग हेतु लख दलन कपट पाखंड दंभ दल॥ जहँ जन्मे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहर प्रपंच छल। सुकृत प्रवेश करत जिहिं आश्रम विगत विषाद भये पारथनल॥ नकराविलंब विचार चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलेपल। मंत्र सो जाय जपहिं जो जपत में अजर अमर हर अचय हलाहल॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जत पय पावन पीवत जल। करि हैं राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल॥ कामदमणि कामदा कल्पतरु सो युग युग जागत जगती तल। तुलसीतोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकैबल३४१॥

## राग सारंग ।

जाके गति है हनुमान की । ताको पयज पूज आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटित घटन सुघट विघटन ऐसी विरुदावलि नहिं आनकी । सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी। तुलसी कपिकी कृपा विलोकन खानि सकल कल्यानकी ॥ ३४२ ॥

अति आरत अति स्वारथी अतिदीनदुखारी । इनको विलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर नारी । अति वरषे अन वरषे हूं देहि देवहि गारी ॥ नाकहि आये नाथसों साथत भयभारी । कहआमो कीबी क्षमा निज ओर निहारी॥ समय सांकरे सुमिरिये समरथ हितकारी । सो सब विधि ऊपर करे अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहिबहिं सुधारी । तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निरारी ॥ ३४३ ॥

## राग गौरी ।

मंगल मूरति मारुतनंदन । सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारी । हृदय विराजत अवध विहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद । शिवा समेत शंभु शुक नारद ॥ चरण वंदि विनवों सब काहू । देहु रामपद नेह निबाहू ॥ वंदौं राम लषण वैदेही । जो तुलसी के परम सनेही ॥ ३४४ ॥

## राग केदार ।

कबहुँक अंब अवसर पाइ । मेरिये सुधि द्याबवी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अँग हीन क्षीन मलीन अघी अघाय । नाम ले भरों उदर इक प्रभु दासी दास कहाय ॥ बूझिहैं सो है कौन कहवो नाम दशा जनाय । सुनत राम कृपालु के मेरी बिगरिऔ वनिजाय ॥ जानकी जग जननि जनकी किये वचन सहाय । तरे तुलसीदास भव तव नाथ गुण गण गाय ॥ ३४५ ॥

## राग केदार ।

कबहुँ समय सुधि द्यायबी मेरी मातु जानकी ॥ जन कहाय राम लेत हों पन चातक ज्यों प्यास सुप्रेम पानकी ॥ सरल प्रकृति आप जानिये करुणानिधान की ॥ निज गुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ बानि विसारणशील हे मानद अमान की ॥ तुलसीदास न विसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुं गति नहिं आन की ॥ ३४६ ॥

## राग रामकली ।

ऐसी आरती राम रघुवीरकी करहि मन ॥ हरण दुख द्वंद्व गोविंद आनंद वन ॥ अचर चर रूप हरि सर्वगत सर्वदा वसत इति वासना धूप दीजै ॥ दीप निज बोध गत क्रोध मद मोह तम प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परम संतोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत शूल संशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दश वर्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रकासं ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जग निवासं ॥ विमल हृदि भवन कृत शांति पर्यंक शुभ शयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रभु स्वतंत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ यह आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिल मुनि तत्त्व दरसी ॥ करै सोइ तरै परिहरै कामादि मल वदत इति अमल मति दास तुलसी ॥ ३४७ ॥

## राग रामकली ।

हरत सब आरति आरती राम की ॥ दहत दुख दोष निर्मूल नीकाम की ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ॥ उड़त अघ विहँग सुन ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ॥ विमल विज्ञान मय तेज विस्तारणी ॥ मोह मद कोह कलि कंज हिम यामिनी ॥ मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥

प्रणत जन कुमुद वन इंदु कर जालिका । तुलसि अभिमान महिषेश बहु कालिका ॥ ३४८ ॥

## राग जैतश्री ।

मन इतनोई या तनुको परम फल । सब अँग सुभग बिंदु माधव छबि तज सुभाव अवलोक एक पल ॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदय तिमिर हारी । कुलिश केतु यव जलज रेख वर अंकुश मन गज वशकारी ॥ कनक जटित मणि नूपुर मेखल कटि तट रटत मधुर वानी ॥ त्रिवली उदर गँभीर नाभिसर जहँ उपजे विरिंचि ज्ञानी॥उर वनमाल पदिक अति शोभित विप्र चरण चित कहँ करषे । श्याम तामरस दाम वरण वपु पीतवसन शोभा वरषे ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देत मोद मुद्रिक न्यारी ॥ गदा कंज दर चारु चक्र धर नाग शुंड सम भुज चारी । कंबु ग्रीव छबि सीव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा ॥ नव राजीव नयन शशि आनन सेवक सुखद विशद हासा ॥ रुचिर कपोल श्रवण कुंडल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजे ॥ ललित भ्रुकुटि सुंदर चितवन कच निरख मधुप अवली लाजे ॥ रूप शील गुण खानि दक्षि दिशि सिंधुसुता रत पदसेवा ॥ जाकी कृपा कटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुज दनुज देवा । तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यह स्वरूप अटकै । नाहिं तो दीन मलीन हीन सुख कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै ॥ ३४९ ॥

## राग भैरव ।

राम राम रम राम राम रट राम राम जप जीहा ॥ राम नाम नव नेह मेहको मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल कूप सरित सर सागर सलिल निरासा ॥ रामनाम रति स्वाति सुधा शुभ सीकर प्रेम पियासा ॥ गरज तरज पाषान बरष पवि प्रीति परख जियजानै ॥ अधिक अधिक अनुराग उमग उर पर परमित पहिचानै ॥ राम नाम गति राम नाम मति राम नाम अनुरागी ॥ ह्वैगये हैं जे होहिंगे तेई गनियत त्रिभुवन बड़ भागी ॥ एक अंग मग अगम गवन कर

विलँब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनी अपनी दिशि निरुपधि नेम निबाहैं ॥ ३५० ॥

भलो भली भाँतिहै जो मेरे कहे लागि है ॥ मन राम नाम सों सुभाव अनुरागि है ॥ राम नामको प्रभाव जान जूड़ी आगि है ॥ सहित सहाय कलिकाल भीरु भागिहै ॥ राग राम नाम सों विराग योग जागि है ॥ वाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागिहै ॥ पाइपरतोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ काम तरु राम नाम जोइ जोइ मांगि है ॥ तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खांमि है ॥ ३५१ ॥

ऐसेऊ साहब की सेवा सों होत चोररे ॥ आपनी न बूझ कहै को राड रोररे ॥ मुनि मन अगम सुगम माय बापसों ॥ कृपासिंधु सहज सनेही सखा आपसों ॥ लोकवेद विदित बडो न रघुनाथसो ॥ सभदिन सभ देश सभहींके साथसो ॥ स्वामीसर्वज्ञसों चले न चोरी चार की ॥ प्रीति पहिचान यह रीति दरबार की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मनकी ॥ सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझि वश होत खीझि देत निज धामरे ॥ फलत सकल फल कामतरुनामरे ॥ बेचे खोटो दाम न मिले न राखै कामरे ॥ सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा रामरे ॥ ३५२ ॥

मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई ॥ हौंतो साईं द्रोही पै सेवक हित साईं ॥ राम सों बडो है कौन मोसों कौन छोटो ॥ रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै राम को गुलाम हौं कहावों ॥ एतो बडो अपराध भौ न मन पावों ॥ पाथ माथे चढ़े तृण तुलसी जो नीचो ॥ बोरत न बारि ताहि जान अपनो सींचो ॥ ३५३ ॥

## राग बिलावल।

आज महा मंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये । सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये ॥ सज सज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये ॥ नाचहिं

नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख वेग बोल गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये ॥ जातकर्म कर नक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये । दल रोचंन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये ॥ गावत चलीं भीर भइ बीथिन बंदिन बांकुर विरद वये । कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ वंदन वार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये । उमग चल्यो आनंद लोक तिहुँ देत सबन मंदिर रितये ॥ तुलसिदासपुनि भरेइ देखियत राम कृपा चितवनचितये ॥

सुभग सेज सोहत कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये ॥ बार बार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोर किये ॥ कबहु मोढि पय पान करावत कबहुँ कि राखत लाय हिये ॥ बाल केलि गावत हलरावत पुलकित प्रेम पियूप पिये । विधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अंबुद ओट दिये ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये ॥ ३८९ ॥

## राग सोरठ ।

ह्वैहो लाल कबहिं बडे बलि मैया । राम लषण भावते भरत रिपुदमन चारु चारयो भैया ॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगन विरचि बनेहौं ॥ शोभा निरखि निछावर कर उर लाय वारने जहौं ॥ छगन मगन अँगना खेलिहौ मिलि ठुमुक ठुमुक कब धेहौ कल बल वचन तोतरे मंजुल कह मा मोहिं बुलैहौ । पुरजन सचिव राव रानी सभ सेवक सखा सहेली ॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ वेली । जा सुखकी लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी ॥ तुलसी तिहि सुखसिंधु कौशला मगन पैप्रेम पियासी ॥

## राग बिलावल ।

पगन कब चलिहौ चारो भैया । प्रेम पुलकि उर लाय सुवन सभ कहत सुमित्रामैया ॥ सुंदरतनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरख निकैया॥दल तृण प्राण निछावर कर कर लेहै मात बलैया ॥

किलकन नटन चलन चितवन भज मिलन मनोहरतैया ॥ मणि खंभन प्रतिबिंब झलन छबि छलकहिं भर अँगनैया ॥ बाल विनोद-मोद मंजुल विधु लीला ललित जुन्हैया ॥ भूपतिपुण्य पयोधि उमग घर घर आनंद बधैया ॥ ह्वै हैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया । अनायास पाइहैं जन्म फल तोतरे वचन सुनैया ॥ भरत राम रिपुदमन लषण के चरित सरित अन्हवैया । तुलसी तब कैसे अजहुं जानबे रघुबर नगर बसैया ॥ ३५७ ॥

## राग केदार ।

राम शिशु गोद महा मोद भरे दशरथ कौशिलहु ललक लषण लाल लिये हैं । भरत सुमित्रा लये कैकयी शत्रुशमन तन प्रेम पुलक मगन मन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाय आछे अंग अंग ठये हैं । चाहि चुचुकार चूंबि लालत लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज बये हैं ॥ घन ओट बिबुध बिलोकि बरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मात पूत पुर परिजन विधि जानियत आयु भर एई निरमये हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरिहर छोहु जरठ जठेरिन आसिरवाद दिये हैं ॥ तुलसी सराहे भाग तिनके जिनके हिये डिभ राम रूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ३५८ ॥

आज अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठ ठाढे पालने झूलतहु रोवत राम मेरो सो सोच सबही के ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घी के ॥ तदपि कबहुं कबहुंक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्ट ती के ॥ बेग बोल कुल गुरु छुवे माथे हाथ अमी के ॥ सुनत आय ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ जो सुमिरत भय भी के ॥ जासु नाम सर्वस्व सदाशिव पारवती के ॥ ताहि झरावत कौसिला यह रीत प्रीत की हिय हुलसत तुलसी के

## राग आसावरी ।

माथे हाथ जब दियो ऋषि राम किलकनलागे । महिमा समुझ

लीला विलोक गुरु सजल नयन तन पुलक रोम रोम जागे ॥ लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि मन अनुरागे ॥ निरखि मातु हर्षी हिये आली ओट कहत मृदु वचन प्रेम केसे पागे ॥ तुम सुरतरु रघुवंश के देत अभिमत मांगे । मेरे विशेष गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमंगल भागे ॥ ३६० ॥

अमिय विलोकन कर कृपा मुनिवर जब जोये । तबते राम अरु भरत लषण रिपुदमन सुमुखि सखि सकल सुवन सुख सोये ॥ लाय सुमित्रा लिये हिये फनि मनि ज्योंगोये । तुलसीनिछावर करत मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोये ॥ ३६१ ॥

मातु सकल कुल गुरु वधू प्रिय सखी सुहाई । सादर सभ मंगल किये महि मनि महेश पर सबन सुधेनु दुहाई ॥ बोल भूप भूसुर लिये अति विनय बड़ाई । पूजि पांय सन्मानि दान दिये लहि अशीष सुन वरषै सुमन सुर साई ॥ घर घर पुर बाजन लगीं आनंद बधाई । सुख सनेह तिहिं समय को तुलसी जानै जाको चोरो है चित चहुँ भाई ॥ ३६२ ॥

## राग धनाश्री ।

या शिशु के गुन नाम बड़ाई । को कहि सकै सुनो नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समै चारु चारचो भाई । तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि कर अभय दनुज हति हरिहि धरनि गरुआई । कीरति विमल विश्व अघ मोचन रहहि सकल जग छाई ॥ याके चरन सरोज कपट तजि जो भजिहै मनलाई । सोकुल युगल सहित तरिहै भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हर्ष न हृदय समाई । तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसकाई ॥ ३६३ ॥

## राग बिलावल ।

अवध आज आगमी यक आयो । करतल निरखि कहत सब गुन गन बहुतन परचो पायो ॥ बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मण शंकर

नाम सुहायो । संग शिशु शिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो ॥ पाँय पखारि पूजि दियो आसन असन वसन पहिरायो । मेले चारु चरन चारो सुत माथे हाथ दिवायो ॥ नख शिख बाल विलोकि विप्र तनु पुलक नयन जल छायो । लैलै गोद कमल कर निरखत उर प्रमोद अनमायो ॥ जन्म प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सीय स्वयंवर गायो । राम भरत रिपु दमन लषण को जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनवास रहस बस भयो सबको मन भायो । सनमान्यो महिदेव अशीसत सानँद सदन सिधायो ॥३६४॥

## राग सारंग ।

प्रभु हौं सभ पतितन को टीको ॥ और पतित सभ दिवस चार के हौं तो जन्मत ही को । बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना ही को ॥ कोउ न समरथ अघ करबेको खैंचि कहत हौं लीको। मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ ३६५ ॥

हौं तो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनही तार्‌यो हुतो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मान कर बैठो कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥३६६॥

## राग गौरी ।

प्रानी को हरि यश मन नहि आवै । अह निशि मगन रहै माया में कहु कैसे गुन गावै ॥ पूत मीत माया ममता सों यहि विधि आप बँधावै । मृगतृष्णा जिमि झूठो यह जग देखि तासु उठि धावै ॥ भुक्ति मुक्ति का कारन स्वामी मूढ़ ताहि विसरावै । जन नानक कोटिन में कोऊ भजन राम को पावै ॥ ३६७ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई । चंचल तृष्णा संग बसत है याते थिर न रहाई ॥ कठिन क्रोध घट ही के भीतर जिहिं सुधि सभ बिसराई । रत्न ज्ञान सभको हर लीना तासों कछु न बसाई ॥ योगी यतन करत सभ हारे गुनी रहे गुन गाई । जन नानक हरि भये दिआला तो सभ विधि बनि आई ॥ ३६८ ॥

साधो गोविंद के गुन गावो । मानस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहे गँवावो ॥ पतित पुनीत दीन बांधव हरि शरण ताहि तुम आवो ॥ गजको त्रास मिट्यो जिहिं सुमिरत तुम काहे बिसरावो ॥ तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावो । नानक कहत मुक्त पथ एही गुरुमुख होय तुम पावो॥३६९॥

कोऊ माई भूल्यो मन समुझावै ॥ वेद पुरान साध मग सुनकर निमिष न हरि गुन गावै ॥ दुरलभ देह पाय मानस की बिरथा जन्म सिरावै । माया मोह महा संकट वनिता सों रुचि उपजावै ॥ अंतर बाहर सदा संग प्रभु तासों नेह न लावै ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो जिहिं घट राम समावै ॥ ३७० ॥

साधो राम शरण विश्रामा ॥ वेद पुराण पढ़े को यह गुण सुमिरे हरि को नामा । लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयन की सेवा ॥ हर्ष शोक परसै जिहि नाहिन सो मूरत है देवा । स्वर्ग नरक अमृत विष यह सभ त्यों कंचन अरु पैसा ॥ अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा । दुखसुख यह बांधे जिहिं नाहिन तिहि तुम जानो ज्ञानी ॥ नानक मुक्त ताहि तुम मानो याहि विधि को जो प्रानी ॥ ३७१ ॥

मनरे कहा भयो तैं बौरा । अह निशि औध घटै नहिं जानै भयो लोभ सँग हौरा ॥ जो तन तैं अपनो कर मान्यो अरु सुंदर गृह नारी॥ इनमें कछु तेरो रे नाहिन देखो सोच विचारी । रतन जन्म अपनो तैं हारयो गोविंद गति नहिं जानी ॥ निमिष न लीन भयो चरणन सों बिरथा औध सिरानी । कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावै॥और सकल जग माया मोह्या निरभय पद नहिं पावै३७२

## राग धनाश्री ।

हरि हौं सभ पतितन को राऊ । को करि सकै बराबर मेरी सो धौं मोहिं बताऊ ॥ व्याध गीध गज गनिका पूतना तिनमें बड़ो जु और ॥ तिनमें बड़ो अजामिल पापी मैं उनको शिरमौर । जहँ

तहँ सुनियत यही बड़ाई मो समान नहिं आन ॥ यह सभ आज काल्ह के राजा मैं तिनमैं सुलतान । अबलौं तो तुम बिरद बुलावत भई न मोसों भेंट ॥ तजो बिरद कै मोहिं उंधारो सूर गही कर फेंट ॥ ३७३ ॥

## राग सारंग ।

हरि हौं सभ पतितन को नायक ॥ को करिसकै बराबरी मेरी और नहीं कोइ लायक ॥ जैसे अजामील को दीनो सो पाटो लिख पाऊं ॥ तो विश्वास होय मन मेरे औरौ पतित बुलाऊं । यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो ब्योपारी ॥ वचन मान लै चलों गांठ दै पाऊं सुख अति भारी । अबके तो इतने लै आयो बेर बहुर की और ॥ पतित उधारन नाम सुन्यो जब शरन गही तक दौर । होड़ा होड़ी मनहिं भावते पाप किये भर पेट ॥ सबै पतित पायँन तर मेरे यहै तुम्हारी भेट । बहुत भरोसो जान तुम्हारो अघ कीने भर भांडो॥लीजे वेगि निबेर तुरत ही सूर पतित कोटांड़ो३७४

## राग आसावरी ।

श्याम बलराम गुन सदा गाऊं ॥ श्याम बलराम विन दूसरे देव को सुपनहूं माहिं नहिं हृदे ल्याऊं ॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं । यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊं ॥ ३७५ ॥

## राग सारंग ।

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार ॥ जाति पांति कोउ पूछत नाहीं श्रीपति के दरबार । श्रीभगवत सुमिरै जो हित कर तरै सो भौजल पार ॥ सूरश्याम गुन रट निशि वासर राम नाम निज सार

## राग कान्हरा ।

बड़ी है राम नाम की ओट । शरण गये प्रभु काटि देतहैं करत कृपा के कोट । बैठत सभी सभा हरिजू की कौन बड़ो को छोट ॥ सूरदास पारस के परसे मिटत लोह के खोट ॥ ३७७ ॥

## राग धनाश्री ।

सोई बड़ो जो हरि गुन गावै । शौच पवित्र होत पद सेवा विन गुपाल ऊंच जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कितहूं जाय जन्म डहकावै । होय अटल जगदीश भजन ते सेवा तासु चार फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिन भृंगी ज्यों दश हूं दिशि धावै । सूरदास प्रभु संत समागम आनँद अभय निशान बजावै ॥ ३७८ ॥

मन माधव को नेक निहारहि ॥ सुन शठ सदा रंकके धन ज्यों छिन छिनप्रभुहिं सँभारहि । शोभा शील ज्ञान गुनमंदर सुंदर परम उदारहि रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहिं ॥ जो बिन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भव पारहि । तौ जिन तुलसीदास निशिवासर हरि पद कमल बिसारहि ॥ ३७९ ॥

नाचत ही निशि दिवस मरयो ॥ तबही ते न भयो हरि थिर जबते जीवनाम धरयो । बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरयो ॥ चर अरु अचर गगन जल थल में कौन स्वांग न करयो । देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याचत कोउ उबरयो ॥ मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तो न हरयो । थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुरयो ॥ अब रघुनाथ शरन आयो जब भव भय विकल डरयो । जिहिं गुण ते वश होहु रीझ कर सो मोहिं सभ बिसरयो ॥ तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परयो ॥ ३८० ॥

माधोजू मो सम मंद न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीन मति मोहिं न पूजे ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावकलोह न जान्यो । देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महा मोह सरिता अपार महिं संतत फिरतबह्यो। श्रीहरिचरण कमल नौका तज फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भर मुख पकरयो । निज तालू गत रुधिर पान कर मन संतोष धरयो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रसित हो त्रसित

भयो अति भारी। चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी॥ जलचर वृंद जाल अंतरगत होत सिमिटि इक पासा। एकहिं एक खात लालच वश नहिं देखत निज नासा॥ मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै। तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ३८१॥

## राग धनाश्री।

कृपासो कहां बिसारी राम॥ जिहि करुना सुन श्रवत दीन दुख धावत हो तजि धाम। नागराज निज बल विचार हिय हार चरण चित दीन॥ आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलंब न कीन। दिति सुत त्रास त्रसित निशिदिन प्रहलाद प्रतिज्ञा राखी॥ अतुलित बल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रुति सार्खी। भूप सदसि सभ नृप विलोक प्रभु राख कह्यो नर नारी॥ वसन पूरि अरि दर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी। एक एक रिपु ते त्रासित जन तुम राख्यो रघुवीर॥ अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव भीर। लोभ ग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बंधु खल मार॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार॥ ३८२॥

काहे ते हरि मोहिं बिसारो। जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ संभारो॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत श्रुति चारो। हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं बेदन वृथा पुकारो॥ खग गनिका गज व्याध पांति जहिं तहिं हौंहूं बैठारो॥ अब किहिं लाज कृपा निधान परसत पनवारो फारो। जो कलि काल प्रबल अति होतो तुव निदेश ते न्यारो॥ तौ हरि शेष भरोस दोष गुन तेहिं भजते तज गारो। मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहां कछुचारो। नाहिन नर्क परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो॥ यह बड़ त्रास दास तुलसी प्रभु नामहु पाप न जारो॥ ३८३॥

## राग आसा।

आज बनी छबि भारी श्री राघो जी की। सहित जानकी रत्न

सिंहासन राजत अवध विहारी ॥ रवि शशि कोटि देख छबि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी। वदन मयंक ताप त्रय मोचन मंद हास अति प्यारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल अरु बनमाल सुधारी। बाहुविशाल विभूषण सुंदर कर गह शारँगधारी ॥ कटिपर पीत वसन की शोभा मोहत मदन निहारी। मुनि जन चरन सरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सज कंचन की थारी। राम सेवक जय जय धुनि उचरत गावत पुर नर नारी ॥ ३८४ ॥

## राग भैरवी।

जानकी जीवन की बलिजैहों। चितकहै राम सिया पद परिहरि अब न कहूं चलि जैहों ॥ उपजी उर प्रतीति सपने सुख हरि पद विमुख न ह्वैहों। मन समेत सभ तनके बासिन यही सिखावन दैहों ॥ श्रवणन और कथा नाहिं सुनिहों रसना और न गैहों। रोकिहों नयन विलोकत औरहिं शीश ईश पद नैहों ॥ नातो नेह राम सों करि सभ नातो नेह निबैहों। सेवक चर्ण शर्ण नित रहिहों मुहँ माँग यह पैहों ॥ ३८५ ॥

आज बनी छबि भारी श्रीराघोजीकी। क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुष बान कर धारी ॥ सुंदर भाल तिलक की शोभा अलकैं घूंघरवारी। नयन कमल वंदन की शोभा सयनन में रस न्यारी ॥ बायें अंग जानकी सोहै हनुमत आज्ञाकारी। गौर श्याम सुंदर तन सोहै चंद्रवदन उजियारी ॥ रतन जडित आभूषण सोहैं मोतियन की छबि न्यारी। मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ३८६ ॥

## अथ सीहरफी।

अलफ आपणे आप नूं समझ पहिले की वस्तु है तेरड़ा रूप प्यारे ॥
बाझ आपणे आप दे सही कीते रह्यो विच्च बसूरे दे दुःख भारे ॥
होर लक्ख उपाय ना सुख होवी पुच्छ वेख सिआनड़े जग्ग सारे ॥

सुख रूप अखंड चैतन्य हैं तू बुल्लाशाह पूकारदे वेद चारे ॥ ३८७॥
वे वन्ह अःखी अते कंन दोवें गोसे बैठके बात विचारिये जी ॥
छडँ खाहिशां जान जहान कूड़ा कह्या आरफां दा हियें धारिये जी ॥
पैरीं पाय जंर्जीर बेखाइशी दे इस नफस नूं कैद कर डारिये जी ॥
जाण जाणदी नूं जान रूप तेरा बुल्लाशाह एडं खुशी गुजारिये जी ॥
ते तनक छिद्र नहीं विच्च तेरे जित्थे कःख ना इक्क समाउंदा ही ॥
ढूंड देख जहान दी ठौर कित्थे अन हुंदड़ा नजरीं आउंदा ही ॥
जैसे ख्वाब दा ख्याल होय सुत्यां नूं तरां तरह दे रूप दिखाउंदा ही ॥
बुल्लाशाह नां तुज्झ थीं कुज्झ बाहर तेरा भरम तैनूं भरमाउंदा ही॥
से समझ हिसाब कर बैठ अंदर तूंही आसरा कुल्ल जहान दा है ॥
तेरे डिठ्यां दिस्सदा सभँ कोई नहीं कोई ना किसे पछाणदा है ॥
तेरा ख्याल ही होय हर तरहि दिस्से जिवें बाल बैताल करजाणदाहैं ॥
बुल्लाशाह फाहे कौन डाबेर नूं फसे आप आपे फाही ताणदा है ॥
जीम जीवणा भला कर मंनिया तैं डरें मरण थीं एही अरमान भारा । इक तूहीं तां जिंद जहान केरी घटाकास जिउं मिलै सभ माहिं न्यारा ॥ तेरा ख्याल ही होय हर तरां दिस्से आद अंत बाझों लगे सदा प्यारा । बुल्लाशाह संभाल तूं आय ताईं तूंतां अमर हैं सदा नहीं मरन हारा ॥ ३९१ ॥

हे हिरस हैरान कर सटँचो तूं तैनूं आपणा आप भुलाइयासू । बादशाहीयों सुटँ कंगाल कीता कर लःख थों कःख दखलायआसू ॥ मद मत्तड़े शेर नूं तंद कच्ची पैरीं पायके बंन बहायआसू । बुल्लाशाह तुमाशिड़ा होर देखोलै समुद्र नूं कुज्जड़ी पायआसू ३९२

खे खबर ना आपणी रखँदा है लग ख्याल दे नाल तूं ख्याल होया । ज़रा ख्याल नूं सुट बेख्याल होसां जिमें होय अध जाग्या नांहि सोया ॥ तदों देख खां अंद्रों कौन देखे नहीं घास मैं झाप्पँ हाथी खलोया । बुल्लाशाह जिउं गले दे विच्च माहिणा फिरे ढूंडदा तांहिते नांहि खोया ॥ ३९३ ॥

चे चानणा कुल्ल जहान दा तूं तेरे आसरे होय बिवहार सारा ।

होय सभँ की आंख मों देखदा हैं तुझे सूझदा चांदना और अंधारा॥ नित जागणा सोवणा ख्वाब तीनों देख तेरे आगे होए कई वारा । बुल्लाशाह प्रकाश सरूप तेरा घट वद्ध ना होत है एक सारा ३९४॥

दाल दिल गीर ना होय मूले दीगर चीज नापैद तहकीक कीजै। अव्वल जाय करोसुहवत आरफां दी सुख नतिन्हांदे आब हयातपीजे चशम जिगर दे मलन हो रहे मूले नहीं सूझता।तिनोंको साफ कीजे ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूतां एक आनंद मय सदा जीजे

जाल जरा भी शक्क ना रक्ख मन ते हो वेशक्क तूंही खुद खमस साईं। जिमें सिंह भुलाय बल आपने नूं चरे घास मिल अजा में अजा न्याईं ॥ पिच्छों समझ बल मरज्या अजा मारी भयो सिंह का सिंह कछु भेद नाहीं । तैसे तोहि तरां कछु और धारी बुल्लाशाह संभोल तूं आप ताईं ॥ ३९६ ॥

रे रंग जहान दे देखदा हैं सोहणे बाझ बिचारच्यां दिस्सदे नी । जिवें होत हुब्बाब बहु रंग दे जी अंदर आब दे जरा विच्च फिस्सदे नी ॥ आव खाक आतश बाद भये कट्ठे देख अज्ज के कल्ह विच्च खिस्सदे नी । बुल्लाशाह संभाल के देख खां तूं सुख दुःख सभी कहु किस्सदे नी ॥ ३९७ ॥

जे जावणा आवणा नहीं ओथे कोह वांग हमेश अडोलहै जी । जिवें बद्दलां दे चले चद चलदा लगे बालकां नूं पड़ा भोल है जी ॥ चले मन्न इंद्रीदेह प्राणादिक बुह देखणे हार अडोल है जी । बुल्लाशाह संभाल खुशहाल हूजे ऐन आरफां ना एहोबोल है जी ॥

सीन सितम करना जान आपणी ते भुल्ल आपथी हार कुझ होव णाजी । सईंयोलिख्या शेर चितेरच्यां ने सच्चजानके बालकांरोवणा जी ॥ जरामैल नाहीं देख भुल्लनाहे लगँ चिकँड़ोंजाण क्योंधोवणा जी । बुल्लाशाह जंजाल नहीं मूल कोई जाण बुझँके बुझँ खलोवणा जी ॥

शीन शुबा नहीं कोई जरा इसमें सदा आपणा आप सरूप है जी । नहीं ज्ञान अज्ञान की ठौर ऊहां कहां सूर में छाउं अरु धूप है जी ॥ पड़ा सेज ही माहिं में सही सोया कूड़ा सुपन का रंक अर

भूप है जी। बुल्लाशाह संभाल जब मूल देखा ठौर ठौर में आप अनूप है जी॥ ४००॥

स्वादसबर करना आय बणीउत्ते देखरंग ना चित्त डोलाइये जी। सदा तुखम दी तरफ निगाह करनी पात फूल फल ओर ना जाइये जी॥ जोई आय अर जाय टिक रहे नाहीं तासों कौन दानिश चित्त लाइये जी। बुल्लाशाह संभाल खुदखंड चाखी जिसे विष फल तिसे क्यों खाइये जी॥ ४०१॥

ज्वादजकर अरफिकरकोछोड़ दीजैकीजै नहींकछु यही पछानणा है। जासों उठयाँ ताहीं के बीच डारो हो अडोल देखो आप चानणा है॥ सदाचीज नापैदही देखियेजी यहीयही कर जीयमैं आनणा है॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं तां सदा आनंद मय जानणा है॥

तोयतौर महबूबदा जिन्हां डिट्ठातिन्हा दूई तरफों मुखमोड्याई॥ काईलटक प्यारेदी लुट्टलीते हटे नांहि ऐसा जीउ जोड़ियाई॥ अट्ठो पहिर दिवान मस्तान फिरदे ओनां पैर आलूद ना बोडियाई॥ बुल्ला-शाह उह आप महिबूब होये शोक यारदे कुफर सभ तोडियाई॥ जोय जुदा नहीं तेरा यार तैंथीं फिरें ढूंडदा किसनूं दस्स मैनूं॥ पहिले ढूंडणे हार नूं ढूंड खां जी परतःख घरे विच रस्स तैनूं॥ मत तूंहीं होवे आप यार सभ दा फिरें ढूँढदा जंगला विच्च जेनूं॥ बुल्लाशाह तूं आप महिबूब प्यारा भुल आप थीं ढूंडदाफिरें केनूं॥

ऐन ऐन ही है आप विना नुकते सदा चैन महबूब दिलदार मेरा॥ इकँ वार महबूब नूं जिन्हां दिट्ठा उह तां देखणेहार है सभ केरा॥ उसतों लःख बिहिशत कुर्बान कीते पहुतामहिल वेगमचुकाय झेरा॥ बुल्लाशाह हरहाल विचमस्त फिरदे हाथी मत्तड़े तोड़ जंजीरजेरा॥

गैन गंमने मार हैरान कीती अट्ठे पहिर प्यारे नूं लोड़दी सां॥ मैनूं खावणा पीवणा भुल्ल गया रब्बा मेल जानी हत्थ जोड़दीसां॥ सैयां छडँ गैयां मैं इकल्लड़ी नूं अंग साक नालों नाता॥ तोड़दी सां॥ बुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता तां मैं सुत्तडी अंग नां मोडदी सां॥ ४०६॥

फे फिकर गिया सैयो मेरीयो नी मैंतां आपणे आपनूं सही कीता कूड़ी देह सों नेह चुकाइयाई खाक छाणके लाल नूं टोल लीता ॥ देख धूएँ दे धौलरे जगँ सारा सुट्ट पाया है जीया तें हार जीता ॥ बुल्लाशाह अनंत अखंड सत्ता लखँ आपनूं आब हयात पीता ॥ ४०७ ॥

काफ कौन जाणे जान जाणदी नूं आप जाणे हार इह कुल्ल दा है॥ परतःप थीं आद परमाण जेते सिद्ध कीते इसदे नहीं भुल्लदा है ॥ नेत नेत कर बेद पुकारदे नीं नहीं दूसरा एसदे तुल्लदा है ॥ बुल्लाशाह जब आप बेचार देखा सदा स्वयं प्रकाश एह झुल्लदा है ॥

गाफ़ गुजर गुमान ते समझ बहिके अहंकार दा आसरा कोय नाहीं । बुद्ध आद संघात जढ़ देखीये जी पड़ा काठ पषान जिउं भूमि माहीं ॥ आप आत्मा ज्ञान सरूप सत्ता सदानहीं फुरदा खड़ा एक जाहीं । बुल्लाशाह विवेक विचार सेती खुदी छोड़ खुद होय के लहे नाहीं ॥ ४०९ ॥

लाम लगँ अंखें जाय कहां सोया जाण बुझँके दुःख क्यों पावना है ॥ जरा आप नांहटें बुरि आइयां तों कढँ मस्सले लोक सुनावणा हैं ॥ कागविष्ठ ज्यों जानके तजे संता विषे मूढ़ क्यों चित्त लुभावना हैं ॥ बुल्लाशाह उह जानणेहार दिलदी करें चोरीयां साध कहाउनां हैं ॥ ४१० ॥

मीमसदा मौजूद हरजाय मौला तिसे देख क्या भेषबनाइयासू ॥ चिवेंएकही तुखम बहु तरां दिस्से तिवें आपणा आपफैलायआसू ॥ मांहि आपणे आपदे खेल करदा नरनार होय चित्तलुभायआसू ॥ बुल्लाशाहनां मूलथीं कुझँहोया सोई जाणदा जिसे जणायआसू ४११ ॥

नून नाम अर रूप उठाय दीजे पीछे अस्ति अरु भांति प्रिय साच है जी । जोई चित्त की चितवनी बीच आवे सोई जान तह कीक कर काच है जी ॥ तीन बुद्ध की वृत्ति का तूंही साक्षी तूंही जाण निज रूप में राच है जी । बुल्लाशाह तूं भूप अचल्य बैठा तेरे आंम परकिर्ति का नाच है जी ॥ ४१२ ॥

वाउवखत इहहत्थना आवणाई इकँ पलकदे लख्य करोड देवें ॥ जतन करें तां आप अचाह होवें तूं तां पहिरअट्ठे विषय विष सेवें ॥ कूड वैपार कर कूड सिर मेलदा चिंता मणि दे जड़ कच्च लेवें ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं अनंत लघु देह मैं कहां मेवें॥४१३॥

है होय हूर तरां दिलदार प्यारा रंगा रंग दा रूप बनाय आई ॥ कहूंआपकों भूल रंजूल होया ऊरध अरध भरम होय संतायआई ॥ जदों आपणे आप मैं प्रगट होया निजानंद के माहिं समायआई ॥ बुल्लाशाह जो आद था अंत सोई भ्या नीर मैं नीर मिलायआई ॥

अलफ अज्ज वणया सभों चज्ज मेरा शादीगमी थीं पार खलोय आमैं ॥ भया दूर भ्रम मर्म सभ पाइयाई भय कालदा जिय थीं खोय आमैं ॥ साध संग की दया थीं भया निर्मल घट घट चैतंन सुख सोयआ मैं ॥ बुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता जो आदथा अंत फिर होयआ मैं ॥ ४१५ ॥

येयार पाया सैयो मेरीयो नी मैंतां आपणा आप गंवायकेजी ॥ रही सुधँनां बुधँ जहान केरी थक्की बिरति आनंद मैं जायके जी ॥ अट्ठो पहर विश्राम नां काम कोई दूई ज्ञान की भाय जलायके जी॥ बुल्लाशाह मुबारकां लख्य देवो भई जान जानी गल लायके जी ॥

## छंद ।

दूधपिये सिद्धसाध बालकबच्छियां। कामरखे सिध साध खोजे खस्सियां ॥ असनान करे सिध साध मेंडक मच्छियां। नानक मन संभाल सब मल्ल अच्छियां ॥ ४१७ ॥

## गजल ।

खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है ॥ इखलाक सब से रखना तसखीर है तो यह है ॥ सभकाम अपना करना तकदीर के हवाले। नजदीक आरफो के तदबीर है तो यह है ॥ ४१८ ॥

## अथ बारा मासा ।

चेतर चित बिच समझ प्यारे दुनिया कूडा बानाई ॥ जिन्हां ना

ल तूं लाई दोस्ती उन्हां ने भी चल जानाई॥ सभदे सिर पर काल कूकदा क्या राजा क्या रानाई ॥ मोतीराम कदे समझ प्यारे जग विच रहण नमाणाई ॥ ४१९ ॥

विसाख विसारयो नामसांई दा आकड़ आकड चलनाहैं ॥ खाय खुराकां पहन पुशाकां जमदा बकरा पलना हैं ॥ चार दिनां दे रह णे कारण महल माडियां मलना हैं ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत खाक विच रलना हैं ॥ ४२० ॥

जेठ माया दा मान न करिये माया काग बनेरे दा ॥ पल विच आवे छिन विच जावे सैर करे चौफेर दा ॥ इक मन होके नाम न जप्या क्या नफा दम तेरे दा ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत काल जम घेरेदा ॥ ४२१ ॥

हाड़ होश कर दिल विच प्यारे काल नगारा बजदाई ॥ यह दु- नियां भांडे की नाईं जो घड्या सो भजदाई ॥ माया जोडी लख करोडी अजे न मूरख रजदाई ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे माण ताण दिल तजदाई ॥४२२ ॥

सावण शौक माया दा कीता सांई दा शौक न कीता तैं । जिस साहिब तैनूं पैदा कीता उसदा नाम न लीता तैं ॥ अपने हत्थीं जा ण बूझके जहर प्याला पीता तैं ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अकारथ कीता तैं ॥ ४२३ ॥

भादों भार पिया सिर तेरे किस बिध पार उतारेंगा । ढूंगी नदी कहर दियां लहरां कंढे बैठ पुकारेंगा ॥ ओथे तेरा कोई न बोली रो रो धाहीं मारेंगा । मोतीराम तूं समझ प्यारे जितके बाजी हारेंगा ॥ अस्सू ओड़क चलना प्यारे चलो चली दाडेराई । सबका वासा जंगल होसीजो कोई भलाभलेराई ॥ साथतेरे कोई ना जासी क्यामेरा क्या तराई । मोतीराम कदी समझ प्यारे कोई दिनदा रैन बसेराई४२५॥

कत्तककिसमत भली उन्हांदी जिन्हां नाम जप लीता ई सोई अमर जगत बिच होए जिन्हां साध सँग कीताई ॥ रामनाम दा प्रेम

पियाला भर के कदी न पीताई। मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अमोलक बीताई ॥ ४२६ ॥

मगहरमस्त होया बिच दिल दे आप खुदाय कहावें तूं । सभदे सिरपर कर तदबीरां सभ पर हुकम चलावें तूं ॥ ओथे तेरा कोई ना बेली रो रो हाल गँवावें तूं । मोतीराम कदी समझ प्यारे राह अवल्लडे जावें तूं ॥ ४२७ ॥

पोह पियारा याद न की न कीता कीती गल्ल नकारी तैं । ऐसा नाम अमोलक प्रभ दा नां लीता इक वारी तैं॥ बार बार समझा रहे तैनूं इक्क ना जरा बिचारी तैं । मोतीराम कदी समझ प्यारे जित के बाजी हारी तैं ॥ ४२८॥

माघमाणना करिये बंदे नाल गरीबी रहणाई। जोकोई आखे गल्ल बधीकी ओह भी सिर ते सहणाई॥ऊंचे होके मूल न बहिये नींचे होके रहणाई। मोतीराम कदी समझ प्यारे बाजी नूं जित लैणाई ॥ ४२९॥

फागुनपकडचोजदा जमां ने रती न जावेपेशतेरी। राम भुलाया क्याफलपाया पच्छोतावेंगाबहुबेरी ॥ बारबारसमझा रहे तैनूं साहि बदेदरहो ढेरी॥ मोतीराम कदी समझप्यारे अब लगाय नां कछु देरी

## राग आसा।

है कोई दम की बात जगत में हर को सुमिर दिन रात ॥ उस बिन नहीं तेरा पार उतारा क्यों नहीं हरि मुन मात ॥ चार पहर नींदर में बीते जाग होई परभात ॥ यह दुनियां है रैन बसेरा जो आवत सो जात ॥ काम क्रोध तज लोभ प्रानी चारों वेद बखात ॥ धन योवनका मान न करिये चार दिननकी बात ॥ कोई जात नहि संग तिहारे मात पिता क्या भ्रात ॥ माया लोभ में नित ही भरमत काल लगाई घात॥ रामकृष्ण सुमिरो निसि बासर छोड़ छाड़ पछ पात ॥ रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात ॥ रूप चंद हैं वे नर मूरख जिन्हें न हरि यश भात ॥ ४३१ ॥

## भैरवी ।

प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगम अपार । खंड ब्रह्मंड रचे सभ तेरे कोउ न पावत पार ॥ सुर नर मुनि जन खोजत हारे पढ़ पढ़ वेद विचार । प्रभु तेरी० ॥ अगम निगम सभ तोहिं पुकारें हे प्रभु सिरजन हार । चंद सूरज दोउ दीपक कीने अगम जोत निरंकार ॥ प्रभु तेरी० । अनहद शब्द बजत झंकारा संतन प्राण अधार ॥ नाना रूप धरयो सभ अंतर निरगुण सगुण अकार ॥ प्रभु तेरी ० ॥ दस अवतार धरे या जग में हैं सभ मुक्त दुआर ॥ रूपचंद सुमिरो हित चित कर निशिदिन कृष्ण मुरार ॥ प्रभु ० ॥

प्रभु मेरी नाउ उतारो पार ॥ बलिहारी नंद कुमार ॥ भव सागर संसार अगम है तिरछी जाकी धार ॥ पार उतरना कठिन भयो है सूझत वार न पार ॥ प्रभु० ॥ लोभ मोह के बादल उमडे भयो महा धुँधकार ॥ काम क्रोध पवन संग लीने बरसत है हंकार । प्रभु० ॥ डोलत है यह नाव पुरानी भव सागर मँझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लरजत जिया हमार ॥ प्रभु ० ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे चढ़ाया सभ परवार ॥ इस बेड़े को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ प्रभु० ॥ महा मली मैं कपटी कामी तुमहो बखशनहार ॥ रूपचंद निज ठौर नहीं कोउ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु० ॥ ४३३ ॥

## राग जंगला ।

इकदिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होसी साहिब हजूर ॥ कूड़ा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत माया छोड़ गरूर ॥ क्यों सोया है जाग प्यारे ॥ रैन गई छिपे सब तारे ॥ मंजिल भारी चलना दूर ॥ कंकर चुन चुन महल उसारे । झूठे हैं यह सभ बिस्तारे ॥ इक दिन होसी चकनाचूर ॥ मात पिता अर घर की नारी ॥ कोई नहीं दुख बाँटन हारी ॥ सुख के साथी न हो मसरूर ॥ दौलत माया जोड़ खजाने ॥ इकट्ठ कीने जोर धिगाने ॥ यह जग किशती का है पूर ॥ क्या ऊंच नीच अमीर फकीर ॥

सबपर चलती है तकदीर ॥ इक दिन जम मुंह देसी धूर ॥ यह दुनिया सुपने की नाई ॥ जो आया सोही चल जाई ॥ एक रहेगा प्रभु का नूर ॥ इस दम दा कुछ करलै भाई ॥ हरि के बिन नहीं और सहाई ॥ घट घट आप रह्या भर पूर ॥ काम क्रोध सभ तजदे प्रानी ॥ झूठी मति क्यों दिल में ठानी ॥ आखर होवेगा मजबूर ॥ जब जम आवे पकड़ लेजावे ॥ दौलत दुनिया पल में छुड़ावे ॥ नहीं चलेगा कुछ मकदूर ॥ कहत रूप चंद सुनहो प्रानी ॥ यह दुनिया है बिलकुल फानी॥कृष्ण चरन का हो मशकूर॥४३४॥

हरि नाम कभी ना पुकारा ॥ गया बिरथा जनम है सारा ॥ मोह माया में उमर गुजारी ॥ नित धन के रहे व्योपारी ॥ और दुरलभ नाम बिसारा ॥ किया दिन को मेरा तेरा ॥ सुख नींद ने रैन को घेरा ॥ हँस बोला काल नगारा ॥ गया बिरथा० ॥ थे बार बार क्या कहते ॥ जब गरभ में थे दुख सहते ॥ ना भूलूंगा कभी मुरारा ॥ गया० ॥ कीनी धरती ज़र से पोली ॥ झट मौत आसिर पर बोली ॥ है जग से तेरा किनारा ॥ गया० ॥ किले महल मकान बनाये ॥ और बाग बगीचे लगाये ॥ संग गया न बुरज मुनारा ॥ किस बात पै है मन भूला ॥ किस करनी पै है फूला ॥ तज मोह कुटुँब संसारा कुछ करलै अब भी भाई ॥ नहीं हरि बिन कोई सहाई ॥ नहीं साथी कोई प्यारा ॥ मानस देह नहीं नित मिलती ॥ नहीं बाग बहार नित खिलती ॥ निकट आयाहै जम का द्वारा इस कालने हैं सब घेरे ॥ रुख रावन कंस के फेरे ॥ दुरयोधन भीम को मारा ॥ गये कौरव पांडव राजे ॥ जग डंका था जिन का बाजे ॥ इस काल ने पकडा पछाड़ ॥ गर्ब कारूं जैसे के तोड़े ॥ जिन लाख खजाने थे जोड़े ॥ औरंगे को बडा हंकारा ॥ नोशेरवाँ हातमताई ॥ सखावत जिन थी बनाई ॥ कर जग में गये चमकारा ॥ श्री विक्रम भोज करनथे ॥ जो नित ही धरम की शरन थे ॥ कर गये धर्म जयकारा ॥ हो ध्यान न जबतक सगुण का ॥ कभीज्ञान

नहीं होता निर्गुण का ॥ मन किया न न सोच विचारा ॥ कर अबहीं मन हरिसेवा ॥ तो पावे ज्ञान हरि मेवा ॥ हो रूप तेरा निस्तारा ४३५॥

## प्रभाती।

छोड़ विस्तरा उठरे गाफल अमृतवेला छाया रे ॥ सगरी रैन नींद में काटी बिरथा समां बितायारे ॥ जिस माया के मान ने मूरख सुख से तुम्हें सुलायारे ॥ अंध घोर में उस माया ने तुमको पकड़ गिरायारे ॥ आध भाग तेरी आयू का बाला पन में भाया रे ॥ दूजा भाग गयो मोह माया मे कुटिल कुटुँब जो पाया रे ॥ चलता है अब भाग तीसरा बृद्ध दुई तेरी काया रे ॥ आया निकट द्वारा जम का नहीं मूरख समझाया रे ॥ यह दुनिया है पलक बसेरा जिसपर ठाट जमाया रे ॥ क्या भरबासा है सासों का दम आया ना आया रे ॥ माटी होगी पल छिन में सब जब जम्म तुझे बुलाया रे ॥ सभी ठाट ह्यां पड़ा रहेगा जिससे मन भटकाया रे ॥ नरक घोर नें तडपेंगे वुह जिन्न हर को नहीं ध्याया रे ॥ इस्त्री और संतान पियारी जिससे मोह बढ़ाया रे ॥ कह कह अपना उन्हें आज्ञानी नाहक जिया जलाया रे ॥ अपना तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक बार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक प्रलोक में अहकर उसने मानस जन्म सुधाया रे ॥ ४३६ ॥

## ग़ज़ल।

तुम्हें धनबाद ऐ ईश्वर तेरे सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे बेअंत सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोर से जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल और कहीं खुश्की कहीं पहाड़ों को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्मे जो धरती पर सिंगारे हैं ॥ सतूं बिन अरश कायम कर लगाया रंग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड़ फूलों के किये तक्सीम

गुलशन में। अयां कुदरत है हरगुल से अजब तेरे नजारे हैं ॥ हुई कायम य जब हस्ती फना को भी दी तब शक्ती। किसी की बस नहिं चलती जो रावन जैसे मारे हैं ॥ किसे ताकत दुर्नीचंद उसकी लीलाजो करे वर्णन । रिषीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं ॥ ४३७ ॥

जगत सभ गैर है लोको। य कूड़ी सैर है लोको ॥ य जग पल छिन क मेला है । सफर पड़ना इकेला है ॥ गई रैन अब सवेला है । जपो राम अब भी वेला है ॥ तजो मोह माया तुम भाई। जनम बिरथा ही सभ जाई। चले नहिं सँग पिता माई ॥ य जग सुपने की है नाई। तू क्यों मस्ते में घेरा है ॥ करे नित मेरा तेरा है। जहां पर पडना फेरा है ॥ कठिन रस्ता अँधेरा है ॥ जो प्रभुको मन से ध्यातेहैं। उसीके गीत गाते हैं ॥ व वैकुंठों में जाते हैं। अटल पदवी को पाते हैं ॥ वही साकार सरगुन है । उसीका नाम निरगुनहै ॥ नहीं कोई भी उस बिन है । उसीकी रात और दिन है ॥ जहांपर उसको ध्याया है। वहीं मौजूद पाया है ॥ शरण अहकर भी आया है। यही अब जी में भाया है ॥ ४३८ ॥

## पीलो ।

हर से भी मन प्रीत लगाले । जिंदगीका कछु नफा कमाले ॥ यह जीना है चार दिहाडे। किस हस्ती पर पाउँ पसारे ॥ इस दिहका नहिं कुछ भरवासा । काहे दर दर फिरत पियासा ॥ जैसा मोह माया में कीना। अंत समय वैसा दुख दीना ॥ मुनि जन कर कर गये पुकारा। ऐसाही जीवन संसारा ॥ नये साल नित खुशी मनाई। खुशी नहीं यह उमर घटाई ॥ जिस खातर जग ठाट बनावे। आखिर कुछ तेरे साथ न जावे ॥ हाजिर होगा जब जम द्वारे। तुझे मिलेंगे संकट भारे ॥ समझ सोचकर समां बिताओ। अंत समै पूरा सुख पाओ ॥ दुर्नीचंद हरि प्रीत सहारे। कर मझँधार से नाव किनारे ॥ ४३९ ॥

## प्रभाती ।

क्यों सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है । बहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है ॥ किस कारन तुम बने विदेसी क्यों गफलत बुध मारी है । नींद त्याग कर उत्तम सौदा सफर न बारंबारी है ॥ नेक अमल हरि नाम नफे विन सब बिरथा जर जारी है । मोह माया के जाल में पड़ना जिल्लत और खुवारी है ॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है । बिन खरीद हरि रस सौदाके जीती बाजी हारी है ॥ मेरी मेरीमें मन मूरख आयू कट गइ सारी है ॥ बिन सत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है ॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है । रूप विना हरि नाम कमाई कोई नहिं उपकारी है ॥ ४४० ॥

## राग गजल ।

जप जाप मन हरि नामका सब दिन गया अब शाम है ॥ जग जाल को तज अब भी मन आया अजल का प्याम है । उमर भर लालच में पडकर मालोजर कट्ठा किया ॥ काल जम घेरेगा जब तब मालोजर किस काम है । सत करम को छोड कर नित झूठको करता है प्यार ॥ सोच कर ले अब भी प्यारे नरक का यह दाम है । खुशी हो क्यों अकडता है बांकपन और फूले तन ॥ दूध इसको समझ मत मन जहर का यह जाम है । मेरी मेरी करके दिन भर रैन मस्ती में कटी ॥ ऐसे ही आयु घटी लीया न पल भर नाम है । गांव चक जागीर पाकर मुलक के हाकम बने ॥ सत हुकम के खौफ बिन यह सभ हकूमत खाम है । क्यों सोया है होके गाफल नर्म सुंदर सेज पर ॥ जंगलों में आग पर इक दिन तेरा विश्राम है । क्यों हुआहै मस्त जालम क्यों बनाताहै मकां ॥ बिन कमाई नाम बिरथा महल माडी बाम हैं ॥ काम क्रोध और लोभ तीनों नरक के रस्ते हैं । यह खास गीता में श्रीमुख से कहा घनश्यामहै ॥ हिरस सखती और तकब्बर छोडदो बिलकुल इन्हें ॥

कारू और शद्दाद का नाम अबतलक बदनाम है ॥ रहम हमदरदी सखावत है फरज इन्सान का ॥ हातम और नौशेरवां का जगमें चर्चा आम है ॥ शैदा होके हुसन पर खालकको बैठा है भुला। अजलका है सभ य पंजा क्यापरी गुलफामहै ॥ अपनी अपनी मरज के हैं इस्त्तिरी फरजंदसभ ॥ कामआनाअंतके दिन एक प्यारा राम है ॥ कर गुनाह नित भागता है हाकमों के खौफ से ॥ मगर हाकम सच्चा सभ कुछ देखता सभ धाम है ॥ हैं जो भूले नाम इक वह जिंदों में हरगिज नहीं ॥ नाम भक्तोंका है कायम जगका जब तक क्याम है ॥ दस्तबस्ता हक से है अहकर की नित यह इल्तिजा। रहम से कर कर्म मुझपर हर दफा परनाम है ॥ ४४१ ॥

हमें इक दिन फिर आखर को उसी घर सभको जाना है। समझ लो बूझ लो दिल में यहाँ किसका ठिकाना है ॥ करो मत वैर तुम हरगिज अगरचिह जोरो ताकत है। चलो सभ मिलके आपस में कि यह चंद जमाना है ॥ कोई दम का य मेला है य क्यों आपस के झगड़े हैं। नहक यह मुफत में हर इक को दुश्मन क्यों बनाना है जपो निशिदिन हरीहर को कहे गिरिधर जो हित चाहो। नहीं तो आप पछताओ मुझे केवल चिताना है ॥ ४४२ ॥

## राग जंगला ।

मेरे मन राम को नाम अधारा। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निशिदिन करत विचारा ॥ जाके जपत कटत दुख दारुण उतर जात भवपारा। शबरी गीध अजामिल से खल तिनहूं को प्रभु तारा ॥ जिन जिन शरन लीन संकट में तिनको आप सुधारा। नाम महातम को बरनैं सभ पाप कटन को आरा ॥ प्रेम लाय जो ध्यान लगावे सो पावे सुख सारा ॥ आयो तव पद शरण नाथ मैं औगुण अमित अपारा। गिरिधर पार उतारो मोको लैहों नाम तुम्हारा ॥ ४४३ ॥

भ्रातृ गण यह उपदेश हमारा। वेद शास्त्र पुराण निगमागम सभ ग्रंथन को सारा ॥ रघुवर चर्ण शर्ण होय उतरो भव सागर से

पारा। जाहि वेद कहैं शुद्ध ब्रह्म सो दशरथ राज दुलारा ॥ सर्व व्यापी सर्व अंतरयामी सर्व जगत आधारा। छोड़ो सकल कुतर्क कपट मन जो होवे निस्तारा। सत्यनाम इक श्रीरघुवर का मिथ्या सभ संसारा॥ ध्रुवप्रहलाद आद भगतन हित होतअकारमकारा। दीन दयाल स्वामी सोई भये मनुज अवतारा॥ ४४८ ॥

## राग पीलो ।

राम विना तेरा कोई ना सहाई। रात दिना तू सुमिरले भाई॥यह जग है कोइ दिन का मेला क्यो झूठी है प्रीति लगाई। भाई बंधु कुटुंब छोड़ कर तनहा जावेगा तू भाई ॥ कछु भी तेरे सँग चलना नाहीं महल माडियां खूब बनाई॥ इक पल भी हरि नाम न लीन्हा आयु आपनी वृथा गँवाई॥ कोईहै सुखमें दुख में है कोई यहरचना है राम बनाई॥ माधव रहु ईश्वर की शरणी जो परलोक में होसुखदाई॥ ४४८ ॥

## गजल ।

तूगोविंदहै और तूगोपालहै। तूहीकृष्ण लाला तूनंदलालहै॥ एकै रूप तेरा जगत में समाया । पछावां तेरा कहीं ढूँढे न पाया ॥ मैं ढूँढूं किधर नाथ देखूं तुझे । कृपा करके अब दर्श दीजो मुझे॥ मैं अनाथ हूं और तू नाथों का है नाथ । नाम अपने की लाज पालो मेरे साथ॥ तेरे चरनो में नित मेरी हो नमाम । गंगाविष्णु की विनती है मुदाम॥ ४४६ ॥

## राग जंगला ।

नर अचेत पाप से डर रे ॥ दीन दयाल सकल भय भंजन शरण ताहि तूपड़रे॥ वेदपुराण जिसका गुण गावें ताको नामहिये में धररे॥ पावन नाम जगत में हरि को सुमिर सुमिर पापां मल हर रे॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछू उपाउ मुक्ति का कर रे॥ नानक कहत माय करुणामय भवसागर से पार उतर रे॥ ४४७॥

बिरथा कहों कौन सों मन की ॥ लोभ ग्रस्यो दशहूं दिशि

धावत आशा लागी धन की ॥ सुख के हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जन की ॥ द्वारे द्वारे श्वान ज्यों डोलत नहिं सुधि राम भजन की ॥ मानस जन्म अकारथ खोयो लाज न लोग हँसन की ॥ नानक हरि यश क्यों नहिं गावत कुमति विनाशे मन की ॥४४८॥

## राग सोरठ।

भूल्यो मन माया उरझायो ॥ जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बँधायो ॥ समझ न पड़ी विषयरस राच्यो यश हरि को बिसरायो ॥ सँग स्वामी सो जान्यो नाहीं बन खोजन को धायो ॥ रत्न राम घट ही के भीतर ताको ज्ञान न पायो ॥ नानक जन भगवंत भजन विन बिरथा जन्म गँवायो ॥ ४४९ ॥

## राग भैरवी ।

हरि यश रे मन गाय ले जो संगी है तेरो ॥ अवसर बीत्यो जातहै कहा मान ले मेरो ॥ संपति धन रथ राज सों अति नेहु लगायो ॥ काल फांस जब गल पड़ी सभ भयो परायो ॥ जान बूझ के बावरे तैं काज बिगारचो ॥ पाप करत सकुच्यो नहीं नहिं गर्व निवारचो ॥ जिहि विधि गुरु उपदेशिया सो सुन रे भाई ॥ नानक कहत पुकार के गहु प्रभु शरनाई ॥ ४५० ॥

हरजू राख लेहु पति मेरी ॥ काल को त्रास भयो उर अंतर शरण गही प्रभुतेरी ॥ भय मरने को बिसरत नाहीं तिहिं चिंता तनजारा॥ किये उपाय मुक्ति के कारन दह दिश को उठधावा ॥ घट ही भीतर बसे निरंतर ताको मर्म न पाया ॥ नाहीं गुण नाहीं कछु जप तप कौन कर्म अब कीजे ॥ नानक हार परचो शरणागत अभय दान प्रभु दीजे ॥ ४५१ ॥

अब मैं कौन उपाय करूं ॥ जिहि विधि मन को संशय चूके भव निधि पारपरूं ॥ जन्मपाय कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरूं गुरु मत सुन कछुज्ञान न उपज्यो पशुवत उदर भरूं ॥ कहु नानक प्रभु बिरद पछानो तब हौं पतित तरूं ॥ ४५२ ॥

## राग भैरव ।

मन राम सुमिर पछतायगा॥पापी जीउड़ा लोभ करत है आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गँवायो माया भरम भुलाय गा ॥ धन योवन का गर्व न करिये कागज सा गलजायगा ॥ सुमिरन भजन दया नहिं कीनी ता मुख चोटा खायगा । धर्मराय जब लेखा मांगे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो साध संग तर जायगा ॥ ४८३ ॥

## राग भैरवी ।

हरि से लाग रहो रे भाई । तेरी बिगड़ी बात बनजाई ॥ रंका तारयो बंका तारयो तारयो सधन कसाई । सुआ पढ़ावत गनिका तारी तारी है मीरा बाई ॥ दौलत दुनिया माल खजाने बधिया बैल चराई । जबही काल का डंका बाजे खोज खबर नहिं पाई ॥ ऐसी भक्ति करो घट भीतर छोड़ कपट चतुराई । सेवा बंदगी और अधीनता सहज मिलैं रघुराई ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो सतगुरु बातबताई । यह दुनिया दिन चार दिहाड़े रहो राम लव लाई ४८४॥

## राग जंगला ।

कोऊ हरि समान नहिं राजा ॥ यह भूपति सभ दिवस चार के झूठे करत दिवाजा । जन तेरा सो कभूं न डोले तीन भुवन पर छाजा ॥ चेत अचेत मूढ़ मन मेरे करो हरी के काजा । हाथ पसार सके नहिं कोई बोलन सके अंदाजा ॥ कहत कबीर संशय भ्रम चूका ध्रुव प्रहलाद निवाजा ॥ ४८५ ॥

## राग भैरवी ।

सभ सुख राम नाम लव लाई । नामविना सुख सकल वृथाई ॥ ना सुख होवत मूंड मुंडाई । ना सुख घर घर अलख जगाई ॥ ना सुख है अपने घर माहीं । ना सुख भगवें भेष बनाई ॥ ना सुख वन में ना सुख धनमें नासुख चिंता ना हरषाई । ना सुख योग यज्ञ तप पूजा ना सुख झूठि समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे ना सुख रानी ना

सुख हास विलासकहानी । नासुख मानी नाअपमानी ना सुख झूठी कर चतुराई ॥ ना सुख वेद किताब पुराना ना सुख कछू कथे मुख ज्ञाना । सगरेसुख कबीर सो पाई जो जनराम नाम लवलाई ४५६॥

## राग सोरठ ।

जबलग मेरी मेरीकरै ॥ तब लग काज एकनहिं सरै । जो मेरी मेरी मिटजाय ॥ तोप्रभु काज सँवारैआय । ऐसाज्ञान विचारमना ॥ हरि क्यों न सुमिरै दुख भंजना । जब लग सिंह रहे वन माहीं ॥ तब लग वन फूले ही नाहीं । जबहीं स्याल सिंह को खाय ॥ फूल रही सकली बनराय । जीतो बूड्यो हारो तरयो ॥ गुरु प्रसाद सोइ पार उतरयो । दास कबीर कहे समुझाय ॥ केवल राम रहो लव लाय॥

ऐसो हैरे भाई हरि रस ऐसो है रे भाई जाके पिये अमरहोजाई ॥ ध्रुव पीया प्रहलाद ने पीया पीया है मीराबाई ॥ बलख बुखारे के मीयां पीया छोडी है बादशाही । हरिरसमहँगा मोलकारे पीवे विरला कोय ॥ हरि रस महँगा सो पिये जाके धर पै शीश न होय । आगे आगे दौ चले रे पीछे हरिया होय ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि भज निर्मल होय ॥ ४५८ ॥

## राग देश ।

चुनरी मेरी रँग डारी मेरे सतगुरु हैं रँगरेज । भाउ के कुंड नेह के जलमें प्रेम रंग दई बोर ॥ चस की चास लगाय के खूब रँगी झंक झोर । स्याही रंग छुड़ायके दिया मजीठा रंग ॥ बूंद पडी ठहरे नहीं दिन दिन होय सुरंग । सतगुर ने चुनरी रँगी है सतगुरु चतुर सुजान ॥ सभ कछु उनको वार दूं तन मन धन औ प्राण । कहे कबीर चुनरी रँगी गुरु मुझपर होये दियाल ॥ शीतल चुनरी ओढ़ कर मगन भई हौं निहाल ॥ ४५९ ॥

संतो ऐसा धुंध पसारा । इस घट अंतर बाग बगीचा इसीमें सिरजन हारा ॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमें वारा पारा । इस घट अंतर हीरा मोती इसीमें परखन हारा ॥ इस घट अंतर चांद

सूरज हैं इसी में बेहद तारा ॥ इस घट अंतर अनहद गरजे इसीमें उठत फुआरा ॥ कहें कबीर सुनो भई साधो याहीमें गुरू हमारा ॥ ४६० ॥

## राग भैरवी ।

राम जपो जीया ऐसे ऐसे॥ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे॥दीन दयाल भरोसे तेरे ॥ सभ परवार चढ़ायो बेडे ॥ जां तिस भावे तां हुकम मनावे ॥ इस बेडे को पार लँघावे ॥ गुर प्रसाद ऐसी बुद्धि समानी ॥ चूकगई फिर आवन जानी ॥ कहत कबीर भज शारँग पानी ॥ वार पार सभ एको जानी ॥ ४६१ ॥

जिहि मरने ते सभ जग त्रासा ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकासा अब कैसे मरों मरन मन मान्या ॥ मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहे सभ कोई ॥ सहजे मरे अमर होय सोई ॥ कह कबीर मन भया अनंद ॥ गया भरम रह्या परमानंद ॥ ४६२ ॥

## राग सोरठ ।

यही घडी यह वेला साधो ॥ लाख खर्चे फिर हाथ न आवे मानस जन्म सुहेला ॥ ना कोइ संगी ना कोइ साथी यह जाता भँवर इकेला ॥ क्यों सोया उठ जाग सवेरे काल मरेंदा सेला ॥ कहत कबीर गोविंद गुन गाओ झूठा है सभ मेला ॥ ४६३ ॥

## राग झंझोटी ।

मेरे राता जी मैं गोविंद के गुन गाना ॥ राजा रूठे नगरी राखे अपनी मेहर रूठ कहां जाना ॥ राने भेजा जहर प्याला मैं अमृत कर पीजाना ॥ डबिया में काला नाग जो भेजा मैं सालगराम कर जाना ॥ मीरांबाई प्रेम दिवानी मैं सांवरिया वर पाना ॥ ४६४ ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी ॥ तुम जानत सभ अंतरयामी करनी कछु न करी ॥ औगुन मोसे बिसरत नाहीं पल छिन घरी घरी ॥ सभ प्रपंच की पोट बांध कर अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लियो हौं सुध बुध सभ बिसरी ॥ सूर पतित को बेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥ ४६५ ॥

## राग खमाच ।

काया हरि के कामनआई ॥ भक्ति भाव जहँ हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ काम मनोरथ लोभातुर ह्वै तहां सुनत उठ धाई ॥ जब लग प्रेम रंग नहिं परसत अंधे ज्यों भरमाई ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन विषय परम विष खाई ॥ ४६६ ॥

भले बुरे तो तेरे ठाकुर ॥ हमरे कुल की लाज बडाई विनती सुनो प्रभु मेरे ॥ सभ तज तुम शरणागत आयो दृढकर चरण गहेरे ॥ तव प्रसाद् हम वद्त न काहू निडर भये घर घेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा से पाये सुक्ख घनेरे ॥ ४६७ ॥

## राग सारंग ।

जिहिं तन ना हरि भजन कियो ॥ सो तन शूकर श्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को ताहि न चित्त दियो ॥ प्रकट जान यदुनाथ बिसारयो आशा मद्य पियो ॥ चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हें न मिल्यो हियो ॥ सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ ४६८ ॥

मन मेरो गज जिहबाकाती ॥ मप मप काटो जम की फांसी ॥ कहा करूं जाती कहा करूं पांती ॥ राम का नाम जपों दिन राती ॥ रंगन रंगों सीवन सीवों ॥ राम नाम विन घडी न जीवों ॥ भक्ति करों हरि के गुन गाऊं ॥ आठ पहर अपना खसम ध्याऊं ॥ सोने की सूई रूपे का धागा ॥ नामे का चित्त हरि संग लागा ॥ ४६९ ॥

जैसे भूखे प्रीत अनाज ॥ तृषा वंत जल सेती काज ॥ जैसे मूढ कुटुंब परायण ॥ ऐसे नामे प्रीत नरायण ॥ नामे प्रीति नरायण लागी । सहज सुभाय भयो वैरागी ॥ जैसे पर पूरुष रत नारी ॥ लोभी नर धनका हितकारी ॥ कामी पुरुष कामिनी प्यारी । ऐसी नामे प्रीत मुरारी ॥ जैसे प्रीत बालक और माता । ऐसा हर सेती मन राता ॥ प्रणवे नाम देउ लागी प्रीत । गोविंदों से हमारोचीत ॥

## राग भैरवी ।

रे प्रानी क्या मेरा क्या तेरा । जैसे तरवर पंख बसेरा ॥ जल की भीत पवन का थंभा रक्त बिंदु का गारा । हाडमाँस नाड़ीकापिंजर पंखी बसे विचारा ॥ राखो कंध उसारो नीवां । साढेतीन हाथ तेरी सीवां ॥ बाँके बाल पाग शिर टेढ़ी । यह तन होगा भस्म की ढेरी ॥ ऊंचे मंदिर सुंदर नारी । राम नाम बिन बाजी हारी ॥ मेरी जात कमीनी बुद्धि कमीनी होछा जन्म हमारा । तुमरी शरणागत मैं प्रभुजी कहे रामदास चमारा ॥ ४७१ ॥

## राग कान्हरा ।

साँची प्रीत हम तुमसँग जोड़ी। तुमसँग जोड़ अवर सँगतोड़ी ॥ जो तुम बादर तो हम मोरा। जो तुम चंद हम भये चकोरा ॥ जो तुम दीवा तो हम बाती जो तुम तीरथ तोहम जात्री । जहाँ जाउँ तहँ तुमरी सेवा ॥ तुमसा ठाकुर और न देवा । तुमरे भजन कटे भय फाँसा । भक्ति हेतु गावे रविदासा ॥ ४७२ ॥

## राग सोरठ ।

मुकुंद मुकुंद जपो संसार । बिन मुकुंद तन होसी छार ॥ सोई मुकुंद मुक्तिका दाता । सोई मुकुंद हमरा पितु माता ॥ जिवतमुकुंदे मरत मुकुंदे । ताकेसेवकको सदा अनंदे ॥ मुकुंद मुकुंद हमारे प्रान । मुकुंद हमारे मस्तकनीशान ॥ उपज्यो ज्ञान हुआ प्रकास । कर किरपा लीने कीटदास ॥ कहे रविदास अब तृष्णा चूकी । जप मुकुंद सेवा ताहूकी ॥ ४७३ ॥

## राग देश ।

ब्राह्मण वैश्य शूद्र और क्षत्री डोम चंडाल म्लेंच्छ पुनिहोई । होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोई ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो थाउँ धन्य कुटुंब पुनीत सभ लोई ॥ जिन पियासा रस तजे आन रस होयरस मगन डारे विष खोई । पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोई ॥ ४७४ ॥

## राग काफी ।

तैं शौह मनमें किया रोस । मुझ औगुन शौह नाहीं दोस ॥ तैं साहिब की मैं सार न जानी ॥ जोवन खोय पाछे पछतानी ॥ काली कोयल तू कित गुण काली ॥ अपने प्रीतम के हौं विरहों जाली ॥ पिय बिहूनी न किते सुख पाये ॥ जां होय कृपाल तां प्रभु मिलाये॥ कर कृपा प्रभु साध संग मेली ॥ जां फिर देखां मेरा साहिब बेली ॥ बहुत दूर है शौहर मेरा ॥ शेख फरीदा पंथ सम्हार सवेरा ॥४७५॥

## राग जंगला ।

दिलों मुहब्बत जिन्हां सेई सच्यां ॥ जिन मन होर मुख होर सेई काढे कच्यां ॥ रत्तेइशक खुदा रंग दीदारके ॥ बिसरचा जिन्हां नाम ते भोये भार भे ॥ आप लये लड़ लाय दरवेशसे ॥ तिन धन्य जनेदी मां आये सफलसे ॥ परवरदिगार अपार अगमबेअंततूं॥ जिन्हां पछाता सच्च चुम्मां पैर भूं ॥ तेरी पनाह खुदाय तूं बखशिंदगी । शेख फरीदे खैर दीजे बंदगी ॥ ३७६ ॥

अंतरमल निर्मल नहिं कीनी बाहर भेखउदासी ॥ हृदैकमलघट ब्रह्म न चीना काहे भयोसंन्यासी ॥ भरमेभूले रे जैचंदा ॥ नहिं नहिं चीना परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया किंथा मुंदा माया ॥ भूम मसान कि भस्म लगाई गुरु बिन तत्व न पाया ॥ काहे जपो रे काहे तपो रे काहे वलोवो पानी ॥ यह सृष्टि है जिन उपाई सो सिमरो निरबानी ॥ कायक मंडल का पड़िया रे अठसठ काहे फिराई । वदत त्रिलोचन सुन रे प्रानी हरि शरनी गत पाई ॥४७७॥

## राग आसा ।

ऐसा नाम रत्न निरमोलक पुण्य पदारथ पाया ॥ अनेक यत्न कर हिरदे राख्या रत्न न छिपे छपाया । हरि गुण कहते कहते कहन न जाई ॥ जैसे गूँगे की मठ्याई । रसना रमत सुनत सुख श्रवणा चित चेते सुख होई ॥ कह भीपण दोय नयन संतोषे जहिं देखा तहिं सोई ॥ ४७८ ॥

## कवित्त ।

कोई एक पंडित हो विद्या गुण मंडित हो डस्यो काली नाग गयो गणिका निवास में ॥ कीनो मैथुन निवेश ह्वै विषय को प्रवेश रैन बीती सारी काम के हुलास में । केलि कर भयो भोर मुसकाय मुख मोर बोली एहो प्राणप्यारे मिलोगे अबका समें ॥ जोपै वेद औ पुराण स्मृति सब सांचे होयँ तो मेरी तेरी भेंट होय कुंभी पाक बास में ॥ ४७९ ॥

## कुंडलिया ।

मंडन है ऐश्वर्य को सज्जनता सन्मान । वाणी सज्जन शूरता मंडन धन को दान ॥ मंडन धन को दान ज्ञान मंडन इंद्री दम । तप मंडन अक्रोध नियम मंडन सोहत सम ॥ प्रभुता मंडन माफ धर्म मंडन छल छंडन । सबहिन में सरदार शीलता सबको मंडन४८०

## कबित्त ।

रहाहै नकोई यहां रहिहै न कोई यहां जाने सब कोई पै न मानै मोहपरिगे ॥ हाथी और घोड़े रथछोड़े सब ठौर ठौर भौननमें गाड़े भूरि भांडे ते बिसरिये । कहै छबिनाथ रघुनाथ के भजन बिन ऐसेही बिचारे जन्म कोटिन निसरिगे ॥ जंग वाले जोर वाले जाहिर जरब वाले जोश वाले जालिम चिता की आग जरिगे ॥ ४८१ ॥

## सवैया ।

भोग में रोग वियोग सँयोग में योगमें काया कलेश कमायो ॥ त्यों पदमाकर वेद पुरण पढ़्यो पढ़के बहु बाद बढ़ायो ॥ दौरयो दुराशा में दास भयो पै कहूं विश्राम को धाम न पायो । काया कमायो सो ऐसेही जीवन हाय मैं राम को नाम न गायो ॥ ४८२ ॥

## कवित्त ।

नारि के विकार सब ख्वार किये जीव जंतु नारि के विकार ब्रह्मादिक भरमाये हैं ॥ नारि के विकार हार चले सभ ऋषी मुनी नारि के विकार शिव ध्यान सों छुडाये हैं॥नारि के विकार शशि सूर

कला दूर भये नारि के विकार राउ रंक मरवायेहैं । कहेएक साई लोक नारि का विकार तज ताते योगीजन संत तभी तो कहाये हैं॥४८३॥

## राग रामकली ।

देखो रे मेरी मति बौरानी सदा जीवन मन लोड़े । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सोभी काल न छोड़े ॥ मुनि विनसे देव दानव विनसे जिन त्रिलोकी छत्र झुलाया । सोभी काल ने वश कर लीने तिन भी रहन न पाया ॥ वैद बुलाया वेगही आया पकड भुजा कछु कह्यो ॥ ऐसी औषध किसी न दीनी यह देही थिर रह्यो । वेद पुराण कुराण किताबां अरु पंडित मुलवाणे ॥ राई वधे घटे ना मासा मैं पुछ पुछ रही स्याणे । तक ले दीप में फिर फिर थाकी देश दिशांतर लोई ॥ कहत कबीर जो हरि गुण गावे हमरी औषध सोई ॥ ४८४ ॥

## राग जैजैवंती ।

जीवनसार विसारा क्यों मन । प्रभु पद सेवा त्याग मूढ़ तू फिरे अंध मतवारा ॥ विषय परायण होय जगत में प्रभु से कियो किनारा॥काम और क्रोध लोभ वश होकर हित अपना न विचारा॥ धन दारा सुत काम न आवें जिन पर किया सहारा ॥ जिस जग में तू भूल रहाहे दो दिन का है गुजारा ॥ पाप ताप संताप दोष सब जो तू चाहे निवारा ॥ गिरिधर लाल शरण हरि ले तो जो जग प्राण अधारा ॥ ४८५ ॥

तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी ॥ होय असत्य के हम अनुरागी हित कर सत्य विसारो ॥ दिव्य ज्ञान बिन अंध भये हम सूझे न सार असारो ॥ कभूं न बैठ छिनक निरजन में जीवन तत्व विचारो ॥ दीन हीन अति कृपा पात्र लख करुणा हस्त पसारो ॥ पाप विकार हरो गिरिधर अब ज्यों जानो त्यों तारो ॥ ४८६ ॥

## राग आसावरी ।

हौं कुरबाने जाउँ प्यारे हौं कुरबाने जाउँ ॥ हौं कुरबाने जाउँ तिन्हः

दे लैन जो तेरा नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाके सद कुरबाने जाउँ॥ काया रंगन जे थिये प्यारे पाइये नाउँ मँजीठ॥ रंगन वाला जे रंगे साहिब ऐसा रंग न डीठ॥ जिन के चोलेडे रत्तड़े प्यारे कंत तिन्हां के पास॥धूड तिन्हां की जे मिले जी कहु नानक की अरदास४८७॥

ऐसो नाम तुम्हारो ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो ॥ पतित पवित्र लिये कर अपने सकल करत निमसकारो॥ जात वरण कछु पूँछे नाहीं सभ को पाप निवारो ॥ नामां जैदेव कबीर त्रिलोचन मुक्त भयो चम्यारो । साधु संगत नानक बुध पाई हरि कीर्तन उद्धारो ॥

मैं मन तेरी टेक प्यारे मैं मन तेरी टेक॥ और स्यानपां बिरथियां प्यारे राखन को तुम एक ॥ सतगुरु पूरा जे मिले प्यारे सो जन होत निहाला ॥ गुरुकी सेवा सो करे प्यारे जिसनू होवे दयाला ॥ सफल मूरत गुरुदेव स्वामी सर्व कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रह्म परमेश्वर सदा सदा हजूरे ॥ ४८९ ॥

## राग आसावरी ।

सुन सुन जीवां सोहले तिन्हांके जिन अपना प्रभ जाता ॥ हरि नाम अराधने हर नाम बखाने हर नामे ही मन राता ॥ सेवक जन की सेवा मांगे पूरे कर्म कमावां ॥ नानक की विनती है स्वामी तेरे जन देखन पावाँ ॥ ४९० ॥

## राग भैरवी ।

अब हम गुम हुए अब हम गुम हुए प्रेम नगर के शहर ॥ अपने आप को शोध रहा हूं शिर हत्थ नहीं पैर॥ किते पकड़ लै चले घरां थी कौन करे निरवैर ॥ खुदी खोई अपना पद चीन्हा तब होई कुल खैर ॥ बुल्लाशाह दोहीं जहानीं कोई न दिसदा गैर ॥ ४९१ ॥

## राग बिहाग ।

बस्स कर जी हुन बस्स कर जी ॥ काई बात असां नाल हस्स कर जी ॥ तुसीं दिल मेरे बिच वसदे सी ॥ तदों सानूं दूर क्यों दसदे सी ॥ तदों वत्त जादू दिल खसदे सी ॥ हुन कितवल जासू नस्स

कर जी ॥ तुसीं मोयां नूं मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुद्दों वांगूं कुटदे सी ॥ गल्ल करदे स गल घुटदेसी ॥ हुन तीर लायो तन कस्सकर जी ॥ तुसीं छिपदे से असां पकड़े हो ॥ तुसीं अजे छिपण नूं तकड़े हो ॥ असां विच जिगर दे जकड़े हो ॥ हुनकहां जाओ दिल खस्स कर जी ॥ बुल्लाशाह असींतेरे बरदे से ॥ तेरे मुख देखन नूं मरदे से ॥ तुध वांगूं मिन्नतां करदे से ॥ हुन बैठे पिंजरे विच धस्स कर जी ॥४९२ ॥

इशक दीनवीं ओं नवीं बहार ॥ जो मैं सबक इशक दा पढ़या ॥ जीवड़ा मसजद कोलों डरया ॥ जां सद बाना शिरपर धरया ॥ घर विच पाया महरम यार ॥ जो मैं रमज इशक दी पाई ॥ मैंनां तूती मार गँवाई ॥ अंदर बाहर होई सफाई ॥ जितवल देखां यारो यार ॥ वेद पुराण पढ़े पढ़ थक्के ॥ सिजदे कर दियां घस गये मत्थे ॥ नां रब तीरथ नारब मक्के ॥ जिन पाया तिन नूर जमाल ॥ इशक भुलाया मेरा तेरा हुन क्यों रोवें पावें झेड॥बुल्ला रहिंदा चुप चुपाता दिल विच खुल्ले सभ इसरार ॥ ४९३ ॥

## ग़ज़ल ।

प्यारे गम छोड दुनिया का साहिब से आशनाई कर ॥ सभी कुछ छोड जाना है साहिब से ना जुदाई कर ॥ भिखारिन नाम है मेरा करूंगी हर घडी फेरा ॥ बता देवो पिया का डेरा बिरहों ने जिसके है घेरा ॥ लागी है प्रेम की लोकी तुम्हारे दरश की भूखी ॥ वली को ला मिलाओगे नहीं तो जान अब सूखी ॥ ४९४ ॥

## ग़ज़ल ।

काफरे इशक़म मुसलमानी मरा दरकार नेस्त ॥ हर रगे मन् तरा गश्तह हाजते जुन्नार नेस्त ॥ अज़ासिरे बालीने मन् बरखेज़ अय नांदां तबीब ॥ दर्दशोरे बुलबुल कम न गर्दद गर रवद गुल अज़ चमन् ॥ हुस्न बे बुनियाद बाशद इश्क बे बुनियाद नेस्त ॥ शाद बाश ऐ दिल कि फ़र्दा अज़ सिरे बाजारे इश्क ॥ वादये क़तलस्त बाशद दावए दीदार नेस्त ॥ मा ग़रीबां रा तमाशय चमन् दरकार नेस्त ॥

दागहाय सीना बर मन कमतर अज़ गुलजार नेस्त ॥ नाखुदा दर किश्तिये मन गर न बाशद गो मुबाश ॥ मा खुदा दारेम मारा ना खुदा दरकार नेस्त ॥ मंदे इशक़ रा दारू बजुज़ दीदार नेस्त ॥ खल्क मगोयद् कि खि़सरो बुत्परस्ती मेकुनद् ॥ आरे आरे मेकुनम बा खुल्के आलम कार नेस्त ॥ ४९५ ॥

अय चिहरए ज़ेबाय तो रश्के बुताने आज़री ॥ हरचंद वस्फ़ फ़त् मेकुनम् लेकिन् अज़ां बाला तरी ॥ आफ़ाक़ रागरदी दहअम मिहरे बुतां वरजी दह अम ॥ बिस्यार खूबां दीदहअम अम्मा तो चीजें दीगरी ॥ मनतो सुदमतो मन शुदी मन् तन् शुदम तो जाँ शुदी ॥ ता कस् न गोयदू बादज़ीं मन् दीगरम तो दीगरी ॥ खि़सरो ग़रीबस्तो गदा उफ़तादह दर शहरे शुमा ॥ बाशद कि अज बहरे खुदा सूये ग़रीबां बिंगरी ॥ ४९६ ॥

## राग परज ।

तू बात चलन दी कर रे एथे रहना नाहीं ॥ इस देही विच पांच चोर हैं इन्हां दा कह्या न कर रे ॥ इह संसार कंडयां दी बाड़ी तूं सँभल सँभल पग धर रे ॥ साढ़े तीन हत्थ जिमीं बंदे दी तूं एडड़े मुल्क न मल्ल रे ॥ हुसैन फ़कीर रबाणा झूठी दुनिया कूड़ा बाणा तू हरि चर्नन चित धर रे ॥ ४९७ ॥

## गज़ल ।

तुझसे मैंने दिलको लगाया ॥ एक तुझको अपना पाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सब कीनो मकां दिल में है तू ॥ कौन दिल है जिसमें नहीं तू ॥ हर एक दिल में तू ही समाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ कैसा मुलायक कैसा इन्सां ॥ कैसा हिंदू कैसा मुसल्मां ॥ जैसा चाहा तूने बनाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ काबे में क्या और दैर में क्या ॥ तेरी परस्तिश है सब जा ॥ आगे तेरे सिर सबने झुकाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ अरश से लेकर फ़रशे जिमीं तक ॥ और जमीं से अरशे बरीं तक जहां में देखा तू ही नजर आया

जो कुछ है सो तूही है ॥ सोचा समझा देखा भाला ॥ तुझे छान कर ढूंढ़ निकाला ॥ अब यही समझ में जफ़र के आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ ४९८ ॥

## राग आसा ।

क्यों मन भूलाहै संसारा ॥ मन मत दे टुक कर ले गुजारा ॥ इस जग में सुख नित नाहैं भाई यह तो है जैसे पानी की धारा ॥ मात पिता और खेश कुटुंब सब संग नहीं कोइ जावन हारा ॥ अंत समै सभ देखन आवें छिन भर में सभ होयें न्यारा ॥ जो कुछ अंगमें होगा तुम्हारा ,वह भी सब मिल लेयँ उतारा ॥ भाई नरकों में जब तुम पड़ोगे तब नहीं कोई बचावन हारा ॥ भाई मुक्तीका तुम भी करो खोज करुणामय प्रभु तारन हारा ४९९ ॥

## गजल ।

सुनोरे भाइयो तुमको यहांसे कूच करना है ॥ रहो तुम याद हकमें जब तलक ह्यां आवो दानाहै ॥ क्यों इतना होके ग़ाफ़िल भूले इस दुनिया के लालच में ॥ करो कुछ ख्याल भाई हकका अगर जिन्नत को पाना है ॥ पड़े सोतेहो ग़फ़लत में ज़रा टुक आंख को खोलो ॥ हुई है शाम उठ बैठो मुसाफर घरको जाना है ॥ न दौलत काम आवेगी न इस दुनिया से कुछ हासिल ॥ अगर तुम सोच कर देखो यह सभ कुछ छोड़ जाना है ॥ हयात अबदी अगर चाहो तो छोड़ो तुम गुनाहों को ॥ कहे मुकती प्रभू सुमिरो वही सच्चा ठिकाना है ॥ ५०० ॥

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ॥ मेरे दिल का अब दिल्रुबा एक तू है ॥ फकत तेरे कदमों से अय मेरे खालक ॥ लगा अब मेरा ध्यान शामो सुबू है ॥ मेरा दिल तो तुझसे ही पाता है तसकीं ॥ बसी मगज में प्रेमकी तेरी बू है ॥ समझते हैं यूं मुझको अकसर दिवाना ॥ तेरा जिक्र विरदे जबां कू बकू है ॥ नहीं मुझको दुनियावी खुशबू से उल्फ़त ॥ तेरा प्रेम ही अब मेरा